मासिक

अध्यात्म संदेश

जनकल्याण एवं राष्ट्रोत्थान को समर्पित धर्म, संस्कृति, अध्यात्म चिंतन की मासिक ई – पत्रिका

वर्ष : 3। अंक : 09 । पृष्ठ : 43 । मूल्य : नि:शुल्क । इंदौर–उज्जैन। शनिवार 1 अप्रैल 2023 । चैत्र/ वेशाख मास (2), विक्रम संवत् 2080 । इ. संस्करण

मासिक
अध्यात्म संदेश
जनकल्याण एवं राष्ट्रोत्थान को समर्पित धर्म, संस्कृति, अध्यात्म चिंतन का मासिक ई–पत्र
editor.adhyatmsandesh@gmail.com
m.facebook.com/अध्यात्म संदेश
गोरक्ष शक्तिधाम सेवार्थ फ़ाउण्डेशन
www.gssfoundation.org

प्रेरणा स्रोत
महासिद्ध गुरू गोरक्षनाथ जी

सलाहकार समिति
महंत बालक नाथ योगी जी
गद्दीनशीन महंत, मठ अस्थल बोहर, रोहतक
संसद सदस्य (लोकसभा), अलवर, राजस्थान
कुलाधिपति, श्री बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय (हरियाणा)

महंत पीर योगी रामनाथ जी
भर्तृहरि गुफा, उज्जैन (मध्य प्रदेश)

महंत डॉ. योगी विलासनाथ जी
अध्यक्ष, श्री गुरू गोरक्षनाथ शिव पंचायतन मन्दिर (ट्रस्ट), गाळणे (महाराष्ट्र)

राष्ट्रसंत बालयोगी उमेशनाथ जी
पीठाधीश्वर–वाल्मीकि धाम, उज्जैन (मध्य प्रदेश)

प्रधान सम्पादक
योगी शिवनन्दन नाथ

सम्पादक मंडल

वरिष्ठ सम्पादक
डॉ. संतोष खन्ना (दिल्ली)

सम्पादक
डॉ. शकुंतला कालरा (दिल्ली)

उपसम्पादक
श्रीमती सुषमा सागर मिश्रा (लखनऊ)
सुश्री इंदु सिंह "इन्दुश्री" (मध्य प्रदेश)

ग्राफिक्स
IDEAwave COMMUNICATIONS

प्रकाशक एवं स्वामी
गोरक्ष शक्तिधाम सेवार्थ फ़ाउण्डेशन

- गोरक्ष शक्तिधाम सेवार्थ फाउंडेशन सर्वाधिकार सुरक्षित। किसी भी रूप में सामग्री की नकल प्रतिबंधित।
- पत्रिका में प्रकाशित सामग्री का समस्त उत्तरदायित्व लेखकों का है। प्रकाशक, प्रधान संपादक एवं संपादक मंडल इसके लिए किसी भी प्रकार से उत्तरदायित्व नहीं होंगे।
- समस्त विवादों का निस्तारण, मध्य प्रदेश सीमांतर्गत सक्षम न्यायालयों में किया जाएगा।

editor.adhyatmsandesh@gmail.com

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ क्र.
1	संपादकीय	डॉ. शकुंतला कालरा	03
2	गीता मंथन	डॉ. अलका शर्मा	05
3	बालसखा हनुमान	सुश्री इंदु सिंह 'इंदुश्री'	07
4	छल बल का परित्याग	प्रो. डॉ. शरद नारायण खरे	08
5	कस्तूर बा गाँधी	आकांक्षा यादव	09
6	पर्यावरण चिन्तन 2	डॉ. मेहता नगेन्द्र सिंह	11
7	चमत्कारों का सिरमौर है करतार	डॉ. सन्तोष खन्ना	12
8	वैदिक विमान विज्ञान ऋषि भरद्वाज...	डॉ. विदुषी शर्मा	15
9	योगदान का अवमूल्यन....	सीताराम गुप्ता	17
10	अयोध्या के राम	डॉ. अर्चना प्रकाश	19
11	डॉ. भीमराव अम्बेडकर	सौ. भावना दामले	21
12	शिव वन्दना	ब्रह्मेश्वर नाथ मिश्र	22
13	जल है तो कल है	श्रीमति सुषमा सागर मिश्रा	23
14	समय को पहचानें	डॉ. हनुमान प्रसाद उत्तम	26
15	अगर मैं परिंदा होता	बद्री प्रसाद वर्मा अनजान	27
16	सुंदरकाण्ड में निहित प्रतीकार्थ...	डॉ. शकुंतला कालरा	28
17	अच्छे अनुभव – बुरे अनुभव	सुजाता प्रसाद	30
18	झूठ के अंधेरे पर सच्चाई की रोशनी	डॉ. प्रदीप उपाध्याय	31
19	अक्षय तृतीया शुभारंभ एवं मंगल...	सुमन लता शर्मा	33
20	मृत्यु भोज कितना सही कितना...	मधुबाला शांडिल्य	35
21	शिक्षण एवं प्रशिक्षण की	डॉ. अजय शुक्ला	36
22	क्या है भारतीय संस्कृति....	पंडित कैलाशनारायण	39
23	पशुओं पर अत्याचार....	डॉ. अरविंद जैन (विद्यावाचस्पति)	41
24	मिलन	प्रो. डॉ. दिवाकर दिनेश गौड़	43

संपादकीय

डॉ. शकुंतला कालरा
संपादक (अध्यात्म संदेश)

नव विक्रमी संवत्सर 2080 की शुभकामनाओं के साथ आप सभी शब्द-साधकों को मेरा सादर अभिवादन। जिनकी सुंदर रचनाएं हमारी आत्मा को आनंदित करती हैं। हमारा ज्ञानवर्धन करती हैं। हमारा मार्ग प्रशस्त करती हैं। उनको मेरा हार्दिक नमन। ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि उनकी कृपा से हमारा यह वर्ष मंगलदायक हो और इस संवत्सर में आने वाले सम्पूर्ण अनिष्ट समाप्त हो जाएँ। हम सबका यह परम सौभाग्य है कि हमारे देश में विविध ऋतुएं अपना सौंदर्य बिखेरती हैं। 20 अप्रेल को अमावस्या है। इस दिन से ग्रीष्म ऋतु का प्रारंभ होगा। अप्रेल माह में भी अनेक व्रत और त्योहार एवं जयंतियाँ हैं। यहाँ सभी त्योहार मिलकर मनाए जाते हैं। व्रत और त्योहार जीवन-शैली को तरोताजा रखते हैं। इस माह में आने वाली पहली जयंती महावीर जयंती है। इनके बाद हनुमान जयंती, गुरु तेगबहादुर जयंती है, ऋषि पाराशर जयंती, आद्य शंकराचार्य जयंती, सूरदास जयंती, रामानुजाचार्य जयंती हैं। 14 अप्रेल मेष संक्रांति है। ऋषि पाराशर जयंती, आद्य शंकराचार्य जयंती, सूरदास जयंती, रामानुजाचार्य जयंती है।

अप्रेल माह में आने वाली पहली जयंती महावीर जयंती है। इसे महावीर स्वामी के जन्मदिन के रूप में मनाया जाता है। इन्हें जैन धर्म का संस्थापक माना जाता है। इन्होंने 12 वर्षों की कठोर तपस्या के बाद आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त किया था। जैन धर्म में भगवान महावीर का अंतिम 24वें तीर्थंकर का स्थान प्राप्त है। महावीर की शिक्षाओं पर विचार करने के लिए महावीर जयंती मनाते हैं। इनके प्रमुख सिद्धांत है - अहिंसा, सत्य, ब्रह्मचर्य, अस्तेय (चोरी न करना) और अपरिग्रह।

हनुमान जयंती भी इसी माह में है। मंदिरों में यह बड़ी धूमधाम से मनाई जाती है। हनुमान, राम के सेवक हैं। सेवक स्वामी के कार्य-सिद्धि में प्रमुख सहायक होता है। प्रभु राम का स्वभाव है सेवक को मान देना। हनुमान स्वयं निष्काम हैं पर भगवान सहित सभी सकामी भक्तों की कामना पूरी करते हैं। तुलसीदास ने हनुमान के माध्यम से स्वयं राम की कामना की भी पूर्ति दिखाई है। सर्वशक्तिमान की 'लीला' का आनंद देने हेतु तुलसीदास ने भगवान राम को हनुमान के द्वारा सीता जी का समाचार सुनाकर सीता-मिलन की पूर्व-भूमिका का निर्माण कराया है। तुलसीदास ने सोने की लंका में प्रवेश करने का सर्वाधिक योग्य पात्र हनुमान जी को माना है क्योंकि लंका का ऐश्वर्य साधक को अपनी ओर आकृष्ट कर लक्ष्य-प्राप्ति से डिगा सकता है। सोने की नगरी लंका मूर्तिमान भौतिक संपदा है। वह हनुमान जी के मन में किसी प्रकार का प्रलोभन नहीं जगाती। 'ज्ञानीनामाग्रगण्यम् हनुमान वैराग्य-दृष्टि- सम्पन्न हैं। वह जानते हैं कि हर चमकती वस्तु और संसार का सारा वैभव नाशवान

है। गुरु तेगबहादुर जयंती है। गुरु तेगबहादुर सिक्खों के नौवें गुरु थे। धर्म और मानवीय मूल्यों, आदर्शों एवं सिद्धांतों की रक्षा की लिए प्राणों की आहुति दी। इन्होंने कश्मीरी पंडितों को मुगलों से बचाया। 14 अप्रेल बैसाखी है। बैसाखी भारत के सबसे लोकप्रिय त्योहारों में से एक है। यह पूरे देश में विशेष रूप से पंजाब और हरियाणा के उत्तरी राज्यों में बड़े उत्साह के साथ मनाया जाता है। सिक्खों के दशवें गुरु गोबिंद सिंह जी ने बैशाखी के मौके पर 13 अप्रेल 1699 को खालसा पंथ की स्थापना की थी। साथ ही इस त्योहार को फसल पकने के रूप में भी मनाया जाता है। इस महीने तक रबी की फसल पक जाती है और इनकी कटाई होती है। सिक्ख धर्म के साथ हिंदू धर्म में भी यह त्योहार महत्त्व रखता है। मुनि भगीरथ ने देवी गंगा को धरती पर लाने की जो तपस्या की थी, वह आज के ही दिन पूरी हुई थी इसलिए आज के दिन गंगा-स्नान का बड़ा महत्त्व है।

अप्रेल माह में परशुराम जयंती भी हर वर्ष उनके जन्मदिन के उपलक्ष्य के रूप में मनाई जाती है। परशुराम का जन्मदिन हिंदू धर्म के भगवान विष्णु के छठे अवतार की जयंती के रूप में मनाया जाता है। ये रेणुका और सप्तऋषि जमदग्नि के ज्येष्ठ पुत्र थे। परशुराम को हिंदू धर्म के सात अमर लोगों में एक माना जाता है। कहते हैं कि जब क्षत्रिय सहस्रबाहु जमदग्नि के आश्रम की गाय बलात् छीनकर ले जा रहे थे तब परशुराम ब्राह्मण और उनके संघ ने 21 बार पूरी धरती को क्षत्रिय-विहीन किया था।

अप्रेल माह में ही श्री जानकी नवमी मनाई जाती है। भारतीय वांङ्मय में श्री जानकी जी यानी सीता जी का चरित्र आदि कवि वाल्मीकि की अमर कृति 'वाल्मीकि रामायण' में उपलब्ध होता है और संस्कृत, पालि, प्राकृत तथा अपभ्रंश भाषाओं के अनेक ग्रन्थों में विकासमान सीता का यह वृत्त हिन्दी साहित्य में आकर और भी अधिक लोकप्रिय हुआ है। महाकवि गोस्वामी तुलसीदास ने'रामचरितमानस' द्वारा सीता के जिस आदर्श चरित्र की प्रतिष्ठा की है, वह सम्पूर्ण हिन्दी साहित्य में अपूर्व एवं अद्वितीय है।

सभी ज्ञानी और भक्त, दार्शनिक और विचारक एवं उनका दर्शन, उनकी दिखाई राह हमारे लिए प्रेरणा का स्रोत बने इसी मंगल कामना के साथ-

आपकी सेवा में सदैव सहर्ष तत्पर आपकी

-शकुतला कालरा

स्थायी स्तम्भ

गीता मंथन

डॉ. अलका शर्मा
(वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर)
सह संपादक योग संस्कृति
उत्थान पीठ पत्रिका

भारत वर्ष की समृद्ध शास्त्र परम्परा में वेद पुराण रामायण महाभारत गीता उपनिषद, स्मृतियां आदि का विशिष्ट स्थान होने के साथ साथ धार्मिक महत्व भी है। इनमें जीवन के प्रत्येक पहलू पर डाला गया है प्राचीन काल मे गुरुकुलों द्वारा बाल्यावस्था में ही इन ग्रंथों का ज्ञान देकर, बालको का समुचित विकास किया जाता था। पर आज शिक्षा का बदलते स्वरूप व भागदौड़ भरे जीवन में युवा पीढ़ी के जीवन मे नैतिक मूल्यों की निरंतर गिरावट को देखते हुए, अपनी नई पीढ़ी को अपनी संस्कृति से अवगत कराने का मेरा लघु प्रयास है। यद्यपि सागर सदृश विशाल गाम्भीर्य युक्त इन गौरवशाली ग्रंथो को पूर्णतः परिभाषित करना अत्यंत दुष्कर है फिर भी भारतीय संस्कृति से जुड़ी मूल भूत मुख्य बातों को इन लेखों के द्वारा युवा पीढ़ी तक पहुँचाने का मेरा लघु प्रयास है आज के लेख में गीता के कर्म सिद्धान्त कुछ मुख्य बिंदुओं की ही वर्णन किया गया है।

श्रीमदभागवद गीता सर्वकालिक एवं सार्वभौमिक ग्रंथ होने के कारण भारतीय संस्कृति का वाहक ग्रंथ माना जाता है। गीता धर्म व अध्यात्म का महान ग्रंथ है जिसमे सभी शास्त्रों का ज्ञान समाहित होने के कारण 'गीता' को 'गीतोपनिषद' भी कहा जाता है भागवद्गीता का मुख्य प्रयोजन भौतिक संसार की चकाचोंध में लीन व्यक्तियों को अज्ञानता से उबार कर एक नई दृष्टि प्रदान करना है। क्योंकि सांसारिक क्रिया कलापो में उलझा व्यक्ति प्रायः द्वन्दों में ही फंसा रहता है। मेरा यह व्यक्तिगत रूप से यह मानना है कि वर्तमान परिपेक्ष्य में गीता बहुत महत्व है। पग पग पर गीता हमारा मार्गदर्शन करने में सक्षम है। विशेष रूप से पाश्चात्य संस्कृति की वेगपूर्ण आंधी में अपनी भारतीय संस्कृति की जड़ो से दूर युवा पीढ़ी का मार्ग प्रशस्त करने का कार्य 'गीता' के अध्यन व अध्यापन द्वारा ही निश्चित रूप से संभव है।

जिस प्रकार माँ अपनी संतान को सन्मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करती है ठीक उसी प्रकार गीता ज्ञान भी मनुष्यो को सुशीतल शांति प्रदान कर नर से नारायण बनने का

मार्ग प्रशस्त करती है गीता रूपी अमृत का पान करके मनुष्य ऐसे अलौकिक आनंद के संसार मे प्रवेश करता है जहाँ ज्ञान का अदभुत प्रकाश है। गीता श्री कृष्ण के मुख कमल से निःसृत वाणी जो ठहरी। इसमें श्री कृष्ण ने ज्ञान तत्व रूपी दुग्ध को उपनिषद रूपी गायों से दोहन करके निकाला है जिसे 'गीतामृत' भी कहा गया है।

गीता के उपदेश श्री कृष्ण के मुख से निसृत है। कौरवो पांडवो के बीच हुए, महाभारत के प्रसिद्ध युद्ध के दौरान मोहग्रस्त अर्जुन को श्री कृष्ण के द्वारा दिए गए उपदेश, केवल अर्जुन तक ही सीमित नही है अपितु हर व्यक्ति की शंकाओं, समस्याओ का समाधान करने वाली कामधेनु के सदृश बताए गए है। इसकी विशेषता यही है आप जितनी बार भी आप पढ़ते है हमेशा एक नए अर्थ की प्रतीति होती है। गीता का मुख्य कर्म का संदेश सर्वविदित ही है –

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन

कहकर पूर्णतः स्पष्ट कर दिया कि – फल की इच्छा से रहित निष्काम कर्म सर्वश्रेष्ठ है। प्रायः सभी व्यक्ति वही कार्य करते है जिसमे उनका लाभ होता है ।ऐसे में उत्तम फल की प्राप्ति मुख्य हो जाती है और कर्म गौण हो जाता है कार्यसिद्धि ही मानव का मुख्य उद्देश्य बन जाती है। परंतु इसके विपरीत यदि असफलता हाथ लगती है तो मानो असफलता ही हताशा निराशा की जननी बन जाती जाती है। ऐसी परिस्थिति से मानव को उबारने के लिए गीता के दूसरे अध्याय में स्पष्ट निर्देश दिया गया है–

योगस्थः कुरु कर्माणि संगमत्यक्तवा धनञ्जय।
सिद्धिसिद्धयो समो भूत्वा समत्वम योगम उच्यते।।

उपरोक्त श्लोक प्रत्येक व्यक्ति के लिए बार बार पढ़ने योग्य है यह आवश्यक नही है कि हम हर बार हर कार्य मे सफल ही हो।

जय पराजय, सिद्धि असिद्धि में हम कैसे अपना संन्तुलन बनाये रखे। जय पराजय में समभाव बनाये रखना ही योग है जिसे 'बिरले' ही कर पाते है। क्योंकि अनुकूल परिस्थिति में सभी प्रसन्न रहते है पर प्रतिकूलता में भी अपना मनः स्थिति समान बनाये रखना, वही ऊर्जा बनाये रखना ही समत्व है। और समत्व को ही योग कहा गया है। गीता में दिए गए कर्म सिद्धान्त में एक मूल बात जो स्पष्टतः दृष्टिगोचर होती है। कि मनुष्य कर्मशील रहे । आसक्ति रहित कर्म को श्रेष्ठ बताया है। हमे इसके साथ ही सोच विचार कर कार्य करने की प्रेरणा भी मिलती है। गीता के दूसरे अध्याय (2/49) में

दूरेण ह्यवरं कर्म । कहकर निंदनीय या अहितकारी कर्मो से दूर रहने के लिए श्री कृष्ण द्वारा अर्जुन को उपदेश दिया गया है। पर यह पूरे समाज की मनःस्थिति को बदलने की क्षमता रखता है।

प्रायः समाज मे देखा जाता है कि अनायास अधिक सफलता मिलने पर अत्यंत अहंकार और दम्भ के कारण मनुष्य दूसरों को नीचा दिखाना , जानबूझ कर दुसरो का अहित करने को ही अपना परम कर्तव्य मान लेता है और उसी में परम संतुष्टि पाता है। पर इन निंदनीय कर्म को करते हुए मनुष्य भूल जाता है कि प्रत्येक कर्म का फल कर्ता को अवश्य भोगना पड़ता है ।

मनुष्य के द्वारा किये गए सभी शुभ –अशुभ कर्मो का फल उसे अवश्य ही भोगना पड़ता है । उसके द्वारा किये गए गर्हित कर्म ही जन्म जन्मांतर तक उसके कर्मबन्धन का कारण बनते है। और न भोगने पर सौ वर्ष तक भी वे कर्म बंधन क्षीण नही होते।

यादृशं क्रियते कर्म तादृशं फलमाप्नुयात्।
अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाऽशुभम्।।
नाऽभुक्तं क्षीयते कर्म जन्मकोटिशतैरपि।।

कुछ नास्तिक लोग इस तथ्य का उपहास करते हुए सोचते है कि परलोक किसने देखा है अपनी सत्ता, पद, सत्ता के नशे में चूर होकर चाहे वे कितने भी अपराध, अत्याचार, झूठ, फरेब, धोखा कर ले उनका कोई कुछ नही कर सकता उनके लिए कर्म बंधन फल सिद्धान्त की पुष्टि करने में सक्षम निम्न श्लोक अवश्य ही द्रष्टव्य है –

यथा धेनुसहस्रेषु वत्सो विन्दति मातरम्।
एवं पूर्वकृतं कर्म कर्तानुगच्छति ।।

(सुभाषित)

जिस प्रकार से हजारों गायों के बीच मे से भी एक छोटा बछड़ा अपनी माता को ढूंढ लेता है उसी प्रकार पूर्व जन्म में किये गए कर्मो के फल कर्ता को अवश्य ही ढूंढ लेते है।(उसका अनुसरण करते है)

गीता भारतीय संस्कृति की आधारशिला होने के साथ साथ हिन्दू शास्त्रों मे सर्व पूज्य मानी जाती है। इसके 18 अध्याय में 700 श्लोकों द्वारा जीवन के प्रत्येक पहलू पर प्रकाश डाला है मेरा दृढ़ विश्वास है कि गीता वर्तमान में मोहग्रस्त अर्जुन के समान असंख्य लक्ष्यहीन युवाओं का मार्गप्रशस्त करने में सक्षम है। आज विश्व युद्ध कगार पर खडे राष्ट्रोंका मार्ग गीता का ज्ञान ही प्रशस्त कर सकता है। परमाणु युद्ध की विभीषिका से भय भीत जनमानस की गीता ही संबल है।

जिन ढूंढा तीन पाइयाँ गहरे पानी पैठि।। के अनुसार –

जो गीतामृत का पान करता वह अपने को सहज ही कर्म बंधन से मुक्त कर लेता है। इसी को–

योग कर्मसु कौशलम कहा गया है।

**अच्छा दिखने के लिये मत जिओ,
बल्कि अच्छा बनने के लिए जिओ!**

06 अप्रैल जयंती

बालसखा हनुमान

सुश्री इंदु सिंह 'इंदुश्री'
स्वतंत्र लेखन
नरसिंहपुर, मध्य प्रदेश

बचपन में हर बच्चे के पहले मित्र के रूप में मां हनुमान से उसका परिचय कराती है जो हर पल उसके साथ रहकर उसके भीतर के भय को समाप्त कर उसे अभय बनाता और भीतर बल–बुद्धि का संचार भी करता कि हनुमान एक ऐसे भगवान जिनके नाम मात्र से ही हर बालक–बालिका को लगता कि जब बजरंग बली उसके दोस्त तो फिर चिंता किस बात की है। उनका स्वरूप भी ऐसा जो बच्चों को लुभाता तो सहज ही बालमन उनसे जुड़ जाता और जब हनुमान चालीसा के पाठ की आदत उसके दिनचर्या का अंग बन जाती तो थोड़े ही समय में वह महसूस करता कि यह तो बेहद लय व गेयता वाली व हर पंक्ति इस तरह एक दूसरे से जुड़ी बोले तो गुंथी हुई कि अनायास ही सब स्मृति में दर्ज हो जाती तो सरलता से वह उसे ग्रहण कर लेता है। कभी किसी समय मन में डर या चिंता का भाव आये तो तुरंत किसी न किसी पद को मन ही मन दोहराने लगता कि हनुमान चालीसा में हर तरह की समस्या हेतु कोई न कोई ऐसी चौपाई जो समय अनुकूल तत्काल याद आ जाती व बिगड़े काम को बना देती कि हनुमान जी तो जागृत देवता जो भोलेभाले, मासूम बच्चों के हृदय की बात को उसी तरह से समझ लेते जैसे उनके आराध्य भगवान श्रीराम जी उनके अंतर का हाल जान लेते हैं।

जब नई पीढ़ी धीरे–धीरे धार्मिक अनुष्ठानों व पूजन आदि से विलग हो रही तब यह जरूरी हो जाता कि पालक उसे मारुतिनंदन के बाल्यकाल की कहानियां सुनाएं कि किस तरह उनका जन्म हुआ और किस तरह उनका नाम हनुमान पड़ा या वे जब छोटे थे तो किस तरह शरारत करते और उनकी कुशाग्र बुद्धि का तो जवाब नहीं जो तत्क्षण ही निर्णय लेना जानती और कठिन से कठिन हालात को भी अपने अनुसार बदलने का हुनर जानती है। यह सब किस्से उसे प्रेरित करेंगे कि वह भी अपने आपको साधकर अपने अंदर की शक्तियों को पहचानकर साधारण से असाधारण बन सकते यदि उनमें भी एकाग्रता व लक्ष्य प्राप्ति के प्रति दृढ़ता उत्पन्न हो जाये तो असाध्य कुछ भी नहीं है। हनुमानजी बच्चों के लिए एक प्रेरणात्मक व्यक्तित्व ही नहीं सुपर हीरो भी होते जो अपनी विलक्षण शक्तियों से अद्‌भुत पराक्रम करने की क्षमता रखते तो साथ ही वे असम्भव को सम्भव बनाना भी जानते जिसके लिए बल से अधिक बुद्धि की आवश्यकता होती और उनके पास तो दोनों ही भरपूर जो उनका कृपापात्र बनकर कोई भी पा सकता है।

सभी अपने नौनिहालों को अवतारों की बाल लीलाओं से जरूर जोड़े क्योंकि, ईश्वर धरती पर मानव रूप में जन्म लेकर आते ही इसकिए है कि वह इस जटिल जीवन को जी सकें हर अवस्था का आनंद ले सकें इसलिए राम, कृष्ण, गणेश व हनुमान जी सभी के छुटपन की अनेकानेक कहानियां धर्मग्रंथों में मिलती जिन्हें पढ़कर बच्चे उनके समान बनने की शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। यही नहीं एक बार यदि उन्होंने श्रीरामचरितमानस, श्रीमद्भगवतगीता, हनुमान चालीसा, गणेश स्तुति, सरस्वती वंदना व मंत्र यदि पढ़ना शुरू किए तो स्वतः ही उनकी स्वाभाविक वृति की वजह से वह उस तरफ झुकेंगे जरूरी नहीं कि वे पूजा–पाठ के लिए अतिरिक्त समय निकालें या विधि–विधान से सब कुछ करें पहले उन्हें इससे सामान्य रूप से जोड़े बाकी अपने आप ही जब वे सही तरीका समझेंगे तो उसे भी अपना लेंगे लेकिन, जो हम पढ़ाई या आधुनिकता का बहाना लेकर उन्हें पूजा–पाठ से दूर कर देते उसकी वजह से वह बड़े होकर भी जुड़ नहीं पाते हैं।

इसलिए बालपन से ही उनके भीतर यह संस्कार डालें ज्यादा कुछ नहीं करना शुरुआत में केवल भगवान को हाथ ही जोड़े लें, उनकी स्तुति या आरती गा लें इतना ही पर्याप्त है जब एक बार मन रमा तो आगे सब कुछ अपने आप ही होता जाएगा क्योंकि, यह सब कुछ ऐसा जिसमें हर निश्छल–निर्मल मन रमता बस, उसे दिशा दिखना व मार्गदर्शन देना है। आगे आत्मदीपक पथ प्रदर्शक बनकर मार्ग आलोकित करेगा जिससे भक्त भगवान को स्वयं ही ढूंढ लेगा पर, यदि आपने उसे भटकता ही छोड़ दिया तो कोई भी वामपंथी या कट्टरपन्थी उसे दिग्भ्रमित कर सकता है। यह जो आजकल फैशनेबल नास्तिक दिखाई पड़ रहे सब इसी तरह के पढ़े–लिखे युवा जिन्हें हमने शिक्षा तो ऊंची दिलवाई लेकिन, जडों से जुड़ने नहीं दिया तो कटी पतंग की तरह जिस पाले में गिरे उसके ही हो गए तो अपने बच्चों को त्रिशंकु नहीं जमीन से जुड़ा अपनी सभ्यता–संस्कृति का प्रतिनिधि बनाएं सनद रहे धर्मो रक्षति रक्षितः अर्थात जो धर्म की रक्षा करता है धर्म उसकी रक्षा करता है। ■

दोहे

छल-बल का परित्याग

प्रो. डॉ. शरद नारायण खरे
प्राचार्य
शासकीय जे.एम.सी. महिला महाविद्यालय
मंडला (म.प्र.)

छल–बल में क्या रखा, ये लाते दुष्परिणाम।
पतन सुनिश्चित ये करें, हैं दुख के आयाम।।

छल–बल मात्र प्रपंच हैं, बचना इनसे आज।
वरना तय होगा यहाँ, झूठ–कपट का राज।।

छल–बल तो अभिशाप हैं, नीचा करें चरित्र।
इनसे बिगड़े है मनुज, होता थोथा चित्र।।

छल–बल को त्यागो अभी, तभी बनेगी बात।
वरना जीवन को समझ, खुद की खुद पर घात।।

छल–बल को जो मानते, बढ़ने का आधार।
उनसे बंदे दूर रह, मत करना तू प्यार।।

छल–बल को धिक्कार दे, तभी पलेगा नूर।
जो विवेक को धारते, करते दुर्गुण दूर।।

छल–बल रावण ने किया, हुआ पूर्ण अवसान।
छल–बल हरते शान हैं, हर लेते सम्मान।।

छल–बल गति–मति मारते, बनते दुख–आधार।
छल–बल में अँधियार है, जीवन पर हैं भार।।

छल–बल लाते हैं रुदन, देते खुद को मात।
इनसे होता दूर जो, वह पाता सौगात।।

11 अप्रैल जयंती

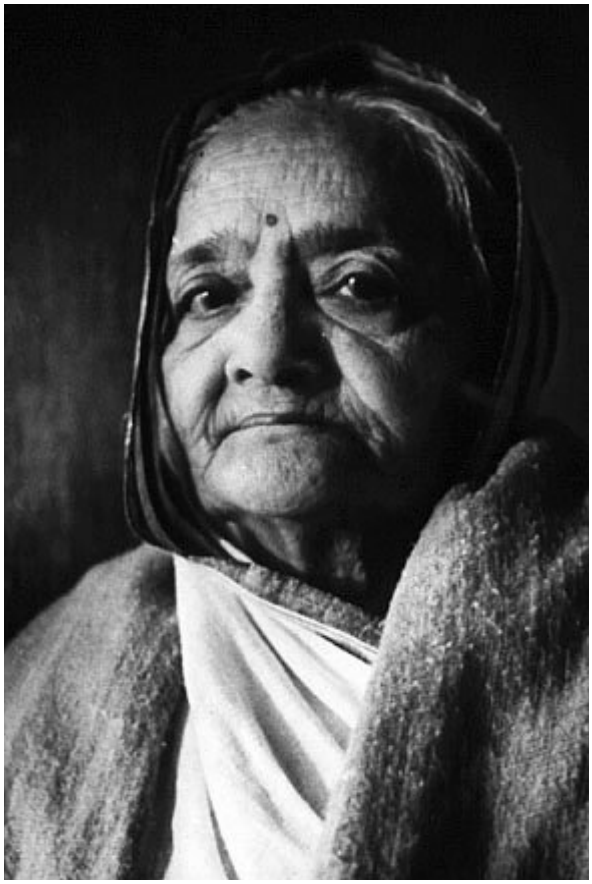

आजादी के आन्दोलन में भी गाँधी जी की हमसफर रहीं

कस्तूर बा गाँधी

आकांक्षा यादव
पोस्टमास्टर जनरल आवास,
कैण्ट प्रधान डाकघर, नदेसर,वाराणसी

कहते हैं हर पुरुष की सफलता के पीछे एक नारी का हाथ होता है। एक तरफ वह घर की जिम्मेदारियां उठाकर पुरुष को छोटी–छोटी बातों से मुक्त रखती है, वहीं वह एक निष्पक्ष सलाहकार के साथ–साथ हर गतिविधि को संबल देती है। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के नाम से भला कौन अपरिचित होगा। पर जिस महिला ने उन्हें जीवन भर संबल दिया और यहाँ तक पहुँचाने में अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया, वह गाँधी जी की धर्मपत्नी कस्तूरबा गाँधी थीं। महात्मा गांधी की पत्नी होने के अलावा कस्तूरबा गांधी की अपनी पहचान भी थी। वो एक समाज सेविका भी थीं। कस्तूरबा को पढ़ना और लिखना नहीं सिखाया गया था, लेकिन युवा अवस्था में ही उन्होंने पारिवारिक बंधनों को छोड़कर अपना सारा ध्यान व पूरा जोर देश की आजादी के लिए लगा दिया था।

गुजरात में 11 अप्रैल, 1869 को जन्मीं कस्तूरबा का 14 साल की आयु में ही मोहनदास करमचंद गाँधी जी के साथ बाल विवाह हो गया था। वे आयु में गांधी जी से 6 मास बड़ी थीं। वास्तव में 7 साल की अवस्था में 6 साल के मोहनदास के साथ उनकी सगाई कर दी गई और 13 साल की आयु में उन दोनों का विवाह हो गया। जिस उम्र में बच्चे शरारतें करते और दूसरों पर निर्भर रहते हैं, उस उम्र में कस्तूरबा ने पारिवारिक जिम्मेदारियों का निर्वहन आरंभ कर दिया। कस्तूरबा गांधी ने अपने जीवन में कभी औपचारिक शिक्षा प्राप्त नहीं की, लेकिन वे जिंदगी भर शिक्षा के लिए जिज्ञासु रही और चीजों को तेजी से समझ लेती थीं। वह गाँधी जी के धार्मिक एवं देशसेवा के महाव्रतों में सदैव उनके साथ रहीं। उनके गंभीर और स्थिर स्वभाव के चलते उन्हें सभी 'बा' कहकर पुकारने लगे। गाँधी जी के अनेक उपवासों में बा प्रायः उनके साथ रहीं और उनकी जिम्मेदारियों का निर्वाह करती रहीं। गाँधी जी के उपवास के समय कस्तूरबा गाँधी भी एक समय का ही भोजन करती थीं। आजादी की जंग में जब भी

गाँधी जी गिरफ्तार हुए, सारा दारोमदार कस्तूरबा बा के कन्धों पर ही पड़ा। यदि इतने सब के बीच गाँधी जी स्वस्थ रहे और नियमित दिनचर्या का पालन करते रहे तो इसके पीछे कस्तूरबा बा थीं, जो उनकी हर छोटी-छोटी बात का ध्यान रखतीं और हर तकलीफ अपने ऊपर लेतीं। तभी तो गाँधी जी ने कस्तूरबा बा को अपनी माँ समान बताया था, जो उनका बच्चों जैसा ख्याल रखतीं।

विवाह के बाद कस्तूरबा और मोहनदास 1888 ई. तक लगभग साथ-साथ ही रहे किंतु गाँधी जी के इंग्लैंड प्रवास के बाद से लगभग अगले 12 वर्ष तक दोनों प्रायः अलग-अलग से रहे। कस्तूरबा ने जब पहली बार साल 1888 में बेटे को जन्म दिया तब महात्मा गांधी देश में नहीं थे। वो इंग्लैंड में पढ़ाई कर रहे थे। कस्तूरबा ने अकेले ही अपने बेटे हीरालाल को पालपोस कर बड़ा किया। इंग्लैंड प्रवास से लौटने के बाद शीघ्र ही गाँधी जी को अफ्रीका चला जाना पड़ा। जब 1896 में वे भारत आए तब कस्तूरबा बा को अपने साथ ले गए। तब से बा गाँधी जी के पद का अनुगमन करती रहीं। उन्होंने उनकी तरह ही अपने जीवन को सादा बना लिया था। 1904-1911 तक वह डरबन स्थित गाँधी जी के फिनिक्स आश्रम में काफी सक्रिय रहीं।

सामाजिक स्वतंत्रता के लिए कस्तूरबा गांधी की लड़ाई भारतीय स्वतंत्रता के संघर्ष से बहुत पहले शुरू हुई। महात्मा गांधी के दक्षिण अफ्रीका में रहने के दौरान उन्होंने इसकी शुरूआत की। दक्षिण अफ्रीका में एक वाकया कस्तूरबा बा की जीवटता और संस्कारों का परिचायक है। दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों की दयनीय स्थिति के खिलाफ प्रदर्शन आयोजित करने के कारण उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया व 3 महीने कैद की सजा सुनाई गई। वस्तुतः दक्षिण अफ्रीका में 1913 में एक ऐसा कानून पास हुआ जिसके अनुसार ईसाई मत के अनुसार किए गए और विवाह विभाग के अधिकारी के यहाँ दर्ज किए गए विवाह के अतिरिक्त अन्य विवाहों की मान्यता अग्राह्य की गई थी। गाँधी जी ने इस कानून को रद कराने का बहुत प्रयास किया पर जब वे सफल न हुए तब उन्होंने सत्याग्रह करने का निश्चय किया और उसमें सम्मिलित होने के लिये स्त्रियों का भी आह्वान किया। पर इस बात की चर्चा उन्होंने अन्य स्त्रियों से तो की किंतु बा से नहीं की। वे नहीं चाहते थे कि बा उनके कहने से सत्याग्रहियों में जायँ और फिर बाद में कठिनाइयों में पड़कर विषम परिस्थिति उपस्थित करें। जब कस्तूरबा बा ने देखा कि गाँधी जी ने उनसे सत्याग्रह में भाग लेने की कोई चर्चा नहीं की तो बड़ी दुःखी हुई और फिर स्वेच्छया सत्याग्रह में सम्मिलित हुई और तीन अन्य महिलाओं के साथ जेल गई। जेल में जो भोजन मिला वह अखाद्य था। धर्म के संस्कार बा में गहरे पैठे हुए थे। वे किसी भी अवस्था में मांस और शराब लेकर मानुस देह भ्रष्ट करने को तैयार न थीं। कठिन बीमारी की अवस्था में भी उन्होंने मांस का शोरबा पीना अस्वीकार कर दिया और आजीवन इस बात पर दृढ़ रहीं। जेल में उन्होंने फलाहार करने का निश्चय किया। किंतु जब उनके इस अनुरोध पर कोई ध्यान नहीं दिया गया तो उन्होंने उपवास करना आरंभ कर दिया। अंततरू पाँचवें दिन अधिकारियों को झुकना पड़ा। किंतु जो फल दिए गए वह पूरे भोजन के लिये पर्याप्त न थे। अतः कस्तूरबा बा को तीन महीने जेल में आधे पेट भोजन पर रहना पड़ा। जब वे जेल से छूटीं तो उनका शरीर ढांचा मात्र रह गया था, पर उनके हौसले में कोई कमी नहीं थी।

भारत लौटने के बाद भी वे गाँधी जी के साथ काफी सक्रिय रहीं। चंपारन के सत्याग्रह के समय बा तिहरवा ग्राम में रहकर गाँवों में घूमती और दवा वितरण करती रहीं। उनके इस काम में निलहे गोरों को राजनीति की बू आई। उन्होंने बा की अनुपस्थिति में उनकी झोपड़ी जलवा दी। बा की उस झोपड़ी में बच्चे पढ़ते थे। अपनी यह पाठशाला एक दिन के लिए भी बंद करना उन्हें पसंद न था अतः उन्होंने सारी रात जागकर घास का एक दूसरा झोपड़ा खड़ा किया। इसी प्रकार खेड़ा सत्याग्रह के समय बा स्त्रियों में घूम घूमकर उन्हें उत्साहित करती रहीं। 1922 में जब गाँधी जी को गिरफ्तार कर छह साल की सजा हुई, उस समय कस्तूरबा गाँधी ने महात्मा गांधी की गिरफ्तारी के विरोध में विदेशी कपड़ों के त्याग के लिए लोगों का आह्वान किया। गाँधी जी का संदेश लोगों तक पहुँचाने के लिए वे गुजरात के गाँवों में दिन भर घूमती फिरीं। 1930 में दांडी कूच और धरासणा के धावे के दिनों में गाँधी जी के जेल जाने पर कस्तूरबा बा एक प्रकार से उनके अभाव की पूर्ति करती रहीं। वे पुलिस के अत्याचारों से पीड़ित जनता की सहायता करती, धैर्य बँधाती फिरीं। 1932 और 1933 का अधिकांश समय तो उनका जेल में ही बीता। इसी प्रकार जब 1932 में हरिजनों के प्रश्न को लेकर बापू ने यरवदा जेल में आमरण उपवास आरंभ किया उस समय बा साबरमती जेल में थीं। उस समय वे बहुत बेचैन हो उठीं और उन्हें तभी चैन मिला जब वे यरवदा जेल भेजी गईं।

गाँधी जी के अंग्रेजों भारत छोडो आन्दोलन के दौरान 9 अगस्त, 1942 को गाँधी जी के गिरफ्तार हो जाने पर बा ने, शिवाजी पार्क (बंबई) में, जहाँ स्वयं गाँधी जी भाषण देने वाले थे, सभा में भाषण करने का निश्चय किया किंतु पार्क के द्वार पर ही अंग्रेजी सरकार ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया। दो दिन बाद वे पूना के आगा खाँ महल में भेज दी गईं, जहाँ गाँधी जी पहले से गिरफ्तार कर भेजे चुके थे। उस समय वे अस्वस्थ थीं। 15 अगस्त को जब यकायक गाँधी जी के निजी सचिव महादेव देसाई ने महाप्रयाण किया तो वे बार-बार यही कहती रहीं महादेव क्यों गया, मैं क्यों नहीं? बाद में महादेव देसाई का चितास्थान उनके लिए शंकर-महादेव का मंदिर सा बन गया। वे नित्य वहाँ जाती, समाधि की प्रदक्षिणा कर उसे नमस्कार करतीं। वे उस पर दीप भी जलवातीं। यह उनके लिए सिर्फ दीया नहीं था, बल्कि इसमें वह आने वाली आजादी की लौ भी देख रही थीं। कस्तूरबा बा की दिली तमन्ना देश को आजाद देखने की थी, पर गिरफ्तारी के बाद उनका जो स्वास्थ्य बिगड़ा वह फिर अंततः उन्हें मौत की तरफ ले गया और 22 फरवरी, 1944 को वे सदा के लिए सो गयीं। इतिहास ने अक्सर कस्तूरबा गांधी को उनके पति मोहनदास करमचंद गांधी की परछाई की तरह ही बयां किया है, लेकिन देश की भलाई और संघर्ष के दिनों में कस्तूरबा की भूमिका को भी नकारा नहीं जा सकता है।

डॉ.मेहता नगेन्द्र सिंह
भू–वैज्ञानिक,पर्यावरणविद्
एवं हिन्दी रचनाकार,पटना

स्थायी स्तम्भ

पर्यावरण चिन्तन 2

आधुनिक युग में पर्यावरण–चिन्तन के कई आयाम हो सकते हैं, बल्कि यों कहें कि पर्यावरण–चिन्तन बहुयामी है,किन्तु यहाँ हम व्यक्तिगत और सामाजिक चिन्तन पर अधिक दबाव बनायेंगे। लेकिन इससे पहले इसके बहुविषयक पक्ष से अवगत हो लें। इसकी संक्षिप्त विवरणी को धारावाहिक रूप से पड़ोसने की कोशिश की जा रही है। इसके पूर्व यह जान लें कि– सृष्टिकर्ता ने सर्वप्रथम सौरमंडल में पृथ्वी का निर्माण किया। उसपर प्रकृति की छटा बिखेरी गई। जल,वायु, ऊष्मा और अन्य की व्यवस्था की गई। पशु–पक्षी, कीट–पतंग एवं सूक्ष्मजीव उत्पन्न हुए। तब उसने अपनी महात्म्य एवं प्रकृति–सुषमा को क्रमशः सुनने और निहारने के लिये मनुष्य–योनि की संरचना बड़े प्यार से की। प्रकृति और पर्यावरण का मुख्य उपभोक्ता मनुष्य काफी प्रेमी एवं अनुशासित था।

सबसे पहले पृथ्वी बनी। उसके ऊपर थलमंडल एवं जलमंडल बना। थलमंडल का अध्ययन हुआ, विषय का नाम 'भू–गर्भशास्त्र' पड़ा। इसी क्रम में जलमंडल में वनस्पतियाँ पनपीं, इसका भी अध्ययन किया गया। विषय का नाम 'वनस्पति–शास्त्र' हुआ। इसके बाद जीव–जन्तुओं का उद्‌भव हुआ। इसका भी अध्ययन किया गया। विषय का हुआ 'प्राणि–शास्त्र'। उक्त तीनों विषय पर्यावरण का आधार–विषय है, क्योंकि इन तीनों की गतिविधियां धरती पर होती रहती हैं। जिसका अध्ययन गहराई से की जानी चाहिए।

धरती के ऊपर वायुमंडल है। इसका सामान्य फैलाव ऊपर दो सौ कि.मी.तक है। वायु मुख्य रूप से पांच गैसें यथा– नाइट्रोजन (71%), आक्सीजन (21%), कार्बन डाइऑक्साइड (0.03%), आर्गेन–हीलियम (), जलवाष्प एवं धूलकण होती हैं। मौसम और तापमान के अनुसार इनमें आन्तरिक रासायनिक प्रतिक्रिया होती रहती है जिससे पर्यावरण प्रभावित होता रहता है। इसका अध्ययन भी आवश्यक है। यह विषय 'रसायन–शास्त्र' है। वायुमंडल में सूर्य ताप का आधिपत्य रहता है। ऊष्मा, प्रकाश, बिजली आदि की गतिविधियां हुआ करतीं हैं। इससे भी पर्यावरण प्रभावित होते रहता है। इसका अध्ययन जिस विषय के अन्तर्गत किया जाता है उसे 'भौतिकी–शास्त्र' कहते हैं। ये पांचों विषय विज्ञान से सम्बंधित हैं।

पर्यावरण का मुख्य उपभोक्ता व्यक्ति होता है, जो समाज में रहता है। इसलिये भी व्यक्ति के समूह को समाज कहा गया है। धर्म,कर्म,पर्व–त्यौहार,शादी एवं अन्य सांस्कृतिक–सामाजिक गतिविधियाँ समाज की परिधि में हुआ करती है। व्यक्ति के साथ पर्यावरण है, इसलिये इन गतिविधियों से पर्यावरण प्रभावित होता है। जिसका अध्ययन 'समाज–शास्त्र' विषय के अन्तर्गत होता है। सामाजिक गतिविधियों से पर्यावरण का अवनयन अथवा ह्रास होता है। साथ ही प्राकृतिक आपदाओं से भी पर्यावरण को भारी नुकसान होता है। कितना होता है? इसका सही लेखाजोखा और आंकलन के लिये 'अर्थशास्त्र' विषय का सहारा लेना पड़ता है। इन सातों विषय के समेकित प्रचारण–प्रसारण तथा जनसंख्या, शिक्षा, परिवहन, शहरीकरण, जलवायु , मौसमी अध्ययन, विभिन्न प्रकार के सर्वेक्षण आदि का अध्ययन 'भूगोल' विषय के अन्तर्गत होता है। इस तरह विस्तार से पर्यावरण को समझने के लिए इन आठ विषयों का समेकित सहयोग लिया जाता है।

इन विषयों का पर्यावरणीय नाम–

पर्यावरण – भूगर्भ शास्त्र, पर्यावरण– वनस्पति शास्त्र, पर्यावरण–प्राणिशास्त्र, पर्यावरण– रसायन शास्त्र, पर्यावरण भौतिकी शास्त्र, पर्यावरण– सामाजिक शास्त्र, पर्यावरण–अर्थशास्त्र एवं पर्यावरण–भूगोल रखा गया है।

क्रमशः

चमत्कारों का सिरमौर है करतार

डॉ. सन्तोष खन्ना
(वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर)
वरिष्ठ साहित्यकार एवं प्रधान संपादक :
महिला विधि भारती त्रैमासिक पत्रिका
दिल्ली–110088

यहां चमत्कार ही चमत्कार हैं। सबसे पहले तो यह ब्रह्माण्ड ही चमत्कार हैं उसकी सृष्टि चमत्कारों का एक अनन्त अंतहीन अजूबा है। कहा जाता है ब्रह्माण्ड में अरबों आकाशगंगाएं हैं और प्रत्येक आकाशगंगा में करोड़ों सूर्य हैं। अभी तक आकाशगंगाओं को नहीं गिना जा सका है सूर्य की बात तो छोड़ दीजिए। पृथ्वी पर जितने समुद्री तट हैं और वहां जितने बालू के कण हैं, उससे कहीं ज्यादा ब्रह्मांड में तारे हैं। यह दावा है अमरीका खगोलविद कार्ल सगन का।यह सब जान कर तो हम दांतों तले उंगली दबाते बिना नहीं रह सकते। जब ब्रह्माण्ड का कोई और ओर छोर नहीं है तो इसका निर्माण करने वाला अद्भुत चमत्कारी ही होगा बल्कि वह तो चमत्कारों का सिरमौर होगा। वह किसी को दिखाई नहीं देता फिर भी वह है बल्कि वहीं तो है जो है। शेष सब तो माया है और वह माया भी उसी का पसारा है। वह निराकार है तो साकार भी है। उसे ही उसे जानने को प्रयासरत ऋषि मुनि 'नेति नेति' कहते हैं अर्थात् वह भी नहीं समझा पाते कि अगर वह निराकार है तो साकार कैसे हैं? साकार है तो निराकार कैसे हैं। यह ऐसी उलटबांसी है जिसे आज तक कोई समझ नहीं पाया। पर यह तो निश्चित है कि वह है। अब तो विज्ञान भी उसके समक्ष नतमस्तक हो कह रहा है कि वह है। संसार की हर भाषा में उसे अलग अलग नामों से पुकारा जाता है और अभी तक कोई भी भाषा उसे नाम देने के लिए कोई शब्द नहीं ढूंढ पाई जिस शब्द को जानने के बाद कुछ और जानना शेष न रहे। विश्व का यह जादूई निर्माता और नियंता कैसा अद्भुत, अनीवर्चनीय और विलक्षण होगा?

उपर कहा गया है कि उसने हजारों ब्रह्माण्ड बनाये हैं। उसने हजारों सूर्य बनाये हैं। हमने अपना सौर मंडल तो देखा है जिसमें सूर्य और वह खगोलीय वस्तुएँ सम्मिलित हैं जो इस मंडल में एक दूसरे से गुरुत्वाकर्षण बल द्वारा बंधे हैं। किसी तारे के इर्द गिर्द परिक्रमा करते हुई उन खगोलीय वस्तुओं के समूह को ग्रह मण्डल कहा जाता है। इस ब्रह्माण्ड में अनेक ग्लेक्सियां अथवा मंदाकिनी भी हैं जिन में से हम नग्न आंखों से एकाध मंदाकिनी का जलवा

देख सकते हैं। सूर्य, चांद सितारों का जलवा तो हम रोज देखते ही हैं। हम जन्म के बाद होश संभालते ही यह देख समझ लेते हैं कि सूर्य रोज ही गगन में पूर्व की दिशा से अवतरित हो पश्चिम दिशा में अस्त हो जाता है और वह इस नियम का कभी व्यतिक्रम नहीं करता। क्या हमेशा पूर्व दिशा से उगते उगते वह कभी बोर नहीं होता और कभी सोचे कि क्यों न वह किसी दिन दक्षिण दिशा से उदय हो कर देखें। पर नहीं, वह हमेशा प्रकृति के नियमों का पालन करता है। फिर, इस सौर मंडल में तो पृथ्वी जैसा हमारा भी अद्भुत ग्रह भी है जो सूर्य और अन्य ग्रहों की तरह निरंतर घूम रहा है। पृथ्वी सूर्य के इर्दगिर्द तो चक्कर लगा ही रही है, वह अपनी धूरी पर घूम रही है। उसके साथ पृथ्वी से चिपके हम भी घूम रहे हैं परंतु उस पर चमत्कार यह कि हमें लगता ही नहीं कि हम भी घूम रहे हैं। अंतरिक्ष में लटकी और घूमती पृथ्वी से हम नीचे नहीं गिरते। हम क्या, विशाल और अपार समुंद्र में अथाह जल राशि है परंतु अंतरिक्ष में लटकी पृथ्वी के सातों समुद्रों से जल की एक बूंद भी बाहर नीचे नहीं गिरती। विशाल और अथाह जलराशि को किसने बांध रखा है? यहीं समुंद्र जब क्रूद्ब होते हैं तो पूरी धरती को जल थल कर देते हैं तब प्रलय आ जाती है । बाद में यहीं सिंधु अपना समूचा जल स्वयं में वापस समेट लेते हैं। यह सब चमत्कार से किसी तरह भी कम नहीं है। पृथ्वी ने हमें अपनी पूरी पकड़ में ले रखा है जैसे मां अपने बच्चों को अपनी गोद में सुरक्षित रखती है। हम तभी तो पृथ्वी को मां वसुंधरा कहते हैं, कहते ही नहीं मानते भी हैं इसलिए उसकी पूजा भी करते हैं। हम सूर्य की भी पूजा करते हैं।वह भी तो रिश्ते में हमारा नाना लगता है क्योंकि हमारी यह धरा उसकी पुत्री है। चांद हमारे मामा हैं क्योंकि पृथ्वी और चांद दोनों ही सूर्य के जाये हैं अर्थात् सूर्य ही उनका जनक है और दोनों को प्रकाश सूर्य से ही मिलता है यानि सूर्य ही पृथ्वी की ट्यूबलाइट है। जब सूर्य अस्त हो शेष पृथ्वी की ट्यूबलाइट बनने के लिए जाता है तो जाते जाते हमारी तरफ चांद के रुप में जीरो का बल्ब जगा जाता है और हमें चांद की चांदनी और शीतलता में सुरक्षित कर जाता है।

यहीं नहीं, हमारे सौरमंडल का सूर्य क्या क्या चमत्कार करता है कि उसका वर्णन करना ही कठिन है तो ब्रह्माण्ड तो हमारी इस मोटी बुद्धि की पकड़ में आ ही नहीं सकता। सूर्य पृथ्वी पर मनुष्य, पशु पक्षियों और पेड़ पौधों को जल आपूर्ति के लिए अपनी किरणों की पाइपों से समुंद्र से जल भर कर आकाश में ला कर उसे बादलों की पीठ पर रखता जाता है और फिर उन बादल समूहों को भिन्न भिन्न क्षेत्रों में रवाना करता जाता है जहां यह बादल जा कर जल आपूर्ति की व्यवस्था करते हैं। जल आपूर्ति करते समय सूर्य दो बातों का ध्यान रखता है। पहला, वह अपनी किरणों की पाइपों में छलनियां फिट कर देता है जिनसे वह खारे पानी को छानता जाता है तांकि जब वह पृथ्वी पर वर्षा करके जल सप्लाई करें तो वह जल मीठा और शुद्ध होना चाहिए। दूसरा, सबको बारहमासी जल आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए उसने ऊंचे ऊंचे पर्वतों पर विशाल आकार के फ्रिज फिट कर रखें हैं जिनमें वह अतिरिक्त जल को बर्फ के रूप में जमाता जाता है जो वहां विशाल हिमखंड बन सुरक्षित पड़े रहते हैं और धीरे धीरे पिघल कर नदियों के माध्यम से मानवता की जल संबंधी जरूरतों को निरंतर पूरा करते रहते हैं। पूरी धरती पर ऊंचे ऊंचे पर्वतों पर हिमखंडों के अम्बार लगे हैं और धरती के कौने कौने में अनेक नदियों का जाल बिछा है। सूर्य से हमें सीखने की जरूरत है कि हम जल जैसे बहुमूल्य संसाधन को नष्ट न करें। सूर्य यह सुनिश्चित करता है कि नदियों में वह जो जल प्रवाहित करता है वह धरती पर सबके काम आये और अगर उनकी जरूरत पूरी करने के बाद जो अतिरिक्त जल बचता है तो उसके लिए उसने नदियां को निर्देश दे रखा है कि अतिरिक्त जल पुनः समुंद्र को सौंप दे। नदियों उसी नियम के अनुसार सागरों में जा कर मिल जाती हैं और सदैव अपना धर्म निभाती हैं। आजकल सुना है कि

भूमंडलीय ऊष्मीकरण से बर्फ के यह हिमखंड अधिक ताप के कारण पिघल रहे हैं जिसके कारण स्थान स्थान पर अप्रत्याशित बाढ़ें तबाही मचा रही हैं और अगर इसे रोका न गया तो समुंद्रों में जल स्तर बढ़ जायेगा और विश्व के अनेक शहर डूब में आ जायेंगे, दूसरे शब्दों में मानवता का अस्तित्व ही खतरे में है। मानव इसे रोक सकता है पर उसके लिए उसे अपने जीवन में संयम,सदाचार और अनुशासन का संचार करना होगा। अभी तो वह जिस डाल पर बैठा है, उसी को काटता जा रहा है।

खैर, यह जगत, सृष्टि अथवा ब्रह्माण्ड कब अस्तित्व में आया, कोई नहीं जानता। अगर किसी कालखंड में ब्रह्माण्ड नहीं था तो भी तब स्पेस अथवा अंतरिक्ष तो होगा ही जिसमें उस विभु से अपने एक इशारे से सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड रच डाला। फिर प्रश्न उठता है कि यह स्पेस अथवा अंतरिक्ष भी तो उसी ने बनाया होगा? फिर यह भी कहा जाता है कि इस ब्रह्माण्ड का निर्माण पांच तत्वों से हुआ है। तुलसीदास ने अपने महाग्रंथ 'रामचरित मानस' में इसे यों व्यक्त किया हैः शक्षिति, जल, पावक, गगन, समीरा, पंच तत्व यह अधम शरीरा।

यह ब्रह्माण्ड पृथ्वी, जल, अग्नि,आकाश और पवन से निर्मित हुआ है किंतु परमात्मा ने इसे कैसे बनाया, कोई नहीं जानता। वह कितना बड़ा कल्पनाकार है, किसी को भी इसका अंदाजा नहीं है।

इन पांच तत्वों के बारे में अब विज्ञान बहुत कुछ जान गया है और मान गया है कि इन चमत्कारी तत्वों को निर्मित करने वाली एक शक्ति अवश्य है और कुछ वैज्ञानिकों ने कहा है कि उन्होंने श्गॉड पार्टिकलश का पता लगा लिया है। ये वैज्ञानिक उस विभु के अज्ञात चमत्कारों के रहस्यों को जानने के लिए सतत सक्रिय हैं। यह वैज्ञानिक अर्थात् मानव जैसे अद्भुत प्राणी को किसने बनाया? कहा जाता है कि 'humans are the best creation of God-' मानव उस विभु की सर्वोच्च एवं सर्वोत्तम रचना है। मानव की रचना करने का विचार अथवा कल्पना उसके विजन अथवा अंतः दृष्टि में क्यों कर आई? उसने असंख्य कोटि के मानव बनाये, शरीर का आकार प्रकार एक जैसा परंतु शक्ल सूरत सब की अलग अलग है और उस पर आश्चर्यों का भी आश्चर्य यह कि उसने पुरुष बनाया तो नारी को भी बनाया बल्कि उसे पुरुष की तुलना में अधिक सौंदर्यशाली और शक्तिशाली बनाया, शक्तिशाली इस रुप में कि उसे मानवता की जननी और पोषणहार बनाया। उसने संतान के लिए उसमें ममता तत्व का समावेश किया तो शिशु

आहार का स्रोत भी उसे ही बनाया। इस प्रकार की सर्वोच्च कोटि की इंजीनियरिंग का आविष्कार कर एक और चमत्कार भी किया। यहीं नहीं, उसने मानव में न केवल अनेक प्रकार की भावनाओं का संचार किया है बल्कि उसे बुद्धि और विवेक की क्षमता भी प्रदान की है और 'चयन' का अधिकार भी उसे दिया है। इन गुणों का उपयोग कर मनुष्य अपने परिश्रम, संयम, त्याग और तपस्या से भौतिक उपलब्धियां अपनी मुट्ठी में कर लेता है, अगर वह सही रास्ता चुने तो आध्यात्मिकता का वरण कर अपना जीवन सार्थक कर सकता है। साधना से वह इस ब्रह्माण्ड के निर्माता और नियंता शिव तत्व को जान सकता है और मोक्ष भी प्राप्त कर सकता है।आत्मा के रूप में शिव तत्व का भी अंश उसमें विराजमान हैं। तभी तो तुलसीदास ने राम चरित मानस के उत्तर काण्ड में कहा है :

ईश्वर अंश जीव अविनाशी। चेतन अमल सहज सुख रासी।

अर्थात् मानव ईश्वर का अंश है इसलिए वह भी ईश्वर के समान ही अविनाशी, चेतन, निर्मल और स्वभाव से सुख की राशि है। जब मनुष्य उसी का अंश है अर्थात् उसकी यह आत्मा अजर और अमर है। भगवान कृष्ण ने भागवत गीता में आत्मा के बारे में जो ज्ञान दिया है, उससे सब अच्छी तरह से परिचित हैं। उन्होंने कितने सुंदर शब्दों में इसके बारे में बताया है : –

'नैनं छिद्रन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।
न चौनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुत।।'

ये गीता जी के दूसरे अध्याय का श्लोक है इसमें बताया गया है कि आत्मा को कोई शस्त्र काट नहीं सकता, आग जला नहीं सकती, पानी भिगो नहीं सकता, हवा सुखा नहीं सकती। आत्मा शरीर बदलती है, कभी मरती नहीं है। क्योंकि आत्मा अजर–अमर है।

बेशक पांच तत्व का शरीर नष्ट होता है पर जब तक आत्मा उसमें प्राणवान है वह शिव सदृश होता है, जरुरत इस बात की होती है कि मानव अपने इस शिव तत्व को पहचाने।

वास्तव में मानव को यह अनमोल जीवन मिलता ही इसी लिए है कि वह ईश्वर या शिव तत्व के बारे में अपनी साधना से शोध कर उसके स्वरूप को उजागर कर सके। साधना की बात आती है तो साधना का रास्ता मायावी माया रोकती है। कबीर ने कहा है 'माया महा ठगनी हम जानी'। इससे पार पाना सुगम नहीं है पर मनुष्य में बुद्ध, विवेक और संकल्प की अथाह शक्ति होती है। उसे स्वयं को पहचानना होगा, इस संबंध में मेरी एक कविता की पंक्तियां पढिये और खुद को पहचानिए :–

मेरा आकार है बेशक लघु
पूरे ब्रह्मांड–सी हस्ती हूँ मैं
मैं संगीत में हूँ, सुरों का साज हूँ मैं
सुर में दिव्य संगीत हूँ मैं
कवितत्व में कविता हूँ
कविता में कवितत्व हूँ
मैं अक्षर हूँ, मैं शिव हूँ
शिव का शिवत्व भी मैं हूं।

मासिक
अध्यात्म संदेश
जनकल्याण एवं राष्ट्रोत्थान को समर्पित धर्म, संस्कृति, अध्यात्म चिंतन की मासिक ई–पत्रिका

क्या आपकी लेखन में अभिरुचि है?
क्या आप भी कभी अपने विचारों, भावनाओं को व्यक्त करने के लिए कागज– कलम उठाते हैं?
क्या आप लेखक/लेखिका, कवि/कवियत्री है?

आपको **अध्यात्म संदेश** ई पत्रिका की ओर से आमंत्रण है, आप अपनी रचनाएं, कविताएं, गीत, लघु कथाएं हमें प्रेषित करें। आपकी रचनाएं आलेख प्रकाशन योग्य होने पर उसका पत्रिका में अवश्य प्रकाशन किया जाएगा।

अपनी रचनायें हमें प्रेषित करते समय यह अवश्य सुनिश्चित करें कि यह रचना आपकी अपनी मौलिक कृति है और न तो यह किसी पत्र – पत्रिका – पुस्तक – ब्लॉग – वेबसाइट आदि में प्रकाशनार्थ विचाराधीन है और न ही कभी प्रकाशित हुई है।

आपकी रचना को मूल रूप में प्रकाशित/संपादित रूप में प्रकाशित करने अथवा प्रकाशित न करने का पूर्ण विवेकाधिकार संपादक मंडल का है।

आलेख भेजने की अंतिम तिथि 15 अप्रैल 2023

विशेष : शब्द सीमा 500–750 शब्दों के मध्य होनी चाहिए

1. लेखक/लेखिका अपनी रचना यूनिकोड/कृतिदेव – वर्ड फाइल में टाइप कराकर ही भेंजे। पी. डी. एफ फाइल न भेजें।
2. लेखक/लेखिका अपनी स्वरचित अप्रकाशित एवं मौलिक रचना के साथ कृपया अपना संक्षिप्त परिचय, व्हाट्सप नंबर, फोटो के साथ भेजें ।
3. आपकी स्वीकृत रचना आपके फोटो के साथ प्रकाशित की जायेगी। प्रकाशित रचना पर पारिश्रमिक देय नहीं है।
4. जनकल्याण हित में ज्ञान वर्धन हेतु यह पूर्णतः निः शुल्क है। आपकी रचनाएँ ई–मेलः **editor.adhyatmsandesh@gmail.com** पर प्रेषित करें।

– योगी शिवनन्दन नाथ
प्रधान संपादक

वैदिक विमान विज्ञान ऋषि भरद्वाज के विशेष संदर्भ में

डॉ. विदुषी शर्मा

अकादमिक काउंसलर, IGNOU
OSD , (Officer on Special Duty) NIOS
दिल्ली

विशेष : प्रस्तुत विषय एक ऐसा विषय है जिस पर बहुत अधिक गहन शोध की आवश्यकता है उसके लिए हमारे पास प्रामाणिक ग्रंथों की उपलब्धता भी आवश्यक है। वर्तमान में हमारे पास जितनी भी सामग्री उपलब्ध हो सकी है उसी पर आधारित यह है आलेख लिखने का प्रयास किया है। प्रस्तुत विषय बहुत ही गंभीर है इसीलिए यदि कोई त्रुटि हो तो उसके लिए मैं अग्रिम क्षमा याचना करती हूं क्योंकि यह विषय वेदों से संबंधित ही नहीं अपितु उन ऋषि मुनियों से संबंधित है जिनकी ज्ञान की सीमा, उनकी आध्यात्मिकता, परोपकार की भावना, तपस्या, आत्मिक बल इत्यादि की कल्पना भी हम नहीं कर सकते हैं। इसीलिए केवल सार्थक प्रयत्न किया है क्योंकि पूर्णता केवल ईश्वर में विद्यमान है।

भारत का इतिहास उतना ही पुराना है जितनी की हमारी इस पृथ्वी की आयु व इस पर प्राणी जीवन है। वैदिक मान्यताओं के अनुसार पृथ्वी का निर्माण होकर इस पर आज से १,९६,०८,५३,१२० वर्ष पहले मनुष्यों की उत्पत्ति या उनका आविर्भाव हुआ था।

सृष्टि की उत्पत्ति के पहले ही दिन ईश्वर ने बड़ी संख्या में अमैथुनी सृष्टि में उत्पन्न स्त्री–पुरुषों में से चार सबसे अधिक पवित्रात्माओं अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा को एक–एक वेद का ज्ञान दिया था।

यह वेद ज्ञान सभी सत्य विद्याओं की पुस्तकें हैं। ईश्वर चेतन तत्व व सर्वव्यापक होने के कारण सृष्टि के समस्त ज्ञान व विद्याओं का आदि स्रोत है। उसने अपनी उसी ज्ञान, विद्या व सामर्थ्य से जड़ व कारण प्रकृति से इस संसार को बनाया है और चला भी रहा है।

हमारे वैज्ञानिक उसके उस ज्ञान व नियमों की सृष्टि की रचना का अध्ययन कर खोज

करते हैं। इस ज्ञान का उपयोग कर ही नाना प्रकार के जीवन रक्षा व सुविधा के यन्त्र, उपकरण व मशीनों आदि का निर्माण संसार में हुआ है। हमारा आज का यह ज्ञान विज्ञान कोई बहुत पुराना नहीं है। आज यदि चार व पांच शताब्दी पीछे देखें तो यूरोप में ज्ञान विज्ञान के बुनियादी नियमों की खोज भी नहीं हुई थी।

गैलीलियो, इटली (15 फरवरी 1564–8 जनवरी 1642) जैसे वैज्ञानिक विगत 500 से लेकर 2300 वर्षों के अन्दर ही हुए हैं। इससे पूर्व यूरोप सहित सारे विश्व में विज्ञान से रहित मनुष्य जीवन का अनुमान लगाया जा सकता है। दूसरी ओर महाभारत युद्ध के समय भारत की राजव्यवस्था पर विचार करते हैं तो देखते हैं कि हमारा देश धन–धान्य, वैभव व वैज्ञानिक उन्नति से सुसमृद्ध था। महाराज युधिष्ठिर ने राजसूय यज्ञ कर स्वयं को चक्रवर्ती राजा घोषित ही नहीं अपितु उसे अपने बल व पराक्रम से सिद्ध भी किया था। उन दिनों हमारे पास आधुनिक हथियार थे जिनके नाम ब्रह्मास्त्र, आग्नेयास्त्र आदि थे। श्रीकृष्ण जी के पास एक अद्‌भुत अस्त्र "सुदर्शन चक्र" था जिसकी विशेषता थी कि इसे जिस व्यक्ति का वध करने के लिए छोड़ा जाता था, यह उसका वध करके पुनः श्रीकृष्ण जी के पास लौट आता था।

विद्या वाचस्पति पं. मधुसूदन सरस्वती " इन्द्रविजय " नामक ग्रंथ में ऋग्वेद के छत्तीसवें सूक्त प्रथम मंत्र का अर्थ लिखते हुए कहते हैं कि ऋषियों ने तीन पहियों वाला ऐसा रथ बनाया था जो अंतरिक्ष में उड़ सकता था। ग्रंथो में विभिन्न देवी देवता, 'यक्ष', 'विद्याधर' आदि विमानों द्वारा यात्रा करते हैं इस प्रकार के उल्लेख आते हैं। त्रिपुरा याने तीन असुर भाइयों ने अंतरिक्ष में तीन अजेय नगरों का निर्माण किया था, जो पृथ्वी, जल, व आकाश में आ जा सकते थे और उस समय आर्यवर्त के शासक महान वैज्ञानिक व तपस्वी भगवान शिव ने जिन्हें नष्ट किया।

रामायण में पुष्पक विमान का वर्णन है जो मन की गति से चलता था और जिसे आवश्यकतानुसार छोटा बड़ा किया जा सकता था। महाभारत में श्री कृष्ण, जरासंध आदि के विमानों का वर्णन आता है।

भागवत में कर्दम ऋषि की कथा आती है। तपस्या में लीन रहने के कारण वे अपनी पत्नी की ओर ध्यान नहीं दे पाए। इसका भान होने पर उन्होंने अपने विमान से उसे संपूर्ण विश्व का दर्शन कराया।

उपर्युक्त वर्णन जब आज का तार्किक व प्रयोगशील व्यक्ति सुनता या पढ़ता है तो उसके मन में स्वाभाविक विचार आता है कि ये सब कपोल कल्पनाएं हैं मानव के मनोरंजन हेतु गढ़ी कहानियां हैं। ऐसा विचार आना सहज व स्वाभाविक है क्योंकि आज देश में न तो कोई प्राचीन अवशेष मिलते हैं जों सिद्ध कर सकें कि प्राचीनकाल में विमान बनाने की तकनीक लोग जानते थें।

सौभाग्य से कुछ ग्रन्थ उपलब्ध हैं, जो बताते हैं कि भारत में प्राचीनकाल में न केवल विमान विद्या थी, अपितु वह बहुत प्रगत अवस्था में भी थी।

अब हम ऋषियों की कुछ वैज्ञानिक शोधों की चर्चा कर प्राचीन विज्ञान व तकनीक पर प्रकाश डालेंगे।

बैटरी व विद्युत : हम सभी ने सुना है कि बैटरी का अविष्कार सबसे पहले बेंजामिन फ्रेंक्लिन ने किया था लेकिन वास्तव में ऐसा नहीं है। वास्तव में बैटरी का अविष्कार कई हजार वर्षो पूर्व अगस्त्य मुनि जी द्वारा कर दिया गया था। अपनी लिखी हुई अगस्त्य सहिंता में उन्होंने बैटरी के निर्माण की विधि का वर्णन किया है।

वे लिखते है श्लोक

संस्थाप्य मृणमये पात्रे, ताम्र पत्र सुशोभितम्।
छादयेच्छिखिग्रिवेण चाद्रीभः काष्टपासुभिः ।। १।।
दस्तालोष्ठोनधिताव्यः पारदाच्छादितस्ततः।
संयोगाज्जायते तेजो मैत्रवरूण संज्ञितम् ।। २।।

(अगस्त्य सहिंता)

अर्थ : एक मिटटी का बर्तन लें और उसे अंदर तक अच्छी तरह से साफ कर लें।

उसमें ताम्रपत्र और शिखिग्रिवा (मोर की गर्दन के रंग जैसा पदार्थ यानि कॉपरसल्फेट) डालें और फिर उस के बाद लकड़ी के गीले बुरादे से भर दें।

उसके बाद लकड़ी के गीले बुरादे के ऊपर पारा आच्छादित दस्त लोष्ट रखें।

इस तरह दोनों के जोड़ने अथार्त तारों के जोड़ने से मित्रावरुण शक्ति की उत्पत्ति होगी।

इस विधि का प्रयोग करके 1.138 वाल्ट की बिजली स्वदेशी विज्ञानं संशोधन संस्थान के द्वारा पैदा की गई थी।

इसके आगे लिखा है की सौ विधुत कुम्भों को शक्ति का पानी में प्रयोग करने पर पानी अपना रूप बदल कर प्राण वायु और उडान वायु में परिवर्तित हो जाता है।

इससे यह स्पष्ट होता है कि अंग्रेजों ने वास्तव में हमारा ही ज्ञान लेकर ख्यातियां प्राप्त की है।

हजारों वर्ष पूर्व ही भारतवासी बैटरी बनाकर विद्युत धारा उत्पन्न करना जान गये थे।

विद्युत धारा का उपयोग कर जल को हाईड्रोजन तथा आक्सीजन में तोड़ने में सफल हो चुके थे

हाईड्रोजन का उपयोग कर'यान को आकाश मे उड़ाना' जानते थें।

क्रमशः

"सपने वो नहीं जो आप सोते हुए देखते है, सपने तो वो है जो आपको सोने नहीं देते।"

योगदान का अवमूल्यन : समाज के लिए घातक

सीताराम गुप्ता
पीतम पुरा, दिल्ली

गोस्वामी तुलसीदास का एक दोहा है – **तुलसी जे कीरति चहहिं, पर की कीरति खोइ, तिनके मुँह मसि लागिहैं, मिटिहि न मरिहै धोइ।** इस दोहे में तुलसीदास कहते हैं कि जो लोग दूसरों की कीर्ति, मान–मर्यादा अथवा प्रतिष्ठा नष्ट करके स्वयं प्रतिष्ठित होना चाहते हैं उनके मुँह पर ऐसी कालिख पुत जाती है जो न तो कभी जीते जी ही मिट पाती है और न ही मरने पर ही उसका कलंक धुल पाता है। वर्तमान परिस्थितियों में भी ये दोहा कम प्रासंगिक नहीं क्योंकि आज समाज में ऐसे लोगों की कमी नहीं जो दूसरों की प्रतिष्ठा नष्ट करके ही स्वयं प्रतिष्ठित होना चाहते हैं। ये अलग बात है कि ऐसे लोगों के मुँह पर ऐसी कालिख पुतेगी या नहीं जो कभी नहीं मिट सकेगी लेकिन दूसरों की प्रतिष्ठा नष्ट करके स्वयं प्रतिष्ठित होना अथवा दूसरों के योगदान को नकारकर उसका श्रेय स्वयं को दे देना समाज के लिए अत्यंत घातक होता है। इससे समाज में सकारात्मक उदात्त जीवन मूल्य नष्ट होकर नकारात्मकता बढ़ने लगती है।

दुनिया में कौन ऐसा व्यक्ति होगा जो कीर्ति, मान–मर्यादा अथवा प्रतिष्ठा प्राप्त करना नहीं चाहेगा? हम सब प्रसिद्ध होना चाहते हैं। कोई किसी क्षेत्र में प्रसिद्धि पाना चाहता तो कोई किसी क्षेत्र में। कोई अधिक धन–दौलत कमाकर प्रसिद्धि पाना चाहता है तो कोई दान–पुण्य करके प्रसिद्ध होना चाहता है। कोई राजनीति में मान–सम्मान प्राप्त करना चाहता है तो कोई समाजसेवा के क्षेत्र में। कोई खेल जगत में कीर्तिमान स्थापित करके प्रसिद्धि प्राप्त करना चाहता है तो कोई साहित्य, संस्कृति अथवा कला के क्षेत्र में नए कीर्तिमान स्थापित करके प्रसिद्धि पाना चाहता है। वास्तविकता यही है कि इस संसार में कोई ऐसा क्षेत्र नहीं जिसमें कुछ नया, कुछ अद्वितीय करके प्रसिद्धि प्राप्त करने की संभावना न हो। इसमें कोई बुराई भी नहीं लेकिन इसके लिए अथक प्रयास करने की आवश्यकता होती है। इसे अपवित्र साधनों से नहीं प्राप्त किया जा सकता और यदि ऐसा किया जाता है तो वो सबके लिए घातक है।

बिना प्रयास अथवा परिश्रम के हम कुछ नहीं प्राप्त कर सकते हैं। एक कलाकार जीवनभर साधना करने के उपरांत ही मान–सम्मान अथवा प्रतिष्ठा अर्जित कर पाता है। एक खिलाड़ी भी निरंतर अभ्यास के बल पर ही जीत हासिल करके खेल जगत में अपना विशेष स्थान बना पाता है। कहने का तात्पर्य यही है कि जीवन में कुछ करने के बाद ही सफलता

मिलती है और सफलता से ही प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। यदि हम आज की स्थितियों पर नजर डालें तो पाते हैं कि हर कोई सफल और प्रतिष्ठित तो होना चाहता है लेकिन अनेक लोग ऐसे भी हैं जो सफलता व प्रतिष्ठा के लिए परिश्रम नहीं करना चाहते। उन्हें तो बस किसी भी कीमत पर सफलता चाहिए। कुछ लोग इसके लिए कुछ भी करने को तैयार हो जाते हैं सिवाय परिश्रम के। उन्हें प्रतिष्ठा तो चाहिए लेकिन उदात्त जीवन मूल्यों का विकास किए बिना ही। वे बिना त्याग व उदात्त जीवन मूल्यों का विकास किए ही दुनिया में नाम कमाना चाहते हैं।

आज देखने-सुनने में आता है कि अनेक खिलाड़ी जीत प्राप्त करके प्रसिद्धि पाने के लिए प्रतिबंधित दवाओं का सेवन करते हैं। समाजसेवा के नाम पर अनेक लोग समाजसेवा का नाटक करते हैं और इसकी आड़ में झूठी प्रतिष्ठा अथवा पैसा कमाना ही उनका प्रमुख उद्देश्य होता है। कुछ लोग दूसरे व्यक्तियों पर अनुचित दोषारोपण करके उनकी प्रतिष्ठा नष्ट करके स्वयं प्रसिद्ध होने के प्रयासों में लगे रहते हैं। आज सबसे अधिक यही हो रहा है लेकिन इसके परिणाम कभी अच्छे नहीं हो सकते। अच्छे लोग वही होते हैं जो यथासंभव अच्छा करते हैं और दूसरों के योगदान को महत्त्व देते हैं। जो लोग दूसरों के योगदान को नकारकर उन पर मिथ्या दोषारोपण करते हैं वे सबसे निकृष्ट श्रेणी के होते हैं। उनके इस प्रकार के कृत्यों से समाज सबसे अधिक प्रभावित होता है। समाज में ऐसे निकृष्ट लोगों की कमी नहीं जो अपने क्षुद्र स्वार्थों के लिए कुछ भी करने को तैयार रहते हैं।

सबसे बड़ी बात तो ये है कि जब हम अनुचित रीति से सफलता अथवा प्रसिद्धि प्राप्त करते हैं तो इसका ये अर्थ है कि हम दूसरे योग्य व्यक्तियों से उनका उचित स्थान छीन रहे हैं जिसका समाज पर सबसे बुरा प्रभाव पड़ता है। इससे योग्य व्यक्ति आगे नहीं आ पाते जिससे समाज उनके योगदान से वंचित रह जाता है। प्रतिभाशाली और समाज के लिए कुछ करने की इच्छा रखने वाले व्यक्ति कुंठित हो जाते हैं और वे समाज के हित में प्रयास करना छोड़ देते हैं। कुछ लोग अच्छे व्यक्तियों की प्रतिष्ठा नष्ट करके स्वयं प्रतिष्ठित होने के लिए समाज के निकृष्टतम व्यक्तियों का महिमामंडित करने में लगे रहते हैं। वे न केवल निकृष्टतम व्यक्तियों को उत्कृष्ट व्यक्तियों से अच्छा सिद्ध करने के प्रयासों में लगे रहते है अपितु इसमें सफल भी हो जाते हैं। उनकी ये सफलता समाज व राष्ट्र के लिए अत्यंत अहितकर होती है। इससे अच्छे-बुरे का भेद मिटने लगता है व समाज में सकारात्मक उदात्त जीवन मूल्यों का ह्रास होने लगता है।

जब निकृष्ट व्यक्ति प्रतिष्ठित हो जाते हैं तो इससे उन्हें तो लाभ होता है लेकिन अच्छे व्यक्ति पर्दे के पीछे चले जाते हैं और गलत व्यक्ति समाज के रोल मश्वडल बन जाते हैं। जब एक निकृष्ट व्यक्ति प्रतिष्ठित होकर हमारा रोल मॉडल बनेगा तो उसकी निकृष्टता को भी हमारे आचरण का हिस्सा बनते देर नहीं लगेगी। इस प्रकार से धीरे-धीरे पूरे समाज से नैतिकता का ह्रास हो जाएगा और उसके स्थान पर अनैतिकता का साम्राज्य स्थापित हो जाएगा। धीरे-धीरे जीवन के हर क्षेत्र में यही अनैतिकता स्वीकृत होती चली जाएगी जिससे संपूर्ण समाज का चारित्रिक पतन हो जाएगा। एक उत्कृष्ट व सभ्य समाज के लिए इससे बड़ा दुर्भाग्य क्या हो सकता है? समाज व व्यक्ति के हित में गलत परंपराओं और अनुचित मूल्यों को रोकने का प्रयास करना अनिवार्य है। इसके लिए दूसरों की देखादेखी ऐसे व्यक्तियों को न केवल कभी महत्त्व नहीं देना चाहिए अपितु उनकी सच्चाई को लोगों के सामने लाने का प्रयास करना चाहिए जो अच्छे लोगों को पीछे धकेलकर स्वयं उनका स्थान ले लेते हैं। ■

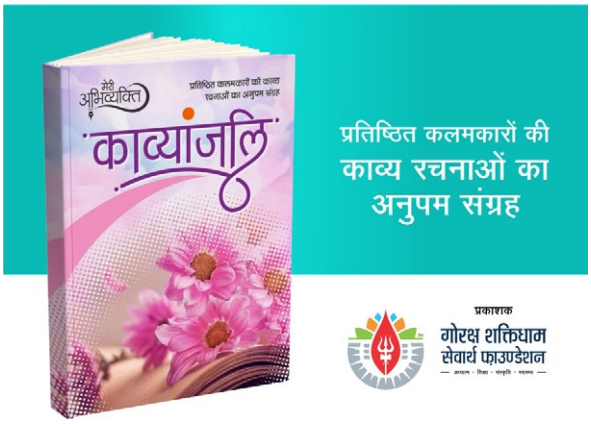

अयोध्या के राम

डॉ. अर्चना प्रकाश
स्वतंत्र लेखन
लखनऊ, उ.प्र.

सारी दुनिया जपै राम का नाम, राम को प्यारी एक अयोध्या।

दशरथ के राम, कौशल्या के राम शबरी के राम, अहिल्या के राम। वस्तुतः राम जन जन के मन में बसे हैं। राम किसके नहीं है ?, लेकिन यहां पर प्रश्न अयोध्या के राम का है, इसलिए यह जानना आवश्यक है कि यद्यपि सारा विश्व ही राममय है, राम से है और राम के कारण है, किंतु राम? अयोध्या के हैं और अयोध्या वासियों के हैं। अयोध्या के कण–कण में राम का वास आज भी महसूस किया जाता है।

राम जब जब वनवास में होते हैं तब भी वह अयोध्या एवं अयोध्या वासियों के लिए सदैव चिंतित रहे। वन गमन के समय कि भरत से कहते हैं कि मैं पिता के वचन निभा रहा हूं। इसलिए अयोध्या के प्रजा जनों के सुख व कल्याण का उत्तरदायित्व तुम्हें ही निभाना होगा।

'पितु आयसु पालीहिदुहु भाई, लोक बेद भल भूप भलाई।'
अस विचारि सब सोच बिहाई, पालहुं अवध अवधि भरि जाई।'

वन गमन के समय राह में उनके पांव में कांटा चुभा तब उन्हें उन्होंने हाथ जोड़कर धरती माता से प्रार्थना की – 'मां मुझे ढूंढता हुआ मेरा भाई भरत इस राह से आए तब उसे यह कांटा न लगे।' उनकी आंखों से अश्रु बहने लगे यह सोच कर कि मेरे भाई को कितनी पीड़ा होगी।

रामायण में अनेक ऐसे दृष्टांत हैं जो यह प्रमाणित करते हैं कि जब भी कोई हर्ष या विषाद का अवसर आया राम के मन में सर्वप्रथम अयोध्या का ही ध्यान आया। इसलिए वह स्वयं कहते हैं :

जन्मभूमि मम पुरी सुहावनि, उत्तर दिशिबह सूरज पावनि।

यह अति शोभित भी है क्योंकि विपत्ति या खुशी के अवसर पर व्यक्ति बहुदा अपने लोग वअपने घर परिवार को ही याद करते हैं राम जी कहते हैं

अति प्रिय मोहि ईहां के बासी, मंम धामदा पुरी सुख रासी।

जब सीता हरण हुआ तब राम पहले तो उन्हें ढूंढते रहे

हे खग मृग हे मधुकर श्रेनी, तुम देखी सीता मृगनयनी।

फिर वह फिर भी व्यथित मन से सोचते हैं कि –

'मैं माताओं को क्या कहूंगा।' जब राम का रावण से युद्ध होता है और लक्ष्मण जी मूर्छित हो जाते हैं, तभी राम करुण विलाप करते हैं। कहते हैं मैं अयोध्या में क्या कहूंगा, मैं अनुज के बिना अयोध्या कैसे जाऊंगा।

अनेक ऐसे कृष्टांत भी मिलते हैं जिससे पता चलता है कि वह अयोध्या के लिए ही वनवास गए थे। उन्हें पता था कि रावण एक बार पहले भी अयोध्या हथियाने की कोशिश कर चुका है। अब तो वह और भी सशक्त हो चुका है। इसलिए अयोध्या पर उसकी निगाह जरूर होगी। व्यक्ति जहां जन्म लेता है उस मिट्टी को, उस खान–पान को, उस बचपन को भूल नहीं पाता है। लंका विजय के बाद राम अयोध्या लौटते हैं और उसी राज महल में रहते हैं। तब वे बाल्यकाल की स्मृतियां माता सीता से साझा करते हैं।

राम के मन में विचारों में और कार्यों में भी अयोध्या व वहां के जनजीवन की झलक मिलती है।

'दैहिक दैविक भौतिक तापा, रामराज नहिं काहुहि व्यापा।'

और भी –

'सब उदार सब पर उपकारी, विप्र चरन सेवक नर नारी।'

'पति अनुकूल सदा रह सीता, सोभा खानि सुसील विनीता ।'

गुप्तार घाट पर समाधि लेने से पूर्व श्री राम ने समस्त अस्त्र–शस्त्र व सभी दरबारियों को गले लगा कर विदा कर दिया, और स्वयं सरयू में समाधि लेने चले गए। यद्यपि वे राजाराम हैं लेकिन उनका मन छोटे बड़े सभी के लिए प्रेम से परिपूर्ण है। कहीं भी उनके राजस्व की झलक नहीं मिलती।

राम आदर्श पुरुष है, मर्यादा पुरुषोत्तम हैं, दीन दुखियों के पालक हैं, और पापियों के उद्धारक हैं। ये सब कुछ है इसलिए है क्योंकि वे अयोध्या के राम हैं। अयोध्या सप्तपुरियों में एक है एवं श्री राम की जन्मभूमि भी है।

'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी'।

मोक्षदायिनी सरयू तट राम को इसी कारण अधिक प्यारा है।

राम चित्रकूट में रहे, नासिक के पास पंचवटी में रहे, लेकिन अयोध्या आज भी राम से है और राम अयोध्या से हैं। मलेशिया, थाईलैंड, अमेरिका, इंग्लैंड सभी देशों में राम के मंदिर हैं फिर भी पूरे विश्व में से लोग अयोध्या श्री राम के दर्शनों के लिए आते हैं और उनकी अभिलाषाएं भी पूरी होती हैं। अयोध्या राम के नाम से ही जानी जाती है। राम की अयोध्या से लंका तक की यात्रा जन–जन से जुड़ने का महायज्ञ है। संपूर्ण भारत में अवध की संस्कृति के प्रचार– प्रसार की यात्रा है।

कभी जो नगर स्वर्ग से सुंदर था। आज लगभग 500 वर्षों के लंबे संघर्ष के बाद पुनः राम मंदिर निर्माण की शुभ बेला आई। इस समय संपूर्ण विश्व में, साधु संतों में, भारत के जन मन में उत्साह व उमंग की लहरें हैं। यह राम का प्रताप है, राम की शक्ति है। यह राम का सुखद एहसास ही तो है कि हम फिर से कह सकेंगे :

देख लो साकेत नगरी है यहीं,
स्वर्ग से मिलने गगन तक जा रही ।
आज देश की हवा के कण– कण में उदघोष है जय श्री राम का।
मन में विश्वास है श्री राम का ,
खग मृग देते संदेश श्री राम का ।
जय सियाराम।

शुभ मुहूर्त के लिए चौघड़िया देखकर कार्य करें।

दिन का चौघड़िया			प्रातः 6 से सायं 6 बजे तक				चौघड़िया	रात का चौघड़िया			सायं 6 से प्रातः 6 बजे तक			
रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	समय	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	6 से 7.30 तक	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	7.30 से 9 तक	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	9 से 10.30 तक	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	10.30 से 12 तक	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	12 से 1.30 तक	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	1.30 से 3 तक	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	3 से 4.30 तक	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	4.30 से 6 तक	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

शुभ मुहूर्त : अमृत, शुभ, लाभ, चर हैं। | अशुभ मुहूर्त : उद्वेग, काल, रोग हैं।

14 अप्रैल जयंती

डॉ. भीमराव अम्बेडकर

सौ. भावना दामले
स्वतंत्र लेखन
इन्दौर (मध्य प्रदेश)

बहुमुखी प्रतिभा के धनी, समाज सुधारक तथा देश के नव – निर्माण में अपना अमूल्य योगदान देने वाले प्रसिद्ध नेता अम्बेडकर जी का जन्म मध्य प्रदेश के महू में 14 अप्रैल 1891 को हुआ था। इनके पिता का नाम रामजी मालोजी सकपाल तथा माता का नाम भीमा बाई था स ये अपने माता पिता की 14 वी सन्तान थे। ये दलित जाति के थे। इनकी जाति को अछूत माना जाता था। इसलिये इनको सामाजिक बहिष्कार, अपमान तथा भेदभाव का सामना करना पड़ा।

इन्होंने सन 1907 में मेट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की स इसके बाद अम्बेडकर जी ने 1915 में प्रसिद्ध कोलम्बिया विश्विद्यालय से अर्थशास्त्र में ड. ए. किया। 1917 में PHD करने के उपरांत 'बार एट ला' की डिग्री प्राप्त की स अम्बेडकर जी ने 32 डिग्रियाँ प्राप्त की थी। वे 9 भाषाओं के जानकार थे। ये अपने युग के सर्वाधिक पढ़े – लिखे राजनेता और विचारक माने जाते हैं स अम्बेडकर एक प्रसिद्ध न्यायविद, अर्थशास्त्री, समाज सुधारक तथा राजनीतिक नेता थे स अस्पृश्यता जैसी सामाजिक बुराइयों को मिटाने के लिए बहुत सारे कार्य किए। दलितों तथा सामाजिक रूप से पिछड़े वर्गों के अधिकारों के लिए जीवन भर संघर्ष किया। जातिगत भेदभाव का उन्मूलन किया।

देश को स्वतंत्रता मिलने के बाद नया संविधान बनाने का विचार किया गया। इस हेतु एक कमेटी का गठन किया गया। अम्बेडकर जी को इस कमेटी का अध्यक्ष बनाया गया। संविधान निर्माण में इनका महत्त्वपूर्ण योगदान है। भारत के झंडे पर अशोक चक्र लगाने में प्रमुख अंबेडकर जी ही थे। ये आजाद भारत के प्रथम कानून मंत्री बने। इसके अलावा अम्बेडकर जी का निर्वाचन आयोग, योजना आयोग, वित्त आयोग, महिलाओं तथा पुरुषों के लिए समान नागरिक हिन्दू संहिता, मौलिक अधिकार, मानवाधिकार तथा सशक्त सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक तथा विदेशी नीतियाँ बनाने में बहुमूल्य योगदान रहा।

अंबेडकर जी के अनुसार उनका जीवन तीन महान व्यक्तियों के कारण सफल हुआ है। ये तीन महान व्यक्ति है, तथागत गौतम बुद्ध, संत कबीर तथा महात्मा ज्योतिबा फुले। इसके अलावा इन्होंने ज्ञान, अभिमान तथा शील को भी उपास्य देवता माना है। डॉक्टर अम्बेडकर विचारक, समाज सेवक तथा संविधान विशेषज्ञ होने के साथ-साथ ही एक उत्कृष्ट लेखक भी थे। पढ़ने के भी बहुत शौकीन थे। उन्होंने मुंबई के अपने घर राजगृह में एक समृद्ध ग्रंथालय का निर्माण किया। जिसमें 50 हजार से भी अधिक किताबें थी। अम्बेडकर जी का लेखन जनता के लिए था। उन्होंने अपने लेखन द्वारा दलितों तथा देश की समस्याओं पर प्रकाश डालकर उजागर किया। उनके द्वारा लिखी हुई प्रमुख किताबें हैं। 'जाति के विनाश', 'दी बुद्ध एंड हिज धम्म', बुद्ध या कार्ल मार्क्स, थॉट्स ऑन पाकिस्तान। अम्बेडकर विदेश जाकर अर्थशास्त्र की डॉक्टरेट डिग्री प्राप्त करने वाले पहले भारतीय थे। एक और गौरवांवित करने वाली बात यह है कि वे एकमात्र ऐसे भारतीय है जिनका पोर्टेट लंदन संग्रहालय में कार्ल मार्क्स के साथ लगा है। सामाजिक और आर्थिक रूप से देश की प्रगति के लिए अम्बेडकर जी ने जो योगदान दिया है उसके लिए हमेशा याद किए जाएंगे। उनके जीवन पर आधारित कई फिल्मों का निर्माण भी हुआ, जिनमें प्रमुख है – भीम गर्जना, डॉ. B. R. अम्बेडकर, बोले इंडिया जय भीम आदि।

अम्बेडकर जी को मरणोपरांत देश का सबसे बड़ा नागरिक सम्मान 'भारत रत्न' दिया गया स इनका एक बड़ा आधिकारिक चित्र भारतीय संसद भवन में प्रदर्शित किया गया है। नागपुर के हवाई अड्डे का नाम डॉ. बाबासाहेब हवाई अड्डा है। इसका पहले नाम सोनेगाव हवाई अड्डा था। महाराष्ट्र सरकारने विभिन्न खण्डों में अम्बेडकर जी के लेखन तथा भाषणों के संग्रह को प्रकाशित किया है। अम्बेडकर जी की यादगार के रूप में देश में अनेक जगहों पर उनके स्मारक स्थापित किये गये हैं। इनका स्मारक दिल्ली में अलीपुर रोड पर स्थापित किया गया है। डॉ. अम्बेडकर इंटरनॅशनल सेंटर दिल्ली में है। भारत रत्न डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर स्मारक ऐरोली मुंबई में है। राजगृह दादर मुंबई में अम्बेडकर जी का घर उनका स्मारक है। डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर संग्रहालय तथा स्मारक पुणे। डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर जी ने देश के लिए तथा देश की जनता के लिए जो कार्य किये हैं, जो अमूल्य योगदान दिया हैं, देश उनके प्रति सदैव ऋणी रहेगा।

जो लक्ष्य में खो गया,
समझो वही सफल हो गया !

शिव वन्दना

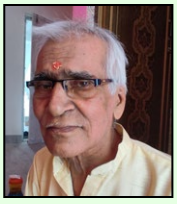

ब्रह्मेश्वर नाथ मिश्र
आरा, भोजपुर
बिहार

नमामी नमामी नमन शंकरम्।
वाम भागे विराजे शैल नन्दिनी,
अंक धारे गणाधीश जग बन्दनम्।
नमामी नमामी नमन शंकरम्।
गौर वर्णम् जटाजूट जगदीश्वरम्,
शिव विशालाक्ष कंठे भुजग शोभितम्।
नमामी नमामी नमन शंकरम्।
चन्द्र शोभत ललाटे प्रसन्नानम्,
नीलकंठम् दयालम् शुचिम् सुन्दरम्।
नमामी नमामी नमन शंकरम्।
मरू भस्म अंगे गले मुंडमालम्,
जटा गंग मृगचर्म दिग्अम्बरम्।
नमामी नमामी नमन शंकरम्।
त्रीशूल पाणीं डिमक डिम्म डमरू,
बजाते चलें हो बसह पर सवारम्।
नमामी नमामी नमन शंकरम्।
निरंजन निरंकार ओंकार भूषण,
शरणागत् 'ब्रह्मेश्वर' तव विश्वेश्वरम्।
नमामी नमामी नमन शंकरम्।

जल है तो कल है

श्रीमती सुषमा सागर मिश्रा
सेवानिवृत्त प्रधानाचार्या
राजकीय बालिका
विद्यालय, लखनऊ

जल पर्यावरण का अभिन्न अंग है, पृथ्वी का दो तिहाई भाग जलीय है परन्तु पीने योग्य स्वच्छ जल सीमित मात्रा में ही है। जल मनुष्य की मूलभूत आवश्यकताओं में से एक है, भारतीय संस्कृति में जल अमृत तुल्य एवं पूज्य माना जाता है क्योंकि इसके अभाव में जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती है। समस्त वनस्पतियां, पशु, पक्षी एवं मानव जाति के लिए जल ही जीवन है क्योंकि जल के बिना इन सब का अस्तित्व समाप्त हो जाएगा। मानव शरीर का अधिकांश भाग जल तत्व से युक्त है। अफसोस यह है कि सब कुछ जानने के बावजूद सर्वाधिक शिक्षित और सभ्य कहे जाने वाले मानव अपनी इस जीवनदायिनी जलसंपदा को दूषित करने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ रहा है।

आदिकाल से पेयजल का मुख्य स्त्रोत कुएं, तालाब, नदी एवं झीलें हुआ करते थे, जिससे जमीन से स्वच्छ ,पोषणयुक्त जल निरंतर मिलता रहता था वे जल सम्पदा का सम्मान एवं संरक्षण करते थे परन्तु विकास के अंधी दौड़ एवं आधुनिकीकरण की प्रतिस्पर्धा के चलते जल के अत्यंत दोहन एवं प्राकृतिक स्रोतों के पर्याप्त उपभोग के अभाव में धीरे धीरे सभी सूखते चले गए। जनसंख्या वृद्धि के साथ साथ औद्योगिकरण एवं आधुनिक जीवन शैली ने अवशेष जल स्रोत को मानवीय कूड़े करकट से दूषित कर दिया है जिसका प्रमाण पवित्र गंगा नदी का जल है जो आदिकाल से जीवाणुविहीन एवं औषधीय गुणों से युक्त एवं कभी न खराब होने वाला माना जाता था, वह गंगाजल आज प्रदूषण से प्रभावित हो अपने प्राकृतिक गुणों से वंचित हो रहा है , अतः यदि मानव सभ्यता को जल प्रदूषण के खतरों से बचाना है तो इसे प्रदूषित होने से रोकना नितांत आवश्यक है।

जल प्रदूषण के प्रमुख कारणों पर दृष्टिपात करे तो बढ़ते हुए उद्योग एवं उनसे निकलने वाला अपशिष्ट पदार्थ है जिसके निस्तारण की उचित व्यवस्था न होने के कारण उसे निकट की नदियों, तालाब एवं अन्य जल स्रोतों में प्रवाहित कर दिया जाता है और इसी के साथ

उद्योगपति अपने कर्तव्यों की इति कर लेते हैं, परंतु वह प्रदूषित जल मानव तो क्या पेड़ –पौधों, पशु– पक्षी, वनस्पतियों किसी के भी योग्य नहीं रहता है। चीनी उद्योग, चमड़ा उद्योग आदि इसके ज्वलन्त उदाहरण हैं। सर्वाधिक खतरनाक रसायनिक उद्योगों से निकलने वाला अपशिष्ट जो जल प्रदूषण के साथ साथ वायु प्रदूषण को भी जन्म देते हैं। अम्लवर्षा भी रसायनिक प्रदूषण का ही एक दुष्परिणाम है। प्रदूषण फैलाने का एक अन्य कारण जनसंख्या वृद्धि है जिसके परिणामस्वरूप उत्सर्जित मल– मूत्र के निस्तारण हेतु नदियों एवं अन्य जल स्रोतों का प्रयोग कर उन्हें दूषित किया जा रहा है और जिस जलस्रोत का जल दूषित हो जाता है,उसके आसपास रहने वाले प्रत्येक जीवन पर जल प्रदूषण का प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। एक निश्चित स्तर से अधिक प्रदूषित जल फसलों के लिए नुकसानदायक होता है क्योंकि इसके दुष्परिणाम स्वरूप जहरीली फसल की पैदावार होती है एवं प्रभावित जमीन की उर्वरक क्षमता में कमी होने लगती है ।इसी प्रकार समुद्र में जहाजों द्वारा उनके तेल रिसाव से एवं तेल के कुओं से होने वाले जल प्रदूषण का दुष्परिणाम सभी जलीय जीव जंतुओं को झेलना पड़ता है। विज्ञान के आधुनिकीकरण का परिणाम है कि कुछ परमाणु परीक्षण जल में करने के कारण वह जल नाभिकीय कण के संलयन से दूषित हो जाता है। गाँव में रहने वाले ग्रामीण आज भी नदी अथवा तालाब के किनारे बैठकर नहाते हैं वो अपने पशुओं को उसी जल के अन्दर नहलाते हैं, वही पर कपड़े धोते हैं एवं अन्य दैनिक कार्यो के माध्यम से जल को प्रदूषित करते रहते हैं। कुछ नगर जो नदियों के किनारे बसे हैं वहां पर व्यक्ति की मृत्यु होने पर उसके मृत शरीर को जल में प्रवाहित कर दिया जाता है जिससे उसके गलने और सड़ने की प्रक्रिया से विषाणु की मात्रा में अतिशय वृद्धि होती है और परिणाम स्वरूप पेयजल दूषित हो जाता है। किसान द्वारा प्रयोग किए जाने वाला रसायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों से प्रभावित निकलने वाला प्रदूषित जल प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से जल को प्रदूषित करता है अन्य ऐसेअनेको माध्यम हैं जो मानव विकास की कहानी तो कहते हैं मगर साथ ही साथ प्राकृतिक जल स्रोतों को प्रदूषित भी करते हैं। बढ़ती हुई आधुनिकता एवं विलासिता के जीवन की प्रतिस्पर्धा के चलते इन सब परिस्थितियों के प्रभाव से स्वच्छ जल की कल्पना बेमानी कही जाएगी। दूषित जल का सेवन कर मानव तो क्या पशु पक्षी, जीव– जंतु, वनस्पति सभी का अस्तित्व खतरे में पड़ जायगा। प्रदूषित जल के कारण मानव को अनेक बीमारियों का सामना करना पड़ता है जैसे पीड़ित व्यक्ति क्षय रोग, उदर रोग, त्वचारोग आदि से ग्रसित हो जाते हैं। यद्यपि दूषित जल के सेवन से पृथ्वी पर जीवन को बनाए रखना एक दुष्कर कार्य है फिर भी हम सभी का कर्तव्य है हम अपने ईश्वर प्रदत्त अमृत रूपी उपहार को सुरक्षित, संरक्षित एवं स्वच्छ रखने के लिए सदैव स्वयं भी सजग रहे और समाज को भी जागरूक करने का प्रयास करें।

जल प्रदूषण से समाज को बचाने के लिए जितना सरकार जिम्मेदार है उतना ही देश का प्रत्येक नागरिक भी है क्योंकि 'आज यदि जल है, तो ही हमारा कल है'। सम्पूर्ण मानव जाति को जल प्रदूषण के राक्षस से बचाने के लिए सर्वप्रथम कारखानों से निकलने

वाले अनावश्यक पदार्थो के निष्पादन की उचित व्यवस्था होनी चाहिए उसमें प्रयोग होने वाले जल की एवं उपयोग के उपरांत दूषित जल के निस्तारण की उचित व्यवस्था कारखाने की स्थापना के साथ ही होनी चाहिए, जिससे उत्पन्न प्रदूषित जल का दोष रहित होकर स्वच्छ जल में विलय हो सके साथ ही स्वच्छ जल स्रोत में उत्सर्जित विषैले पदार्थो फेंकने को अवैध घोषित कर प्रभावी कानूनी कार्रवाई की जाए एवं उन पर आर्थिक दण्ड का प्राविधान प्रारम्भ किया जाए। उत्सर्जित कार्बनिक पदार्थो के निष्पादन से पूर्व उनका ऑक्सीकरण होना आवश्यक है। दूषित पानी में व्याप्त प्रदूषण को नष्ट करने के लिए सीमित मात्रा में ब्लीचिंग पाउडर, क्लोरीन वॉटर अथवा फिटकरी पाउडर आदि का प्रयोग आवश्यक है। रसायनिक कारखानों को जल स्रोतों से दूर स्थापित करना चाहिए। ऋषि में रसायनिक खाद के स्थान पर जैविक खादो का प्रयोग करना चाहिए। नदी, तालाब एवं नहरों की समय–समय पर सफाई अवश्य कराई जाय तथा इनके आस पास कूड़ा कचरा जमा नहीं होने देना चाहिए। जल स्रोतों के संरक्षण के लिए उसके किनारे किनारे अधिक से अधिक वृक्षारोपण करवाने चाहिए। समुद्र में किए जाने वाले परमाणु परीक्षण पर पूरे विश्व में रोक लगा देनी चाहिए साथ ही समुद्री जल को प्रदूषण से बचाने के लिए उसे तेल रिसाव से बचाना चाहिए और उसे प्लास्टिक कचरा, ई कचरा एवं अन्य किसी भी प्रदूषित कचरे से सुरक्षित रखना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त स्वयं को और सम्पूर्ण समाज को जल प्रदूषण से होने वाले खतरे के प्रति जागरूक कर उसे रोकने के लिए प्रेरित करना अति आवश्यक है। जल प्रदूषण का सर्वश्रेष्ठ समाधान है कि इसे होने ही नहीं देना, इसके लिए आवश्यक है मिट्टी का संरक्षण अर्थात मिट्टी के कटान को रोकना, जिसके लिए हम सभी अधिक से अधिक पेड़ या पौधे रोपित कर मिट्टी के कटान को रोक सकते हैं जल प्रदूषण आज देश भर में विकराल रूप ले लिया है अगर हम भविष्य में पानी के स्रोतों को सुरक्षित रखना चाहते हैं और पीने के लिए स्वच्छ पानी चाहते हैं तो हमें आज से और अभी से इस समस्या को दूर करने के लिए कदम उठाने होंगे अगर हम इस इस समस्या से समय रहते ना चेते तो यह पूरे मानव जाति के लिए बहुत ही घातक सिद्ध होगी, परन्तु जब समस्या हाथ से परे हो जायगी तो कहना पड़ेगा 'कि अब पछताए का होत, जब चिड़िया चुन गई खेत।'

जल है अनमोल, इसे दूषित होने से बचाए ,
एक जिम्मेदार नागरिक का फर्ज निभाए।

प्रकाशक
गोरक्ष शक्तिधाम सेवार्थ फ़ाउण्डेशन
www.gssfoundation.org

लघु कथाएँ लिखो पुरस्कार जीतो

मेरी अभिव्यक्ति

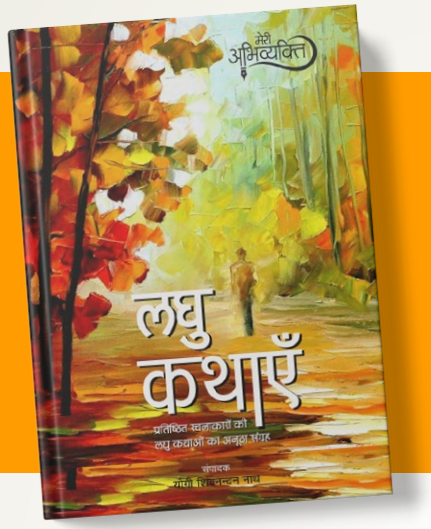

फाउण्डेशन द्वारा हिंदी भाषा के संवर्धन एवं संरक्षण हेतु अखिल भारतीय लघुकथा संकलन (मेरी अभिव्यक्ति–लघु कथाएँ) सहभागिता सहयोग से पुस्तक का प्रकाशन किया जा रहा है।

लघु कथाएं हमारे जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। लघुकथ. ाएँ बुनियादी समस्याओं, व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्र से जुड़ी संवेदनाओं की तात्विक अभिव्यक्ति है।

फाउण्डेशन द्वारा लघु कथा संग्रह में प्रकाशित सर्वश्रेष्ठ तीन रचनाकारों को पुरस्कृत धनराशि क्रमशः 11000/-, 5100/-, 2500/- का चेक, सम्मान पत्र एवं पाँच पुस्तकें उपहार स्वरूप डाक द्वारा प्रेषित की जाएंगी।

विशेष

फाउण्डेशन, देश के प्रतिष्ठित लघुकथाकारों से पर्यावरण, प्रकृति, नारीशक्ति, जीवदया, संस्कार, शिक्षा, स्वास्थ्य, लोक संस्कृति, जीवन दर्शन, नैतिकता, कर्तव्य परायणता, मानवीय समानता, सद्भावना, अथवा अन्य राष्ट्रहित विषयों पर आधारित लघु कथाएं आमंत्रित करता है।

- लघुकथाएँ स्वरचित, अप्रकाशित एवं मौलिक होनी चाहिये।
- प्रत्येक रचनाकार को पुस्तक में चार पृष्ठ आवंटित किये जायेंगे।
- कम से कम पाँच लघुकथाएँ प्रेषित करनी आवश्यक है। जो एक या अधिक विषयों पर आधारित हो सकती है।
- पुस्तक में चार रचनाओं का प्रकाशन किया जायेगा।
- प्रत्येक लघु कथा शब्द सीमा अधिकतम 250 शब्दों से अधिक नहीं होनी चाहिये।
- लेखक / लेखिका का नाम एवं फोटो, स्थान, राज्य, ई मेल आई.डी. पुस्तक में प्रकाशित किया जाएगा।
- फाउण्डेशन द्वारा प्रत्येक सहभागी लेखक/लेखिका को आकर्षक सम्मान पत्र, पाँच पुस्तकें उपहार स्वरूप डाक द्वारा प्रेषित की जाएंगी।
- पुस्तक विवरण : साईज – **5.25 x 8.5** इंच, रंगीन आवरण (लेमिनेटेड), इनर ब्लैक एवं व्हाईट रहेगा।
- यह पुस्तक आई.एस.बी.एन. के साथ प्रकाशित की जायेगी।
- लेखक/लेखिका अपनी रचना यूनिकोड/कृतिदेव – वर्ड फाईल में टाईप करा कर ही भेजें। साथ में पी.डी.एफ. फाईल, बायोडेटा, फोटो एवं सहयोग राशी की रसीद ई मेल करें : gssfoundation9@gmail.com

- **पंजीकरण सहभागिता सहयोग राशि : ₹2500/– निम्न खाते में जमा करें :–**

Goraksh Shaktidham Sevarth Foundation
HDFC Bank
A/C : 50200067261443
IFSC : HDFC0009412
Indore (Madhya Pradesh)India

सम्पर्क : योगी शिवनन्दन नाथ: 74154 10516, +91 731 491 8681

Goraksh Shaktidham Sevarth Foundation Is Registered u/s 12A Of The Income Tax Act 1961 & With That Director Of Income Tax (Exemptions) u/s 80G
UR No.AAJCG5116FF20221

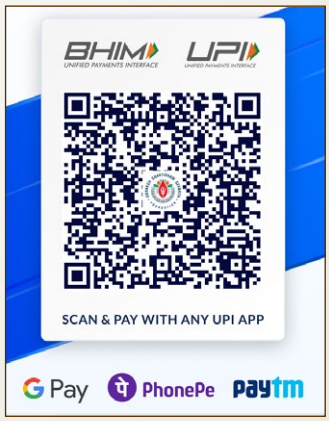

पंजीकरण की अन्तिम तिथि 31 मई 2023

समय को पहचानें

डॉ. हनुमान प्रसाद उत्तम
स्वतंत्र लेखन
योग. प्राकृतिक चिकित्सा विशेषज्ञ
(आयुर्वेद रत्न)
कानपुर नगर, उत्तर प्रदेश

विख्यात अंग्रेजी उपन्यासकार शेक्सपियर ने कहा है–''समय मनुष्यों का राजा है'' यह सत्य है कि समय बहुत ही बहुमूल्य तोहफा है जो कि तात्कालिक क्षण का ही आलिंगन करता है और उससे अधिक एक भी क्षण आगे नहीं बढ़ाया जा सकता। एक गतिशील तथा विजयी व्यक्तित्व का विकास, सर्वश्रेष्ठ लक्ष्य की प्राप्ति, स्वपूर्ति तथा अपनी वास्तविकता असंभावित आशाएं हैं, यदि आप अपने समय का पूंजी के रुप में सदुपयोग करते हैं। समय का सदुपयोग करने के लिए इसकी जिम्मेदारी लेनी चाहिए। अपने ऊपर नियंत्रण सीखना चाहिए और मिलने वाले समय को फालतू नहीं खर्च करना चाहिए। मिलने वाले समय का प्रभारी (इंचार्ज) बनने के लिए कुछ उपाय–

समय निष्ठता को विकसित कीजिए :– यदि आप समय के मूल्य पर विचार करते हैं तो आपको समय बद्धता की प्रेरणा अवश्य मिलेगी। इसका आशय है आप अपने समय का वैसा ही आदर करेंगे जैसा कि दूसरों से अपेक्षा करते हैं। अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति (वाशिंगटन) को समय निष्ठता अत्यधिक पसंद थी। एक बार उनके सचिव ने अपने देर से आने का कारण बताया कि उसकी घड़ी धीमे चलती है या उस दिन घड़ी धीमी थी तो उन्होंने तुरंत कहा–''या तो आप अपनी घड़ी बदल लें या हमें दूसरे सचिव की व्यवस्था करनी चाहिए।'' जनरल दि गौल समय बद्धता के महान प्रतीक थे। जब उनकी पत्नी उनके पास थोड़ा–सा भी देर से आती तो वे तुरंत उनसे कहते थे, ''व्योन मैं आपकी प्रतिक्षा कर रहा था '' समय निष्ठ न होना मूर्खता है। यह प्रकट करती है कि आपका परिवार भी समय निष्ठता के प्रति अनुत्तरदायी है। यह समय की चोरी है। यह अपेक्षाकृत अच्छा होगा यदि आप किसी कार्य को थोड़ा–सा पहले प्रारंभ कर दें, जिससे कि आप बिल्कुल समय पर ही जाएं, यदि आपको देर हो गई हो।

अपने कार्य में अनुशासन बनाए रखें :– सर्वप्रथम आप अपने को विश्वस्त कीजिए कि आप अपने कार्य में अनुशासन बनाए रखेंगे वह कार्य जो किसी व्यक्ति द्वारा मेज या बेंच पर प्रतिदिन पूर्ण किया जाता है, अद्‌भुत या विलक्षण है किंतु मात्र यही पर्याप्त नहीं कि आप डेस्क में बैठकर कार्य करें अपितु इसके अलावा आपको बिल्कुल शांत रहना चाहिए तथा किसी को विघ्न डालने की इजाजत नहीं देना चाहिए। यदि कोई भी बाधा आपके कार्य में नहीं है तो आपके कार्य की प्रभावोत्पादकता ज्यामितीय प्रगति के अनुसार बढ़ती है। समय को व्यर्थ गवाने वाले निर्दयी, अविवेकी तथा कठोर होते हैं उनके साथ बिल्कुल ही क्रूरता का व्यवहार करना चाहिए।

गोथ ने कहा है कि कार्य में अनुशासन, भावनाओं को तेज करता है इसी प्रकार एन्डी मोरिस ने लिखा है कि रिक्त भावनाओं के द्वारा आप अपने कार्य में संलग्न मत होइए क्योंकि रिक्तता का आशय ही है अनुशासनहीनता। दूसरी बात उन्होंने कही है प्रत्येक कठिनाई जो भी आपके रास्ते में आती है, उस पर विजयी होइए किंतु अपना कार्य समाप्त कीजिए।

समय के प्रति सचेत रहिए :– समय के प्रति सचेत रहना बहुत बड़ा कौशल है, यदि आप समय के प्रति सतर्क हैं, तो आपको अधिक दिनों तक घड़ी रखने की जरुरत नहीं पड़ेगी।

द्रुतगति से निर्णय लीजिए :– एमी. बी. फोर्क हैरिस तथा डॉ. थॉमस हैरिस ने निरीक्षण करके कहा है–'यदि आपने समय का दुरुपयोग करते हुए अपनी समस्याओं को हल नहीं किया है तो इसी गलती के लिए आपकी समस्याएं आपको लूट सकती हैं और आप अपने कीमती रिक्त समय में निराशा या उदासीनता को हासिल करेंगे। अतः निर्णय लेने में देरी मत कीजिए। चिंतित होना, बेकार के कार्य करना तथा निरर्थक इधर–उधर घूमना, आलसी मुद्रा में घूमना या बेकार की पुस्तक पढ़ना या बकवास करने की बजाए आप फुर्तीले बनिए तथा अपनी समस्या को हल करने के लिए प्रयत्न कीजिए, यही प्रयत्न व्यक्तित्व की विशेषता भी है। यदि समय का एकत्र करने से आप अलग हैं, तो निश्चित है कि आप संसार के दिन प्रतिदिन होने वाले बदलाव से दूर होकर सड़क पर होंगे।

विषम क्षणों का भी सदुपयोग कीजिए :– यदि आप अपने विषम क्षणेां लेखा–जोखा रखते हैं तो निश्चित है कि आप अपने समय के प्रभारी होंगे। जब आप किसी डॉक्टर की प्रतीक्षा कर रहे हो तो समय का उपयोग आप कोई पुस्तक पढ़कर अथवा अपने मित्र को पत्र लिखकर कर सकते हैं। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ट्रेन में भी कुछ न कुछ कार्य करते रहते थे। लालबहादुर शास्त्री को जब भी इस प्रकार का समय मिलता था तो वे अपने विचारों को लिखते थे। इसलिए मानव को समय को बिना अच्छा परिणाम प्राप्त किए मध्य में नहीं छोड़ना चाहिए। विषम क्षणों का भी सदुपयोग करने में नहीं चूकना चाहिए। समय अमूल्य है यह किसी का इंतजार नहीं करता है।

अगर मैं परिंदा होता

बद्री प्रसाद वर्मा अनजान
अध्यक्ष स्वर्गीय मीनु रेडियो
श्रोता क्लब
गोरखपुर, उत्तर प्रदेश

अगर मैं परिंदा होता
पंख फड़फडा कर
दूर गगन में उड़ जाता
कर लेता मन की
सारी मुरादें पुरी
अगर मैं परिंदा होता ।

देख आता सागर को
चूम आता पक्षी को
और पी आता
नदी का मीठा जल
अगर मैं परिंदा होता।

देख आता राम की अयोध्या
देख आता काशी के
बाबा विश्वनाथ को
घूम लेता कृष्ण की मथुरा
अगर मैं परिंदा होता।

कर लेता ताजमहल की सैर
और देख आता स्वर्णमंदिर
लालकिला भी जा कर घूम आता
मन जहां कहता वहां पहुंच जाता
अगर मैं परिंदा होता।

जहां जी करता चला जाता
मन की हर अभिलाषा
पूरी कर लेता
जी भर के घूम लेता दुनिया
अगर मैं परिंदा होता।

न दौलत की चाह होती
न कोई परवाह होता
खा लेता भर पेट फलों को
भूखा कभी नहीं सोता
और लालच कोई नहीं होता
अगर मैं परिंदा होता।

सुंदरकाण्ड में निहित प्रतीकार्थ की सुंदरता

डॉ. शकुंतला कालरा
संपादक (अध्यात्म संदेश)
एसोसियेट प्रोफेसर
मैत्रेयीकॉलेज,
दिल्ली विश्वविद्यालय
दिल्ली

मानस के सातों कांडों के नाम उसमें निरूपित कथा को दर्शाते हैं। नाम मात्र से भीतर के कथा–प्रसंग घटनाओं सहित उसमें निहित अर्थ को ध्वनित करते हैं। बालकांड राम और लक्ष्मण, भरत तथा शत्रुघ्न सहित चारों बालकों के अवरतण की कथा है। राजा दशरथ का पुत्रेष्टि यज्ञ, रानियों का गर्भवती होना, श्रीभगवान का प्राक्टय और बाललीला का आनंद, श्रीराम–लक्ष्मण का विश्वामित्र के साथ यज्ञरक्षा के लिए जाना से लेकर चारों भाइयों की विवाह की कथा है।

'अयोध्याकांड' का आरंभ अयोध्या की भूमि से होता है। राम राज्याभिषेक की तैयारी, सरस्वती का मंथरा की बुद्धि फेरना, कैकेयी का वर मांगना, राम का बनवास, भरत का अयोध्यावासियों सहित चित्रकूट जाना और चरण–पादुका लेकर अयोध्या लौटना आदि कथा–प्रसंग अयोध्याकांड में वर्णित है।

'अरव्यकांड' वन की 'लीला' है। दण्डकारव्य में राम के पंचवटी–निवास, सीता–अनुसूया–मिलन, सुतीक्ष्ण, अगस्त्य–मिलन, सूर्पनखा की कथा, जटायु–रावण–युद्ध, शबरी पर कृपा, नवधा भक्ति उपदेश आदि प्रसंग हैं।

'किष्किंधाकांड' में नाम के अनुरूप 'किष्किंधा' में घटित होने वाली घटनाओं का वर्णन है। श्रीराम–हनुमान मिलन और श्रीराम सुग्रीव की मित्रता, बालिवध, तारा का विलाप, राम द्वारा तारा को उपदेश, वानरों का समुद्र तट पर आना, जामवंत का हनुमान को बल याद कराकर उत्साहित करना आदि प्रसंग वर्णित हैं।

'लंकाकांड' लंका की भूमि पर होने वाले युद्ध–प्रसंग से जुड़ा है। नल–नील द्वारा पुल–बांधना, श्रीराम द्वारा रामेश्वर की स्थापना, श्रीराम के बाण से रावण के मुकुट छत्र आदि का गिरना, मंदोदरी का रावण को समझाना, अंगद का लंका–प्रवेश आदि प्रसंग वर्णित हैं।

'उत्तरकांड' रामकथा का उपसंहार है। साथ ही रामकथा–यानि रामायण के पूर्व कांडों में उठाए गए प्रश्नों के 'उत्तर' हैं, इसलिए भी इस कांड का नाम 'उत्तरकांड' है। स्पष्ट है कि ये छः नाम कथाश्रित हैं और शीर्षक मात्र से बड़ी सरलता से अन्तरंग विषय को समझा जा सकता है। 'सुन्दरकांड' वाल्मीकि–रामायण और तुलसी के 'रामचरितमानस' का पांचवा कांड है जिसकी 'फलश्रुति' अत्यंत सुन्दर है। इसीलिए यह कांड सर्वाधिक जनप्रिय है। कुछ लोग 'सुन्दरकांड' का नित्य पाठ करते हैं क्योंकि गोस्वामी जी उसकी 'फलश्रुति' बताते हैं –

सकल सुमंगलदायक रघुनायक गुनगान।
सादर सुनहिं ते तरहिं भवसिंधु बिना जलजान।।

5/60 दोहा

अर्थात् राम का चरित्र समस्त मंगलों को देने वाला है। जो लोग आदरपूर्वक उनका चरित्र गाते अथवा सुनते हैं वे संसार–सागर को बिना जहाज के ही पार कर लेते हैं। यहाँ तुलसीदास जी कहना चाहते हैं कि राम का गुणगान श्री रामजी से भी अधिक काम करता है। श्रीराम के चरणों में जो स्नेह है वह समस्त सुमंगलों को देने वाला है। सकल सुमंगल से अभिप्राय धर्म, अर्थ और कामदाता और भव तरहिं से मोक्षदाता अर्थात् चारों पुरुषार्थों को देने वाला।

यह तो थी तुलसीदास द्वारा विश्वास से कही गई सुंदरकांड की फलश्रुति। पूरे कांड में घटनाक्रम द्वारा जो निहित ध्वन्यार्थ है वह यह है कि इस कांड के द्वारा कामनाओं की पूर्ति होती है। 'सुन्दरकांड' के केन्द्र में जगतजननी सीता जी हैं और केन्द्र से सम्बद्ध हनुमान जी हैं। मुख्य देवता भी हनुमान जी एवं जगत्जननी हैं। इन दोनों के माध्यम से भक्तों की कामनाएँ पूर्ण होती हैं। इस कांड में एक ओर विभीषण को राज्य मिला तो दूसरी ओर हनुमान जी को भक्ति मिली। विभीषण के हृदय में सूक्ष्म रूप से 'लंकेश' बनने की कामना थी जिसे अन्तर्यामी राम जान लेते हैं इसलिए हनुमान द्वारा निमंत्रण पाकर विभीषण राम के पास आते हैं। राम की प्राप्ति के साथ वह उन्हें लंका का राज्य भी दिलाते हैं। विभीषण सकाम भाव से राम की शरण में आते हैं। हनुमान की मंत्रणा मानकर वह लंकेश्वर बन जाते हैं। 'हनुमान चालीसा' में भी तुलसीदास ने इस ओर स्पष्ट संकेत किया है–

"तुम्हरो मंत्र विभीषण माना। लंकेश्वर भे सब जग जाना।।"

जीव का लक्ष्य है पुरुषार्थ–चतुष्टय की प्राप्ति। 'सुन्दरकांड' में विभीषण को 'अर्थ' और 'धर्म' दो पुरुषार्थों की प्राप्ति होती है। इसी तरह सुग्रीव भी सकाम भक्त है। भगवान राम सुग्रीव के अन्तःकरण का भाव जानते हैं पर उसे इस अहसास से भी मुक्त रखना चाहते हैं कि सकामता, निष्कामता से कहीं कमतर है। राम तो सुग्रीव के मन का संकोच यह कहकर खत्म कर देना चाहते हैं कि मैं भी तुम्हारी तरह सकाम हूँ। मेरी और तुम्हारी स्थिति एक जैसी है। अतः हम तुम दोनों अच्छे मित्र बन सकते हैं। तुम मेरी सहायता करो और मैं तुम्हारी। हनुमान द्वारा सुग्रीव की कामना पूर्ण होती है। विभीषण की भाँति वह उसे भगवान और राज्य दोनों की प्राप्ति कराते हैं। 'हनुमान चालीसा' में तुलसीदास ने इस बात की भी पुष्टि करते हुए स्पष्ट कहा है –

'तुम उपकार सुग्रीवहि कीन्हा। राम मिलाइ राजपद दीन्हा।।'
– हनुमान चालीसा

सुग्रीव के जीवन में आने वाली दूसरी समस्या पत्नी–वियोग की है। राम द्वारा इसका भी निवारण होता है। इस प्रकार सुन्दरकांड भक्त की साधारण से साधारण और बड़ी से बड़ी सभी कामनाओं की पूर्ति करने वाला है। ध्यातव्य है कि इस कांड में तुलसीदास ने हनुमान के माध्यम से स्वयं राम की कामना की भी पूर्ति दिखाई है। सर्वशक्तिमान की 'लीला' का आनंद देने हेतु तुलसीदास ने भगवान राम को हनुमान के द्वारा सीता जी का समाचार सुनाकर सीता–मिलन की पूर्व–भूमिका का निर्माण कराया है। हनुमान, राम के सेवक हैं। सेवक स्वामी के कार्य–सिद्धि में प्रमुख सहायक होता है। प्रभु राम का स्वभाव है सेवक को मान देना। हनुमान स्वयं निष्काम हैं पर भगवान सहित सभी सकामी भक्तों की कामना पूरी करते हैं।

'सुन्दरकांड' सकाम भक्ति के साथ निष्काम भक्ति की कामना को भी पूरा करने वाला है। अंगद और हनुमान जी निष्काम भक्त हैं। अंगद जी भी राज्य छोड़कर भगवान की सेवा में रहना चाहते हैं और हनुमान जी भी। दोनों की कामनाएँ पूरी होती हैं।

हनुमान जी की लंका–यात्रा का उद्देश्य है जनकनंदिनी सीता की खोज। सीता जो साक्षात् भक्ति हैं। भगवान शंकराचार्य के शब्दों में सीता मूर्तिमती शांति हैं। "शांति सीता समानीता आत्मा रामो विराजते" और जीवन का परम उद्देश्य भी शांति प्राप्त करना है। लंका में बैठी भक्ति एवं शांति रूपा सीता तक पहुँचने में समुद्र एक बाधा के रूप में है। हनुमान ने जान लिया कि उनकी छलाँग उन्हें जगत्जननी के चरणों में पहुँचा सकती है। हनुमान ने देखा समुद्र के किनारे एक पर्वत है वहाँ से ही छलाँग लगाई जा सकती है। रघुबीर का बार–बार स्मरण करते हुए हनुमान जी बड़े वेग से उस पर उछलकर कूद पड़े –

'सिंधु तीर एक भूधर सुन्दर। कौतुक कूदि चढ़ेउ ता ऊपर।
बार–बार रघुबीर सँभारी। तरकेउ पवनतनय बल भारी। *5/1/3*

इस 'भूधर' का नाम सुन्दर है। प्रभु ने हनुमान को साधन रूप में जो मुद्रिका दी है वह भी सुन्दर है क्योंकि उस पर राम–नाम अंकित है –

'तब देखी मुद्रिका मनोहर । राम नाम अंकित अति सुन्दर।।

5/13/1

हनुमान जी मुद्रिका मुख में रखते है। अर्थात् भगवद् नाम का आश्रय लेकर कूद जाते हैं और समुद्र लाँघ जाते हैं –

'प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माँही। जलधि लाँघ गए अचरज नाँही।। *हनुमान चालीसा*

क्रमशः

अच्छे अनुभव - बुरे अनुभव

अगर आप वाकई एक बुरे अनुभव से गुजरे हैं, तो यह एक अच्छा अनुभव है, क्योंकि ये अनमोल हैं। कहते हैं ना आँखें बंद करने से मुसीबत नहीं टलती और मुसीबत आए बिना आँखे नहीं खुलती। जग जाहिर है कि अनुभव सबसे बड़ा गुरु है जिससे मिला ज्ञान बेशकीमती होता है।

सुजाता प्रसाद
लेखिका,
शिक्षिका सनराइज एकेडमी
मोटिवेशनल ओरेटर
नई दिल्ली

अपने जीवन में कड़वे पलों से आप जो सीखते हैं, वह सचमुच अनमोल होता है। बीते हुए कल के कारण बेकार में हमें बोझिल नहीं होना चाहिए। बल्कि जो पाठ हमने पढ़ लिए हैं उन्हें बंद करते जाना ही ठीक है, बार–बार उन पर जाने की जरुरत नहीं है। क्योंकि इसका नुकसान सिर्फ और सिर्फ आपको ही भुगतना पड़ेगा। हां उससे मिली सीख जरुर याद रखें। अगर आप समझदार हैं तो आपको याद रखना चाहिए, अपना हर कड़वा अनुभव बिना नाराजगी के बिना गुस्से के इजहार के। नहीं तो मानसिक तनाव आपका साथी बन जाएगा। बस इतनी कोशिश होनी चाहिए कि ये अनुभव आपको हमेशा याद रहें, ताकि आप फिर कभी उन स्थितियों में न पड़ जाएं। अगर आप उस अनुभव को भूल जाते हैं, तो आप बेवकूफ हैं। सिर्फ एक नासमझ व्यक्ति ही भूलने की कोशिश करता है। कभी कभी तो आपको दूसरों की गलतियों से भी सीखना चाहिए, क्योंकि आपकी उम्र इतनी नहीं कि सारी गलतियां खुद करें। जब तक जीवन है, तब तक सीखना है यानि अनुभव ही जगत में एक अच्छे शिक्षक की तरह हमारे साथ साथ चलता है।

क्या आपका भी अनुभव कुछ ऐसा नहीं कहता है कि अच्छे लोग केवल तब तक अच्छे हैं जब तक आप उनके अनुसार काम कर रहे हैं। अंत तक हमें परखा जाता रहेगा। कुछ अच्छा कहेंगे तो बुरा कहने वाले भी कम नहीं होगे। सबके अपने संघर्ष हैं और दुनिया को देखने की अपनी समझ। पर खुद को दूसरों पर या दूसरों को खुद पर हावी होने देने की कोई तो सीमा होनी ही चाहिए। आप अकेले नहीं हैं जो गलतियां करके बाद में अफसोस करते हैं। कोई फर्क नहीं पड़ता कि लोग आपको क्या कहते हैं। सच यह है कि हम सब एक साथ इस जिंदगी को समझ रहे हैं। अनुभव तो यही कहता है कि सत्य को सदैव तीन चरणो से गुजरना होता है उपहास, विरोध और अन्ततः स्वीकृती।

ठीक उसी तरह जब भी कभी अच्छा अनुभव हुआ हो तो उसे हमें शेयर जरुर करना चाहिए क्योंकि दुनिया कांच के महल जैसी है, अपने स्वभाव की छाया ही उस पर पड़ती है। आपके अच्छे अनुभव का उनपर भी सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। अगर आप खुश रहेंगें तो दूसरे भी खुश रहेंगे।

अंग्रेजी में एक कहावत है कि अगर आप हँसेंगे तो दुनिया भी आपका साथ देगी पर आपको गुस्सा होना और रोना है तो दुनिया से दूर किसी जंगल में चले जाना ही आपके लिए बेहतर होगा। हम सबसे ज्यादा समय अपने साथ बिताते हैं, पर परवाह दूसरों की करते हैं। दुनिया क्या चाहती है, इसकी बड़ी चिंता है हमें। अफ्रीकी अमेरिकी विचारक हॉवर्ड थुरमन कहते हैं, मत सोचें कि दुनिया क्या चाहती है। खुद से पूछें कि आपको क्या जीवंत बना सकता है और फिर वही करें, क्योंकि दुनिया को जीवंत लोगों की ही जरूरत है।

झूठ के अंधेरे पर सच्चाई की रोशनी

डॉ. प्रदीप उपाध्याय
देवास, मध्य प्रदेश

जब सच और झूठ की बात चलती है तो लोग हमेशा अपेक्षा करते हैं कि उनसे कोई झूठ न बोले।सच और झूठ समानांतर हो ही नहीं सकते। सच में मिठास नहीं होती, सत्य तो हमेशा कड़वा ही माना जाता है।कटु शब्द या कटु वाक्य की तरह ही कटु सत्य भी कहां कर्णप्रिय होता है। प्रशंसा के पुल पर इंसान दौड़ लगाता फिरता है क्योंकि झूठी तारीफ अक्सर लोगो को बहुत पसंद आती हैं।

सच सुनने और सच का सामना करने का साहस बहुत कम लोगों में रहता है। इससे एक बात तो स्पष्ट हो जाती है कि सच का स्वाद कड़वा होता है और झूठ का स्वाद मीठा। इसीलिए लोगो की प्रवृत्ति ऐसी हो जाती है कि मीठा –मीठा गप–गप और कड़वा –कड़वा थू–थू! लेकिन जिस तरह से ज्यादा मीठा खाना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होता है और डायबिटीज सहित कई बीमारियों का आमंत्रण कर देता है वहीं कड़वा या कसैला खाना स्वास्थ्य के लिए सामान्यतः अहितकर नहीं होता है। बीमारियों के उपचार में कड़वी दवाई ही काम आती है।इसीलिए बड़े–बूढ़े कहते हैं कि सच का दामन थामो और झूठ से तौबा कर लो।

पहले पहल तो व्यक्ति को स्वयं ही सच से सामना करने का साहस रखना चाहिए। समझदार कह भी गए हैं कि मंजिल मिलना तय हैं, अगर आप खुद से झूठे वादे नहीं करते हैं। हमारे सच से यदि किसी को बुरा भी लगता है तो कोई हर्ज नहीं है ।झूठ बोलकर आज अच्छा बनने से बेहतर है सच बोलकर बुरा बन जाना।कल जब झूठ सामने आएगा तो हो सकता है रिश्ते ही खराब हो जाएं।

लोग स्वार्थ के वशीभूत झूठ का सहारा तो ले लेते हैं और तर्क देते हैं कि इस मतलबी दुनिया में लोगो को अपना मतलब पूरा करने के लिए झूठ का सहारा लेना ही पड़ता है। लेकिन इतनी स्वार्थपरता उचित नहीं है क्योंकि हमें इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि झूठ के पास सच्चाई को हराने का सामर्थ्य ना के बराबर होता हैं।सच्चाई की रौशनी एक ना एक दिन झूठ के अँधेरे में अपना प्रकाश जरूर छोड़ती है।

मित्रता में कभी झूठ का सहारा नहीं लिया जाना चाहिए। झूठी मित्रता करने से बेहतर है कि कभी किसी से दोस्ती ही नहीं करें क्योंकि लोग आप पर भरोसा करना बंद कर देंगे, जब आप सच से ज्यादा झूठ बोलने लगेंगे। वैसे अक्सर झूठ सबको इसलिए अच्छा लगता है, क्योंकि यह व्यक्ति को उसकी कमियां नहीं बताता ।झूठी बातो पर लोग आसानी से यकीन कर लेते हैं और सच्ची बातों को सुनकर भी विश्वास नहीं करते। कहा गया है कि जब तक सच जूते पहन रहा होता है, तब तक एक झूठ आधी दुनिया का सफर कर चुका होता है। किन्तु यह भी याद रखा जाना चाहिए कि झूठ बोलने में सबसे बड़ी दिक्कत यही है कि झूठ को हमेशा याद रखना पड़ता है और झूठ अपनी नजरे तब नीचे कर लेता है, जब उसका सामना सच से होता हैं। झूठ की नाव सच के समंदर में चल नही पाती है। अंततः उसे डूबना ही पड़ता है। झूठ की बुनियाद पर निर्मित इमारत कमजोर और खोखली होती है। झूठ बोलकर हम अपनी निगाह में खुद ही गिर जाते हैं।

जिस व्यक्ति का मन सच्चा होता है, वह व्यक्ति कभी भी झूठ नहीं बोल सकता। झूठ के लिए बेवजह दलीलें देना पड़ती हैं, जबकि सच तो खुद ही अपना वकील होता है। झूठ की बुनियाद पर रचे गए रिश्ते अंत में धोखा देकर ही खत्म होते हैं। हमें यह बात भी ध्यान रखना चाहिए कि किसी को झूठा दिलासा देकर हम केवल किसी के जज्बातों के साथ खेल रहे होते हैं। जिस रिश्ते की शुरुवात एक झूठ से शुरू होती है , उस रिश्ते की उम्र ज्यादा लम्बी नहीं होती है। इंसान चाहे कितना भी झूठ बोल ले, लेकिन अंत में उसका झूठ पकड़ा ही जाता हैं।सच के सामने झूठ का कद हमेशा छोटा ही रहता हैं।

सच बोलना अच्छी बात है। परन्तु सत्य क्या है? यदि इस पर विचार करें तो कह सकते हैं कि यह एक भाव है जो निश्छलता, पवित्रता और अहिंसा का प्रतीक है। सत्य वचन भी तो यही है अर्थात जिसमें वाणी का संयम और भाषा का विवेक हो। सत्य में ही वह शक्ति है जो आत्मा को संतुष्ट कर सकती है। झूठ का सम्बन्ध सदैव अंधकार से रहता है तो दूसरी ओर सच का सम्बन्ध उजियारे से रहता है। व्यक्ति जब भी झूठ बोलता है उसके साथ उसका चेहरा बोलता है और उसका सच कह देता है।बस उसकी पहचान करने वाला होना चाहिए क्योंकि सच सभी के लिए नहीं होता,वह केवल उसे खोजने वालों के लिए होता है। कन्फ्युशियस ने कहा भी है कि 'सत्य श्रेष्ठ व्यक्ति की वस्तु है।' गौतम बुद्ध ने भी कहा है – 'तीन चीजें ज्यादा देर तक नहीं छुप सकती, सूरज, चंद्रमा और सत्य।'

आज हम जिधर भी निगाहें डालते हैं तो हर तरफ झूठ का साम्राज्य दिखाई देता है। सत्य अलग–थलग परिलक्षित होता है किन्तु महात्मा गांधी के शब्दों में – 'यद्यपि आप अल्पमत में हों , पर सच तो सच है।' एमिली डिकींसन ने कहा है कि –'सच इतना दुर्लभ है कि इसे बताने में खुशी होती है।' सत्य हमेशा झूठ के सामने सीना ताने खड़ा रहता है। उसे कभी शर्मिंदगी महसूस नहीं होती है जबकि झूठ को हमेशा अपराध बोध बना रहता है उसकी निगाहें सच के सामने झूकी रहती है। विंस्टन चर्चिल ने कहा है कि –'सत्य अकाट्य है। द्वेष इसपे हमला कर सकता है, अज्ञानता इसका उपहास उड़ा सकती है, लेकिन अंत में सत्य ही रहता है।' महात्मा गांधी का मानना था कि सत्य बिना जन समर्थन के भी खड़ा रहता है वह आत्मनिर्भर है। सच सूरज की तरह है। आप उसपर कुछ देर के लिए पर्दा डाल सकते हैं , पर वो कहीं जाने वाला नहीं । किसी भी सत्य के तीन चरण होते है– पहला, उसका उपहास किया जाता है। दूसरा, उसका हिंसक विरोध किया जाता है। तीसरा, उसे स्वतः ही अपनाया जाता है।

अतः सच्चा व्यक्ति अपने पथ से डिगता नहीं है। हां, झूठे व्यक्ति की तुलना में उसे जीवन की कठिन डगर पर कई तरह की परीक्षाओं से गुजरना पड़ता है लेकिन जो आत्म संतुष्टि सच्चे इंसान को मिलती है वह झूठे इंसान को नहीं मिल सकती क्योंकि सत्य ही आत्मा को संतुष्ट करता है। यदि स्वयं को संतुष्ट रखना है तो सत्य का दामन थामना होगा अन्यथा झूठ के साथ रहकर पछतावे के अलावा क्या हासिल होगा!

**आपकी आज गवाई हुई नींद,
आपको कल अच्छे से सोने का मौका
देगी !**

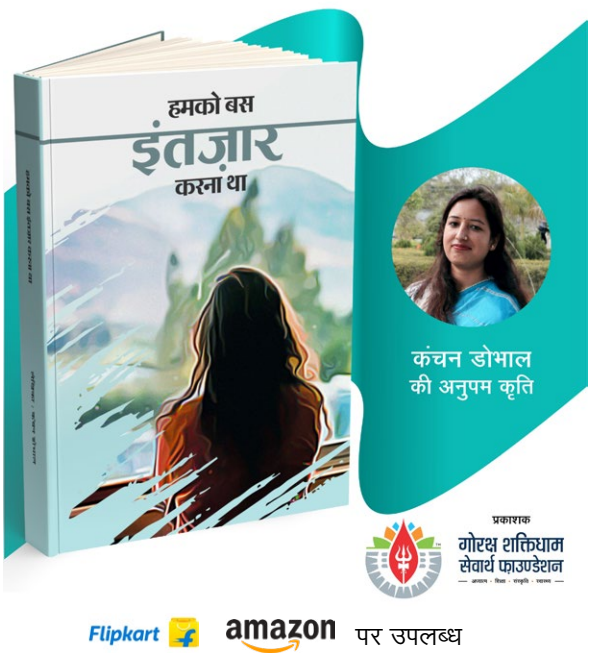

Flipkart amazon पर उपलब्ध

22 अप्रैल विशेष

अक्षय तृतीया शुभारंभ एवं मंगल का पर्व

सुमन लता शर्मा
सेवानिवृत्त सहायक प्रशासनिक अधिकारी
स्वतंत्र लेखन
गाजियाबाद (उ.प्र.)

शास्त्र कहते हैं कि, 'न क्षयः इति अक्षयः

अर्थात जिसका क्षय नहीं होता, वह अक्षय है।

अक्षय तृतीया अपने नाम के अनुरूप ही शुभ फल प्रदान करने वाली तिथि है। हिंदू धर्म की बेहद पावन तिथियों में एक है अक्षय तृतीया। यह हर साल वैशाख मास के शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि को मनाई जाती है। अक्षय तृतीया का दिन मांगलिक कार्यों के लिए अत्यंत शुभ माना जाता है। पौराणिक ग्रंथों के अनुसार इस दिन जो भी शुभ कार्य किए जाते हैं उनका अक्षय फल मिलता है। इसी कारण इसे अक्षय तृतीया कहा जाता है।

वैसे तो सभी 12 महीनों की शुक्ल पक्षीय तृतीया शुभ होती है किंतु वैशाख माह की तिथि स्वयंसिद्ध मुहूर्तो में मानी गई है। सनातन धर्म में अक्षय तृतीया का अत्यंत महत्व है। इस तिथि पर सारे मांगलिक कार्य जैसे विवाह, गृह प्रवेश, उद्योग का आरंभ करना अत्यंत शुभ फलदायी होता है। माना जाता है कि अक्षय तृतीया सौभाग्य और सफलता लाती है, इसी कारण इस दिन ज्यादातर लोग सोना चांदी खरीदते हैं। इस दिन सोना खरीदने से भविष्य में समृद्धि और अधिक धन आता है ऐसी मान्यता है।

अक्षय तृतीया माता लक्ष्मी की उपासना का पर्व है इस दिन परिवार की सुख समृद्धि के लिए देवी लक्ष्मी और भगवान विष्णु का पूजन किया जाता है। साथ ही इस दिन धन के देवता कुबेर को भी पूजा जाता है।

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार अक्षय तृतीया के दिन सूर्य मेष राशि में और चंद्रमा वृष राशि में होते हैं। यह बसंत और ग्रीष्म के संधि काल का महोत्सव है। इस तिथि में गंगा स्नान, पितरों का तिल व जल से तर्पण और पिंडदान पूर्ण विश्वास से किया जाता है जिसका फल भी अक्षय होता है। आज के दिन लोग जमकर दान पुण्य करते हैं। मान्यता है कि आज किए गए दान का

फल अक्षय होता है मतलब पुण्य का जो फल मिलता है वह किसी भी प्रकार नष्ट नहीं होता। इस तिथि की गणना युगादि तिथियों में होती है क्योंकि सतयुग का कल्पभेद से त्रेता युग का आरंभ इसी तिथि से हुआ है। अक्षय तिथि का पर्व मनाने से आध्यात्मिक ऊर्जा की प्राप्ति भी निश्चित होती है। अक्षय तृतीया के दिन शुभ और मांगलिक कार्य करना शुभ माना जाता है।

यह त्यौहार किसानों के लिए अत्यधिक खास व शुभ माना जाता है इस दिन किसान कृषि कार्य शुरू करते हैं ऐसा माना जाता है कि इस दिन कृषि शुरू करने से शुभता और समृद्धि की प्राप्ति होती है

अक्षय तृतीया को आखातीज के नाम से भी जाना जाता है। अक्षय का मतलब होता है जिसका कभी भी क्षय या नाश न होना। मान्यता है कि अक्षय तृतीया के दिन शुभ खरीदारी या शुभ कार्य करने पर हमेशा इसमें वृद्धि होती है। हिंदू परंपराओं में मान्यता है कि इस दिन किए गए कामों का कभी क्षय (हानि) नहीं होता वो हमेशा बने रहते हैं। इसे अबूझ मुहूर्त भी कहा जाता है। अबूझ मुहूर्त यानी इस दिन कोई भी काम ग्रह स्थिति और शुभ मुहूर्त देखकर नहीं किया जाता, पूरा दिन ही शुभ मुहूर्त माना गया है।

इसके पीछे कई मान्यताएं हैं यह तिथि भगवान परशुराम के जन्म से लेकर गंगा के धरती पर आने और कृष्ण सुदामा के मिलन तक से जुड़ी है। इसके अतिरिक्त कुछ और पौराणिक घटनाएं हैं जिनका अक्षय तृतीया पर घटित होना माना जाता है जैसे कि – त्रेता युग का प्रारंभ इसी तिथि को हुआ था। बद्रीनाथ जी के कपाट इसी तिथि को खुलते हैं। वृंदावन के बांके बिहारी जी के मंदिर में श्री विग्रह के चरणों के दर्शन होते हैं। अक्षय तृतीया के दिन से ही वेदव्यास और भगवान गणेश ने महाभारत ग्रंथ लिखना शुरू किया था। मां गंगा का धरती पर आगमन हुआ था। द्वापर युग का समापन इसी दिन हुआ था वही भगवान श्रीकृष्ण ने युधिष्ठिर से कहा था कि इस दिन किया गया कोई भी निर्माण या सांसारिक काम निश्चित शुभ होता है, इसलिए लोग इस दिन अपनी दुकानों या कारखानों का उद्घाटन करते हैं नए घर की नींव या भूमि पूजन भी किया जाता है। अक्षय तृतीया पूरे उत्तर भारत में हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, हरियाणा, राजस्थान, बिहार, झारखंड और मध्य प्रदेश में हर्षोल्लास के साथ मनाई जाती है।

अलग–अलग राज्यों में इस पर्व की विभिन्न मान्यताएं हैं जैसे –उड़ीसा में जगन्नाथपुरी से रथ यात्रा निकाली जाती है।

बंगाल में अक्षय तृतीया को व्यापार और निवेश से जोड़ कर मनाया जाता है। व्यापारी आज ही के दिन अपना नया लेखा–जोखा रखना शुरू करते हैं स्थानीय भाषा में इसे हलखाता कहते हैं।

पंजाब में इसे खेती से जोड़कर मनाया जाता है। घर का मुखिया ब्रह्म मुहूर्त में अपने खेत देखने जाता है।

जैन धर्म में अक्षय तृतीया को ही जैन धर्म के भगवान ऋषभदेव ने 'आहराचार्य' अर्थात जैन मुनियों तक भोजन पहुंचाने की शुरुआत की थी आज के दिन जैन समुदाय के लोग उपवास करते हैं और गन्ने के रस के सेवन से अपना व्रत खोलते हैं।

अक्षय तृतीया के दिन मांगलिक काम करना काफी शुभ माना जाता है। इसके अलावा इस दिन वाहन, प्रॉपर्टी तथा सोना खरीदना काफी शुभ माना जाता है। सोना खरीदने का अर्थ है कि आने वाला पूरा साल धन और सौभाग्य की प्राप्ति हो। मान्यता है कि आज के दिन जहां भी निवेश किया जाता है वह अत्यधिक शुभ फलदायी होता है।

पुराणों के अनुसार अक्षय तृतीया के दिन, अक्षत, पुष्प, दीप आदि द्वारा भगवान विष्णु की आराधना करने से विष्णु भगवान की विशेष कृपा प्राप्त होती है तथा संतान भी अक्षय बनी रहती है।

दीन दुखियों की सेवा करना वस्त्र आदि का दान करना और शुभ कर्म की ओर अग्रसर रहते हुए मन वचन व अपने कर्म से मनुष्य धर्म का पालन करना ही अक्षय तृतीया पर्व की सार्थकता है। दुर्भाग्य को सौभाग्य में परिवर्तित करने के लिए यह दिवस सर्वश्रेष्ठ है।

अक्षय तृतीया के विषय में कहा गया है कि इस दिन किया गया दान खर्च नहीं होता है यानी आप जितना दान करते हैं उससे कई गुणा आपके अलौकिक कोष में जमा हो जाता है।

इस साल अक्षय तृतीया पर 6 योगों के निर्माण से महा योग बन रहा है जिससे यह दिन और भी शुभ हो जाता है। अक्षय तृतीया पर बन रहे हैं यह 6 महायोग :

आयुष्मान योग, सौभाग्य योग, त्रिपुष्कर योग, रवि योग, सेवार्थ सिद्धि योग, और अमृत सिद्धि योग।

अक्षय तृतीया 2023 शुभ मुहूर्त

हिंदू पंचांग के अनुसार :

22 अप्रैल शनिवार सुबह 7:00 बज कर 49 मिनट से दोपहर 12:00 बज कर 20 मिनट तक।

न माधव समो मासो न कृतेन युगं समम।
न च वेद समं शात्रं न तीर्थ गंगयां समम्।।

वैशाख के समान कोई मास नहीं, सत्ययुग के समान कोई युग नहीं है, वेद के समान कोई शास्त्र नहीं है और गंगा जी के समान कोई तीर्थ नहीं है, उसी तरह अक्षय तृतीया के समान कोई तिथि नहीं है।।

मृत्यु भोज कितना सही कितना गलत ?

मधुबाला शांडिल्य
शिक्षिका, लेखिका
झारखंड

समाज में किसी की मृत्यु हो जाने पर मृत्यु भोज का प्रचलन सदियों से चला आ रहा है। क्या किसी ने सोचा है कि इस मृत्यु भोज की आखिर क्यों और कितनी आवश्यकता है? इसके पीछे का छुपा रहस्य क्या है? आइए आज इसके कुछ पहलुओं पर ध्यान देते हैं। जानने की कोशिश करते हैं कि ये कहां तक सही है?

समाज में मृत्यु भोज का मुख्य उद्देश्य घर की शुद्धिकरण से संबंधित है। जहां मृत्यु के पश्चात कर्मकांड के पूर्ण होने पर कुछ ब्राह्मणों अथवा इच्छानुसार ब्राह्मणों और कुल पुरोहितों को भोजन करवाकर घर का शुद्धिकरण किया जाता है। इसमें समाजिक रुप से कोई दवाब नहीं होता कि आपको पुरे गांव को भोजन करवाना अनिवार्य है।आप अपने सगे–संबंधियों को अपने इच्छानुसार और अपने आर्थिक स्थिति को ध्यान में रखते हुए भोज का न्योता दिया जाता है।

लेकिन आज की स्थिति और परिस्थिति कुछ और ही बयां करती है। आज मृत्यु पश्चात कर्मकांड से लेकर मृत्यु भोज तक का समय जातक के माथे पर बोझ स्वरुप प्रतित होता है। आज हर जगह बस पैसे और दिखावे का खेल है। कर्मकांड के समय ब्राह्मणों का लोभ खुलकर दिखाई देता है वहीं दूसरी ओर मृत्यु भोज पर सगे–संबंधियों से लेकर समाज तक का जबरन दवाब दिखता नजर आता है।

किसी को इस बात से रत्ती भर भी फर्क नहीं पड़ता है कि आखिर जातक की आर्थिक स्थिति कैसी है? उनके आपसी विचार क्या है? उनकी मानसिक स्थिति क्या है? जातक की मानसिक स्थिति और रजामंदी से पंडित, पुरोहित, सगे–संबंधियों और समाज को कोई लेना–देना नहीं होता है।हर एक को बस अपनी अपनी पड़ी होती है। देखकर ऐसा प्रतीत होता है जैसे ये किसी की मृत्यु का मातम नहीं अपितु किसी की मृत्यु पश्चात खुशी की लहर उमड़ पड़ी हो। ये बात सुनने में कड़वा जरुर है मगर आज की वर्तमान स्थिति को भलीभांति परिभाषित करती है। लोग किसी की मृत्यु पर मातम मनाने से ज्यादा मृत्यु भोज पर जश्न मनाते नजर आते हैं। जो कि अपने आप में बड़े ही शर्म की बात है। कहीं ना कहीं इसमें मानवता और सामाजिकता शर्मशार होती नजर आती है। पैसे वालों के लिए तो ये जश्न का माहोल जरुर बनाता है लेकिन गरीबों के लिए ये अपने आप में अभिशाप स्वरुप प्रतित होता है।

नोट : – ये लेखिका के व्यक्तिगत विचार हैं।

मासिक
अध्यात्म संदेश
जनकल्याण एवं राष्ट्रोत्थान को समर्पित धर्म, संस्कृति, अध्यात्म चिंतन का मासिक ई–पत्र
editor.adhyatmsandesh@gmail.com
m.facebook.com/अध्यात्म संदेश
गोरक्ष शक्तिधाम सेवार्थ फ़ाउण्डेशन
www.gssfoundation.org

शिक्षण एवं प्रशिक्षण की व्यवहारिकता

मन की जिज्ञासा और बुद्धि के निर्णयन का मूलभूत स्रोत

डॉ. अजय शुक्ला
गोल्ड मेडलिस्ट इंटरनेशनल ह्यूमन राइट्स मिलेनियम अवार्ड
डायरेक्टर, स्प्रीचुअल रिसर्च स्टडी एंड एजुकेशनल ट्रेनिंग सेंटर
देवास, मध्य प्रदेश

उत्कृष्ट अनुभूति: जीवन में आत्मसम्मान के प्रति व्यावहारिक निष्ठा शैक्षणिक परिदृश्य के माध्यम से सदा सकारात्मक बनी रहती है। शिक्षा का बोध मनुष्यता के भाव को अनुभूति के स्तर तक पहुँचाने में अपनी प्रभावशाली भूमिका निभाया करता है। ज्ञान के उच्चतम् शिखर पर शिक्षा के द्वारा स्थापित हुआ जा सकता है तथा दक्षता हासिल करने हेतु प्रशिक्षण के योगदान को आज भी महत्वपूर्ण तकनीक के रूप में स्वीकार किया जाता है। मन और बुद्धि की एकाग्रता से कर्मगत् गतिशीलता को सुनिश्चित करते हुए व्यवहार कुशलता का निर्धारण करना सहज हो जाता है। व्यक्तिगत् रूप से स्वयं का सम्मान करने के साथ–साथ दूसरों के सम्मान को बनाये रखने का प्रयास करना शैक्षणिक जगत् की विशिष्ट उपलब्धि होती है। मन की जिज्ञासा के अनुसार ज्ञानार्जन की प्रक्रिया से गुजरना और उसके भीतर एक गहरी पैठ जमा लेना वास्तविक रूप से उत्कृष्ट अनुभूति का द्योतक होता है। सबल मनःस्थिति का निर्माण जब एक बार व्यवस्थित रूप से हो जाता है तब किसी भी परिस्थिति में सफल हो जाने की मूलभूत अवधारणा पूर्व में ही निर्मित हो जाती है। विभिन्न मामलों के अन्तर्गत् यह भी देखने में आता है कि बहुत कुछ अच्छा सोचने एवं समझने के बावजूद भी कई बार व्यक्ति सही निर्णय नहीं ले पाता है। सामान्यतः बुद्धि की निर्णयन क्षमता पर प्रश्नचिन्ह लगा दिये जाते हैं और तर्क दिया जाता है कि विरोधाभासी स्थिति में उच्च कोटि की चिन्तन–शक्ति एवं मन की एकाग्रता के अभाव के कारण यह विपरीत स्थिति बन गयी है। विभिन्न प्रकार के वातावरण की उपस्थिति और उससे जुड़े पहलू इस बात को प्रमाणित करते हैं कि मन की जिज्ञासा तथा बुद्धि के निर्णयन का आधारभूत स्रोत शिक्षण एवं प्रशिक्षण ही होता है। जब व्यक्ति कर्म क्षेत्र की सत्ता में स्वयं को संबद्ध करता है तब इस व्यावहारिकता को सफल बनाने के लिए शैक्षणिक जगत् के विविध पाठ और सबक से ग्रहण की गयी प्रेरणा ही कारगर सिद्ध होती है। जीवन की मौलिकता का सृजनात्मक पक्ष सदैव इस बात की पैरवी करता रहता है, जिसमें अन्तर्मन की संतुष्टि को स्वयं के संदर्भ में शिक्षण एवं प्रशिक्षण के अनुभव से प्राप्त होने की पुष्टि की जाती है। व्यक्ति के गरिमामयी स्वरूप में सर्वांगीण विकास की संरचना को उत्कृष्ट अनुभूति का पर्याय मानने के पीछे शैक्षणिक स्तर की व्यापकता अपने मूलभूत आधार को महत्व प्रदान करती है।

जिज्ञासापूर्ण मनःस्थिति: शिक्षण एवं प्रशिक्षण की गहन अनुभूतियों का लाभ जीवन के परिमार्जन हेतु तभी प्राप्त किया जा सकता है जब व्यक्तिगत् स्तर पर जिज्ञासु प्रवृत्ति का

निर्माण कर लिया जाए। वर्तमान परिदृश्य का अवलोकन करने पर यह ज्ञात हो जाता है कि शिक्षा के प्रति झुकाव प्रायः सभी व्यक्तियों का होता है लेकिन ज्ञानार्जन के लिए जिज्ञासापूर्ण मनःस्थिति, कम ही लोगों की बन पाती है। सैद्धान्तिक तौर पर जानने एवं समझने की क्रियाविधि से गुजरते हुए यह पता चल जाता है कि व्यक्ति केवल बाह्य जानकारी प्राप्त करने के पश्चात् किस स्तर तक संतुष्ट हो सका है। ज्ञान की व्यावहारिकता तक पहुँचने के लिए अन्तःकरण की वास्तविक तैयारी आवश्यक होती है जो विषयगत् गहरायी के प्रति अपनी अलग सोच रखती है। अध्ययनशीलता के विभिन्न पहलुओं पर गौर किया जाए तो यह ज्ञात हो जाता है कि व्यक्तिगत् अभिरूचियों के अन्तर्गत् किस प्रकार के प्रयास किये गये हैं। अन्तर्मन की जिज्ञासा जब अपने चरम पर पहुँचती है तब वह इस बात की परवाह नहीं करती कि वस्तुनिष्ट से विषयनिष्ट के बीच किस समय दूरियाँ समाप्त हो गयीं। व्यक्तिगत् जीवन की बोध गम्यता से निर्धारित होती जिज्ञासाएँ सामान्यतः अपनी प्रवृत्तिगत् अभिलाषाओं को क्षणिक तृप्ति के भाव से नहीं देखती हैं बल्कि पूर्ण संतुष्टि के व्यवहार को अपनाने पर बल दिया करती हैं। प्रायः व्यक्ति एकाँगी परिवेश को समझने के लिए लघुउत्तरीय व्यवस्था का अनुपालन करता है जबकि वातावरण की गंभीरता उस प्रसंग को विस्तृत परिदृश्य के संदर्भ में वर्णनात्मक तरीके से समझाना चाहती हैं। जिज्ञासापूर्ण मनःस्थिति की व्यापकता का आँकलन करना सामान्य रूप से संभव नहीं होता है, क्योंकि सीखने की प्रवृत्ति केवल विवेचनात्मक प्रस्तुतीकरण के आभामंडल से आच्छादित होने के लिए तैयार नहीं होती है। व्यक्ति के भीतर जानने की उत्सुकता को जब बल मिला होगा तब समझने एवं समझाने की क्रियाविधियों को आत्मसात् किया गया और अन्ततः धीरे-धीरे यह प्रक्रिया सीखने और सिखाने की गतिविधियों में परिवर्तित हो गयी। शैक्षणिक जगत् की व्यापकता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि अनुसंधान की कई विधाएँ अपनी सम्पूर्ण इच्छा शक्ति के साथ सृजन हेतु संलग्न हैं और नित-नूतन प्रायोगिक अनुभव एवं परिणाम के साथ पुनः एक नई खोज के लिए समाज को अभिप्रेरणा प्रदान कर रही हैं। मानव की कल्पनाशील जिज्ञासु प्रवृत्ति का व्यावहारिक स्वरूप अनगिनत विषय-वस्तु और उसके विभिन्न परिप्रेक्ष्य को अपने नजरिये से अनुभव करने एवं कराने का अनवरत् प्रयास करता रहता है जिसे कभी भी सीमाँकित नहीं किया जा सकता है। वर्तमान परिदृश्य में जिज्ञासापूर्ण मनःस्थिति से प्राप्त होने वाली प्रवृत्तियों को भले ही उपयोगिता एवं संतुष्टि के अनुकूल देखने का प्रयास किया जाए परन्तु खोजपूर्ण मनोवृत्तियाँ जब तक असंतोष और प्रतिकूलताओं को उत्पन्न नहीं करेगीं तब तक भविष्य में अनुसंधान की नवीन संभावनाओं पर कार्य करना संभव नहीं हो सकेगा।

निर्णयात्मक बुद्धिमता : स्वयं के प्रति संतोष का भाव सामान्य दृष्टि के अन्तर्गत् परिलक्षित होना सही निर्णयन की वास्तविक पहचान होती है। किसी व्यक्तिगत् स्थिति का मूल्याँकन जब यह बताने में सक्षम होता है कि जीवन की क्रियाविधियों से जुड़ाव आनंद का पर्याय बन गया है तब निर्णयात्मक बुद्धिमता को आभार देना स्वाभाविक हो जाता है। जीवन में मनोकामनाओं की समयानुसार प्राप्ति होती रहे और मनोभावों को किसी परिस्थिति में कभी अटकाव की महसूसता नहीं हो इसके लिए शैक्षणिक व्यापकता की अनुभूति आवश्यक है। शिक्षा के आभाव से कई बार निर्णयन की स्थिति अपने उपयुक्त स्वरूप को ग्रहण नहीं कर पाती है जिसके परिणाम प्रायः उलझनपूर्ण स्थितियों को निर्मित कर दिया करते हैं। किसी परिस्थितिगत् वातावरण से जूझते हुए बाहर निकल जाना आन्तरिक शक्ति का परिचायक होता है तथा इसकी मूलभूत जड़ ज्ञान ही है जहाँ से बुद्धि को निर्णयन क्षमता का बल प्राप्त होता है। व्यावहारिक जगत् में सकारात्मक एवं नकारात्मक निर्णय उतना मुश्किल नहीं होता जितना कि व्यक्ति के लिए अनिर्णय की स्थिति होती है जिसके अन्तर्गत् उसे कुछ भी सूझता ही नहीं है। सात्विकता से ओत-प्रोत वैचारिकता का भाव तथा क्रिया पक्ष में सच्चे मन की शाँति का निर्माण और इससे जुड़ी उपयुक्त निर्णयात्मक बुद्धिमता की परिणिति का व्यावहारिक अनुभव सही शिक्षा एवं प्रशिक्षण का प्रमाण होता है। स्वयं के विकास हेतु सही समय पर निर्णयन की क्षमता का उपयोग कर लेना व्यक्तिगत् गतिशीलता के लिए अनिवार्य होता है अन्यथा पिछड़ जाने की पीड़ा और भय अन्तर्मन को हीन भावना से ग्रस्त कर दिया करते हैं। ज्ञान का व्यावहारिक अनुभव समग्रता से जीवन में प्रविष्ठ हो जाए इसके लिए अध्ययनशीलता के साथ-साथ मनन चिन्तन की प्रक्रिया को नियमित रूप से अपनाने की आवश्यकता होती है। व्यक्ति को मानसिक रूप से सबल बनाने की क्रियाविधि में ज्ञानार्जन के विविध आयाम अपनी प्रभावी भूमिका निभाया करते हैं परन्तु बौद्धिक सक्षमता की स्थिति ज्ञान एवं तत्व मीमांसा तक सीमित नहीं रहनी चाहिए। ज्ञान की किसी भी विधा का विधिवत् उपयोग तभी संभव हो सकेगा जब उसके विकासात्मक स्वरूप को चेतना के स्तर पर गतिशील बनाये रखने के निरन्तर प्रयास होते रहेंगे। सम्पूर्ण विकास को प्रवाहमान बनाये रखने हेतु व्यावहारिक तौर पर शिक्षण एवं प्रशिक्षण की उपयोगिता को सिद्ध करना होगा जिससे मानवीय संवेदनाओं को आहत होने से बचाया जा सके। व्यक्ति के भीतर सीखने की चाहत उसे ज्ञान की पराकाष्ठा तक पहुँचाने में सहायक होती है लेकिन जीवन की कसौटी पर खरा उतरने के लिए ज्ञान का प्रयोग और विकास, अनुभव के आधार पर निर्णयात्मक बुद्धिमता को सक्षम बनाने हेतु नियमित रूप से किया जाना चाहिए।

कर्मगत् उपादेयता : मानवीय प्रवृत्ति के अन्तर्गत् कर्मक्षेत्र के प्रति समर्पण का भाव जागृत करने में शिक्षण एवं प्रशिक्षण का महत्वपूर्ण योगदान होता है। सामान्य रूप से ज्ञान के सैद्धान्तिक भाग को अधिक महत्व देते हुए इसके अध्ययन पर बल दिया जाता है परन्तु व्यावहारिक कसौटी की माँग पर खरा उतरने के लिए प्रशिक्षण को आत्मसात कर कार्य संपादन की दिशा में उपयुक्त कदम बढ़ाने की स्थिति अब समाज में स्वीकार की जाने लगी है। किसी भी कार्य को करने से पूर्व उसके विभिन्न पक्षों की जानकारी और तकनीकी प्रक्रिया का व्यावहारिक अनुभव, जिज्ञासा एवं निर्णयन के मध्य एक कुशल सामन्जस्य उत्पन्न कर देता है, जिससे कर्मगत् उपादेयता सुनिश्चित हो जाती है। कर्म के प्रति निष्ठा को बनाये रखने के लिए भारतीय दर्शन ने फल की इच्छा न करते हुए कर्म करने की सलाह प्रदान की है जबकि प्रबन्ध

ाकीय अवधारणा परिणाम की निश्चितता को ध्यान में रखते हुए कर्म की गुणवत्ता को नवीनतम् तकनीक के द्वारा पूर्ण करने के लिए प्रेरित करती है। ज्ञानार्जन के प्रति आन्तरिक श्रद्धा केवल विषय–वस्तु की समझ विकसित करने में मार्गदर्शन नहीं देती बल्कि कार्यशैली के निर्माण हेतु विधिवत् परामर्श भी प्रदान करती हैं जिससे कर्मक्षेत्र की उलझनों को सुलझाया जा सके। व्यक्तिगत् जीवन में स्वयं को स्थापित करते हुए अस्तित्व का निर्माण करने की आन्तरिक शक्ति एवं सतत् प्रेरणा का स्थायी आधार शैक्षणिक सत्ता के भीतर विद्यमान रहता है। शिक्षा के द्वारा विचारगत् प्रवाह की स्थिति से व्यक्ति को कर्मक्षेत्र के अन्तर्गत् अग्रसर होने के लिए नवीन संभावनाओं की तलाश जारी रखने में मदद् प्राप्त होती रहती है। सामाजिक जीवन में विभिन्न परिवेश से जुड़ी चुनौतियाँ, कार्यसिद्धि और क्षमता निर्माण के लिए उपयुक्त वातावरण बनाती हैं जिससे परिणाम की निश्चितता संभव हो सके। शिक्षण एवं प्रशिक्षण के सोपान जहाँ व्यक्तिगत् जीवन को निखारने में सक्षम होते हैं वहीं संस्थागत् विकास हेतु कार्य संस्कृति निर्मित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। किसी भी विरोधाभासी स्थिति के उत्पन्न होने पर कर्मक्षेत्र के अन्तर्गत् शैक्षणिक परिवेश की व्यापकता से व्यक्तिगत् जीवन में न केवल आशा का संचार होता है अपितु स्वयं की पुर्नस्थापना का मार्ग भी प्रशस्त हो जाता है। शिक्षित एवं प्रशिक्षित मानव शक्ति, स्वयं से साक्षात्कार करने के साथ अपनी पहचान बनाने हेतु परिवर्तन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोंण अपनाने पर बल दिया करती हैं जिससे कर्मगत् उपादेयता गुणात्मक स्वरूप में परिलक्षित हो सके। जीवन में श्रेष्ठ स्थितियों की प्रधानता का बोध चिन्तन से लेकर कर्मगत् व्यवहार तक बना रहे इसके लिए शैक्षणिक परिवेश की गतिशीलता का निर्बाध सहयोग होना चाहिए। व्यक्तिगत् स्तर पर कर्मशील मानसिकता का निर्वहन इस बात का प्रमाण होता है जिसमें शिक्षण एवं प्रशिक्षण की अनुभूतिगत् व्यावहारिकता अपने कर्त्तव्यों और दायित्वों को निःस्वार्थ भाव से निभाने में निपुण होती हैं।

मूलभूल आधारः विकास के समस्त आधुनिक परिदृश्य और उससे जुड़ी गतिविधियों का व्यावहारिक आँकलन करने पर यह ज्ञात हो जाता है कि इसके मूल स्वरूप में शैक्षणिक व्यापकता की पृष्ठभूमि कार्यरत होती है। सामाजिक विषयों में गुणात्मक अनुसंधान एवं वैज्ञानिक क्षेत्रों में नवीनतम् अविष्कार इस बात का प्रमाण हैं कि शिक्षा की गहन अनुभूतियों के प्रति आधारभूत आस्था का निर्माण किया गया है। व्यक्तिगत् जीवन की गतिशीलता का आधार चिन्तन प्रक्रिया का अनुपालन होता है जिसकी प्रेरणा का मूलभूत स्रोत शिक्षण एवं प्रशिक्षण की व्यावहारिकता होती है। ज्ञान के गूढ़ रहस्यों से जीवंत सम्बन्ध बनाने की निजी उत्कण्ठा का परिणाम यह होता है कि व्यक्ति सुखद अनुभवों के एहसास से भर उठता है। आज के विकासात्मक युग में मनुष्य की जिज्ञासु प्रवृत्ति का सर्वाधिक उपयोग उस समय हो पाता है जब वह मनःस्थिति के अनुकूल कुछ विशिष्ट जानने का प्रयास करता है। जीवन में अतीत के अनुभवों को वर्तमान परिस्थितियों से मुकाबला करने हेतु स्वीकार कर लेना सशक्त मानवीय क्षमता की परिणिति होती है। भौतिकता से ओत–प्रोत सामाजिक जीवन की महत्वाकाँक्षा के मध्य सही मार्ग का चयन करना कुशल बौद्धिक निर्णयन का अनुपम उदाहरण होता है जिसकी व्यावहारिक समझ शैक्षणिक स्वरूप के माध्यम से संभव हो पाती है। मानवीय स्वभाव की नैसर्गिक मनोवृत्तियों के अन्तर्गत् सिद्धान्त एवं व्यवहार का तुलनात्मक अध्ययन सामान्यतः कर्मगत् उपादेयता पर अपनी मुहर लगाने में विश्वास व्यक्त करता है। जीवन के विविध स्वरूप की परिकल्पना और उसका परीक्षण निश्चित ही सामाजिक अवधारणा के संदर्भ को रेखांकित करता है जिसमें शिक्षा के द्वारा गुणात्मक विकास की संभावना सुनिश्चित की जा सकती है। शैक्षणिक जगत् की शक्ति से व्यक्तिगत् जीवन की साधारण स्थिति न केवल विशिष्ट स्वरूप में परिवर्तित होती है बल्कि अद्भुत से गुजरते हुए अतुलनीय एवं उत्कृष्टता तक पहुँच जाती है। मानव जाति के विकासात्मक पक्ष जहाँ सामाजिक उत्थान को प्रतिपादित करने की निरन्तर कोशिश करते हैं वहीं शिक्षा और प्रशिक्षण के द्वारा पुण्यों की पहल को व्यावहारिक बनाने का वीणा उठाया जाता है। शैक्षणिक परिवेश को मन की समस्त जिज्ञासाओं का केन्द्र बिन्दु स्वीकार करते हुए बौद्धिक निर्णयन का मूलभूत आधार समझकर व्यावहारिक जगत् में प्रवेश किया जाए तो एक बड़े स्तर तक विरोधाभास एवं अपवादजनक स्थिति से सुरक्षित रहा जा सकता है। सामाजिक जीवन में एक अनुत्तरित प्रश्न, अध्ययन की विभिन्न विधाओं के अन्तर्गत् मनोवैज्ञानिकों के लिए चुनौती बना हुआ है जिसमें यह तर्क देने का प्रयास किया जाता है कि नकारात्मक स्थितियों को उत्पन्न करने में शिक्षित व्यक्तियों का योगदान अनपढ़ लोगों की अपेक्षा अधिक रहता है। सामान्य दृष्टिकोंण से अध्ययन करने के पश्चात् सामाजिक संतुष्टि को बनाये रखने के लिए प्रायः यह व्यक्त कर दिया जाता है कि शिक्षा के कारण अधिक समझ से वृहद पैमाने पर नकारात्मक स्थिति की समस्या तथा अशिक्षा से कम समझ के कारण लघु स्तर की विषमता उत्पन्न होती रहती है। शैक्षणिक पृष्ठभूमि की गरिमामयी उपस्थिति के माध्यम से मनःस्थिति के भाव पक्ष को जागृत अवस्था में रखकर पश्चाताप् की बजाये परिवर्तनकारी बौद्धिक निर्णयन क्षमता के प्रति अपनी आस्था निर्मित करते हुए विरोधाभासी स्थितियों से मुक्त हुआ जा सकता है। इस प्रकार जीवन में उत्कृष्ट अनुभूति से श्रेष्ठ कार्य संपादन का व्यावहारिक बोध सम्पूर्ण मानव जाति को उसकी नकारात्मक स्थितियों से बाहर निकालकर, सकारात्मक सद्गुणों से सम्बन्ध स्थापित करने में सक्षम होता है जिसका श्रेय शिक्षण एवं प्रशिक्षण की व्यावहारिकता को जाता है।

जो चीज आपको चौलेंज करती है,
वही आपको चेंज कर सकती है !

क्या है भारतीय संस्कृति में 16 संस्कार ?

....गतांक से आगे

पंडित कैलाशनारायण
ज्योतिषाचार्य
उज्जैन, मध्य प्रदेश

3. सीमन्तोन्नयनय – सीमन्तोन्नयन को सीमन्तकरण अथवा सीमन्त संस्कार भी कहते हैं। सीमन्तोन्नयन का अभिप्राय है सौभाग्य संपन्न होना। गर्भपात रोकने के साथ–साथ गर्भस्थ शिशु एवं उसकी माता की रक्षा करना भी इस संस्कार का मुख्य उद्देश्य है। इस संस्कार के माध्यम से गर्भिणी स्त्री का मन प्रसन्न रखने के लिये सौभाग्यवती स्त्रियां गर्भवती की मांग भरती हैं। यह संस्कार गर्भ धारण के छठे अथवा आठवें महीने में होता है।

4.जातकर्मय – ▸ जब महिला को दर्द शुरू होता है ,तब दीवाल पर उससे एक तेल का हाथ लगवा देते हैं और सवा किलो गेहूं नीचे रख कर उसके दो भाग करा देते है और अपने पितरों को भी याद करके प्रार्थना करते है ।बच्चा के जन्म लेते ही घड़ी देखते है फिर घर के बुजुर्ग व्यक्ति से एक गुड का गोला बना कर घी लगाकर पिंड दान के नाम पर गेहूं के पास रख देते हैं। ऐसा करने से हमारी तीन पीढ़ी के पितर तृप्त हो कर स्वर्ग चले जाते है और उसके बाद बच्चे का नाल काटते है।नवजात शिशु के नालच्छेदन से पूर्व इस संस्कार को करने का विधान है। इस दैवी जगत् से प्रत्यक्ष सम्पर्क में आनेवाले बालक को मेधा, बल एवं दीर्घायु के लिये स्वर्ण खण्ड से मधु एवं घृत गुरु मंत्र के उच्चारण के साथ चटाया जाता है। दो बूंद घी तथा छह बूंद शहद का सम्मिश्रण अभिमंत्रित कर चटाने के बाद पिता बालक के बुद्धिमान, बलवान, स्वस्थ एवं दीर्घजीवी होने की प्रार्थना करता है। इसके बाद माता बालक को स्तनपान कराती है। इसके बाद सूतक माना जाता है जो पाँच दिन का होता है।

▸ छठी संस्कार : लड़की की छठी पांच दिन में और लड़का की छठी छः दिन में करते है। इस दिन जच्चा बच्चा स्नान करते है और इस सफाई के बाद सूतक समाप्त हो जाती है। इसके बाद शाम को जहाँ तेल का हाथ लगाया था वहां पर आटे का चौक बना कर गेहूं के ऊपर तेल का दीपक जलावें और बच्चे को गोद में लेकर चौकी पर जच्चा बैठ जावे। घर की बुजुर्ग महिला अपने कुल देवता और छठी माता की पूजा करते हैं।बच्चे को दीपक का उजाला नही दिखाते हैं। फिर मूंग दाल, 6 रोटी, 6 बड़ा, 6 पुड़ी, 6 पकौड़ी, कड़ी, चावल , खीर, पुआ आदि एक थाली में रख कर कुल देवता को भोग लगाते है और नन्द भाभी एक ही थाली में खाते है।

5. नामकरण संस्कारय – ▸ यह संस्कार बच्चे के पैदा होने के 10 दिन बाद किसी शुभ मुहुर्त पर किया जाता है। जन्म के 10 वें दिन में 100 वें दिन में या

1 वर्ष के अंदर जातक का नामकरण संस्कार कर देना चाहिए।नामकरण–संस्कार के संबंध में स्मृति–संग्रह में निम्नलिखित श्लोक उक्त है– ऐसा माना जाता है कि शिशु के नाम प्रभाव उसके व्यक्तित्व व आचार–व्यवहार पर पड़ता है। अच्छा नाम उसे गुणकारी व

संस्कारी इंसान बनने के लिए प्रेरित करता है। इसलिए, नाम हमेशा अर्थपूर्ण होना चाहिए। साथ ही नामकरण संस्कार के दिन शिशु को नई पहचान मिलती है, जिससे उसे जीवन भर पहचाना जाता है। यही कारण है कि हिंदू धर्म में नामकरण संस्कार का अपना महत्व है।नामकरण संस्कार के समय शिशु कन्या है या पुत्र, इसके भेदभाव को स्थान नहीं देना चाहिए। भारतीय संस्कृति में शीलवती कन्या को दस पुत्रों के बराबर कहा गया है। इसके विपरीत पुत्र भी कुल धर्म को नष्ट करने वाला हो सकता है। इसलिए पुत्र या कन्या जो भी हो, उसके भीतर के अवांछनीय संस्कारों का निवारण करके श्रेष्ठतम की दिशा में प्रवाह पैदा करने की दृष्टि से नामकरण संस्कार कराया जाना चाहिए।

▸ नामकरण संस्कार से आयु एवं तेज में वृद्धि होती है। नाम की प्रसिद्धि से व्यक्ति का लौकिक व्यवहार में एक अलग अस्तित्व उभरता है। मंदिर को नामकरण संस्कार के लिए शुभ और शुद्ध स्थान माना जाता है, लेकिन अगर आप इसे घर में करते हैं, तो पहले घर की अच्छी तरह साफ–सफाई जरूर करें। शिशु तथा माता को भी स्नान कराके नये स्वच्छ वस्त्र पहनाये जाते हैं। यदि दसवें दिन किसी कारण नामकरण संस्कार न किया जा सके। तो अन्य किसी दिन, बाद में भी उसे सम्पन्न करा लेना चाहिए। घर पर, प्रज्ञा संस्थानों अथवा यज्ञ स्थलों पर भी यह संस्कार कराया जाना उचित है। बच्चे का नाम उसके आने वाले जीवन पर काफी प्रभाव डालता है। काफी हद तक नाम के अनुसार ही बच्चे का स्वभाव तय होता है। हिंदू धर्म में माना जाता है कि अगर शिशु का नाम उसके कुंडली के अनुसार न रखा जाए, तो उससे शिशु को भविष्य में कई परेशानियां का सामना करना पड़ता है। इसलिए, माता–पिता अपने बच्चे का नाम बड़े ही ध्यान से रखते हैं। आमतौर पर नाम रखते समय पांच प्रकार के सिद्धांतों का पालन किया जाता है, जो इस प्रकार हैं– नक्षत्रनामा (ग्रहों की दशा के अनुसार), देवतानामा (परिवार के ईष्ट देव पर), मासनामा (महीने के आधार पर), संस्कारीकामा (सांसारिक नाम) व राशिनामा (राशि के आधार पर)। भारतीय परंपरा में बच्चे के जन्म पर उस समय और दिन के हिसाब से, सौर्यमंडल की स्थिति को देखकर नामकरण किया जाता है।

▸ आप जो भी ध्वनि उत्पन्न करते हैं और उस ध्वनि के संकेत के रूप में जिस आकृति का इस्तेमाल करते हैं, उन दोनों का आपस में संबंध होता है और इन्हें ही मंत्र कहा जाता है। संस्कृत की वर्णमाला इस ब्रह्मांड की एक खास समझ से पैदा हुई है। मंत्र का मतलब एक ऐसी ध्वनि है जो पवित्र है और यंत्र का मतलब एक ऐसी आकृति है जो उस ध्वनि से संबंधित है। किसी भी ध्वनि के साथ एक आकृति भी जुड़ी होती है। इसी तरह हर आकृति के साथ एक खास ध्वनि जुड़ी होती है। लोगों के जीवन को बदलने के लिए आपको सही आवृति की ध्वनि पैदा करनी होगी।यह एक बेहद सूक्ष्म पहलू है कि जैसे ही आप कोई शब्द कहें तो वह आपके आसपास का सारा वातावरण ही बदल दे।जब एक बच्चे का जन्म होता है तो उस दिन और समय के हिसाब से लोग सौरमंडल की ज्यामितीय स्थिति का आकलन करते हैं और इसके आधार पर एक ऐसी खास ध्वनि तय करते हैं जो नवजात बच्चे के लिए सर्वश्रेष्ठ हो।

▸ नाम सिर्फ अक्षर ही नहीं है बल्कि यह सौभाग्य, अच्छी सेहत, पैसा आदि की कुंजी है। अंकज्योतिष में भी नाम को बहुत अहमियत दी गई है। ज्योतिष विज्ञान में नाम का पहला अक्षर बहुत महत्व रखता है। दो तरह के नाम रखने का विधान है। एक गुप्त नाम जिसे सिर्फ जातक के माता पिता जानते हों तथा दूसरा प्रचलित नाम जो लोक व्यवहार में उपयोग में लाया जाये। नाम गुप्त रखने का कारण जातक को मारक, उच्चाटन आदि तांत्रिक क्रियाओं से बचाना है। प्रचलित नाम पर इन सभी क्रियाओं का असर नहीं होता.. विफल हो जाती हैं।गुप्त नाम बालक के जन्म के समय ग्रहों की खगोलीय स्थिति के अनुसार नक्षत्र राशि का विवेचन कर के रख जाता है। इसे राशि नाम भी कहा जाता है। बालक की ग्रह दशा भविष्य फल आदि इसी नाम से देखे जाते हैं। नामकरण संस्कार के लिए अनुराधा, पुनर्वसु, माघ, उत्तरा, उत्तराषाढा, उत्तरभाद्र, शतभिषा, स्वाती, धनिष्ठा, श्रवण,

रोहिणी, अश्विनी, मृगशिर, रेवती, हस्त और और पुश्य नक्षत्रों को सबसे उत्तम माना जाता है। ज्योतिष के अनुसार, नामकरण संस्कार के लिए चंद्र दिवस के चौथे दिन, छठे दिन, आंठवें दिन, नौवें दिन, बारहवें दिन और चौदहवें दिन की तिथि उत्तम मानी जाती है। पूर्णिमा और अमावस्या तिथि पे नामकरण संस्कार बिल्कुल नहीं करना चाहिए।

▸ विशेष व्यवस्था...

- नामकरण संस्कार के लिए विशेष रूप से इन व्यवस्थाओं पर ध्यान देना चाहिए। अभिषेक के लिए कलश–पल्लव युक्त हो तथा कलश के कण्ठ में कलावा बाँध हो, रोली से स्वस्तिक आदि शुभ चिह्न बने हों।

- शिशु की कमर में बाँधने के लिए मेखला सूती या रेशमी धागे की बनी होती है। न हो, तो कलावा के सूत्र की बना लेनी चाहिए।

- मधु प्राशन के लिए शहद तथा चटाने के लिए चाँदी की चम्मच। वह न हो, तो चाँदी की सलाई या अँगूठी अथवा स्टील की चम्मच आदि का प्रयोग किया जा सकता है।

- संस्कार के समय जहाँ माता शिशु को लेकर बैठे, वहीं वेदी के पास थोड़ा सा स्थान स्वच्छ करके, उस पर स्वस्तिक चिह्न बना दिया जाए। इसी स्थान पर बालक को भूमि स्पर्श कराया जाए।

- नाम घोषणा के लिए थाली, सुन्दर तख्ती आदि हो। उस पर निर्धारित नाम पहले से सुन्दर ढंग से लिखा रहे। चन्दन रोली से लिखकर, उस पर चावल तथा फूल की पंखुड़ियाँ चिपकाकर, नाम लिखे जा सकते हैं। थाली, ट्रे या तख्ती को फूलों से सजाकर उस पर एक स्वच्छ वस्त्र ढककर रखा जाए। नाम घोषणा के समय उसका अनावरण किया जाए।

क्रमशः ...

पशु क्रूरता माह

पशुओं पर अत्याचार उत्पीड़न असहनीय

डॉ. अरविंद जैन (विद्यावाचस्पति)
संरक्षक शाकाहार परिषद्
भोपाल

पशु क्रूरता माह का आशय यह होता हैं की हम पशुओं के प्रति कितनी हिंसा और अहिंसा भाव रखते हैं। हिंसा और अहिंसा की व्याख्या कई दार्शनिकों ने कई प्रकार से की हैं। पुरुषार्थ सिद्धिउपाय में बताया गया हैं,

अप्रादुर्भावः खलु रागदीनां भवतिहिंसेति। तेषामेवोत्पत्ति हिंसेती जिनागमस्य संक्षेपः।।

हिंसा और अहिंसा का मूल आधार रागादि विकारों का होना, न होना हैं। यही जैन दर्शन का सार हैं। हिंसा का स्वरुप – **प्रमत्तयोगात प्राणव्यपरोपणम हिंसा।**

प्रमत्तयोग से प्राणों के विनाश करने को हिंसा कहा गया हैं। प्राणियों का विनाश करना हिंसा हैं पर वह प्रमत्तयोग से किया होना चाहिए। यानि जो प्राणों का विनाश राग द्वेष प्रवत्ति से होता हैं वह हिंसा हैं। अहिंसा के अतिचार किस प्रकार होता हैं यह जानना आवश्यक हैं इसी आधार पर अधिनियम बना हुआ हैं। **बंधवधच्छेदातिभारारोपणंनापाननिरोधः।**

किसी भी प्राणी को इस प्रकार बांधकर या रोककर रखना जिससे वह अपने देश नहीं जा सके, डंडा चाबुक या बेत आदि से प्रहार करना बध हैं। कान नाक आदि अवयवों का छेदन करना छेद हैं। शक्ति और मर्यादा का विचार न करके अधिक बोझा लादना अतिभारारोपण हैं। खानपान में रूकावट डालना या समय पर न देना अन्नपाननिरोध हैं। जब से मानव ने सभ्यता सीखनी शुरू की और अपना विकास करना प्रारम्भ किया, लगभग तभी से उसने जानवरों के महत्व को भी समझ लिया था। उसने कुत्तों की वफादारी को देखा और उसे अपना साथी बना लिया, जिससे उसे सुरक्षा मिली तो अपने भोजन और भूख की समस्याओं से निपटने के लिए उसने गाय और भैंस पालने शुरू कर दिए। सामान ढोने में उसने खच्चर तथा गधे को इस्तेमाल किया और अपनी यात्राओं को सुगम बनाने के लिए मानव ने घोड़े तथा ऊंट को चुना. साफ तौर पर मानव सभ्यता के विकास में पशुओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इसी क्रम में, बैल तथा भैसों से ऋषि का काम कराना शुरू किया और इस तरह ये जानवर इनके सुख–दुःख के साथी बन गए। लेकिन जैसे–जैसे मानव आधुनिक होता गया उसकी निर्भरता

जानवरों पर कम होती गयी और इनकी जगह मशीनों ने ले लिया। आज जानवरों को उन्हीं चंद लोगों द्वारा पाला जाता है जो इनसे अपनी आजीविका चलाते हैं। जाहिर है कि इनमें अधिकांश किसान ही हैं। हालाँकि, बढ़ती महंगाई की वजह से अब किसानों के लिए भी पशुपालन समस्या बन गया है और असल समस्या तब शुरू होती है जब ये जानवर बूढ़े हो जाते हैं और किसान पर एक तरह से बोझ बन जाते हैं। ऐसे में कई बार गरीब किसान इन पशुओं को कसाई के हाथों बेचने को भी मजबूर हो जाता है, जो अनैतिक कार्य तो है किन्तु किसान की बेबसी से तुलना करने पर हमें एक भारी उलझन में डाल देता है।

एक तरह से देखा जाये तो ये काम पशु उत्पीड़न के अंतर्गत आता हैं क्यूंकि जब तक गाय ने हमें दूध दिया तब तक उसे हमने पाला लेकिन जब वो बूढी हो गयी तो उसे कसाई को दे दिया। ऐसे ही बैल जब तक जवान और स्वस्थ रहता है तब तक लोग उसे पालते हैं और जैसे ही वो बूढ़ा होता हैं तो उसे बेकार समझ कर या तो छोड़ देते हैं या कसाई के हाथों में दे देते हैं। ये तो हो गयी गांव की बात लेकिन अगर हम शहरों की बात करें तो वहां तो हालात और भी खराब हैं। शहरों में लोग सुबह –सुबह गायों को खुल्ले छोड़ देते हैं ताकि वो दिनभर घूम–घूम के इधर–उधर से अपना पेट भरे, और शाम के समय वापस आ के दूध दे। लोगों के द्वारा पॉलीथिन में रख कर फेंका गया खाना जो कि कई पशु पॉलीथिन सहित ही खा लेते हैं, जिनसे उन्हें गम्भीर बीमारियां हो जाती हैं और असमय ही उनकी मौत हो जाती है। वैसे तो पशुओं के लिए हमारे देश में तमाम एनजीओ काम करते हैं फिर भी इनकी दशा में कोई विशेष परिवर्तन नहीं आया हैं। कुछ ही दिनों पहले उत्तराखंड के 'शक्तिमान घोड़े' के ऊपर हुए अत्याचार को लेकर काफी हंगामा मचा था, क्योंकि ये मामला था ही इतना संवेदनशील! सरेआम पुलिस के घोड़े की इतनी पिटाई की जाती है कि उसकी टांग टूट जाती है और इलाज के बावजूद घोड़ा मर जाता है।

इसके लिए सम्बंधित दोषी व्यक्ति की सोशल मीडिया पर खूब खिंचाई भी हुई थी, लेकिन यह मामला पशुओं पर अत्याचार का एक प्रतीक बन गया और अभी ताजा मामला है बिहार का जहाँ सरकार के आदेश पर 200 नीलगायों को गोली मारी गयी है। इसको ले कर भी तमाम संगठनों के साथ महिला एवं बाल विकास मंत्री मेनका गांधी ने मोर्चा खोल दिया है। जाहिर है यह एक ऐसा मामला है जो बेहद क्रूर है, वहीं बिहार सरकार का तर्क है कि नीलगायों की वजह से किसानों की फसलों को हर साल भारी नुकसान होता है, इसलिए इन्हें मारना आवश्यक हो गया था। इसके जवाब में मेनका गांधी का कहना है कि आज नीलगाय मारा है, कल सुरक्षा के नाम पर शेर और हाथी मारे जायेंगे। देखा जाये तो दोनों के तर्क कुछ हद तक सही लगते हैं, किन्तु असल उपाय इन दोनों तर्कों से हटकर है और वह है जीव–संरक्षण का! क्या नुक्सान पहुंचाने वाली नीलगायों को पकड़कर घने जंगल या पशु अभ्यारण्य में नहीं छोड़ा जा सकता था? पर सवाल वही है कि हम अक्सर आसान रास्ता चुनते है, कुछ–कुछ शॉर्टकट जैसा, बेशक उस रास्ते पर नैतिकता कुचली जाए, क्या फर्क पड़ता है। इसी तरह शहरों में गायों को खुला छोड़ने वालों पर कार्रवाई करनी चाहिए तो कसाईखानों पर लगाम लगाने की आवश्यकता है। मानव सभ्यता के विकास में जो पशु लाखों साल से हमारे कंधे से कन्धा मिलाकर चल रहे हैं, अगर हम उन्हें ही आधुनिकता के नाम पर मार देते हैं तो फिर हमें किसी भी तरह सभ्य इंसान कहलाने का हक नहीं बनता है! भारत के महान् नेता एवं स्वतंत्रता सेनानी पंडित जवहाहरलाल नेहरू ने अपनी आत्मकथा 'मेरी कहानी' में हमारे यहाँ के घरेलू पशुओं के बारे में एक सटीक टिप्पणी की है। भारत के गाँवों में घूमते हुए उन्होंने गाय, बैल, भैंस आदि पशुओं को अत्यंत दयनीय दशा में देखा। उन्होंने कहा "एक ऐसे देश में जहाँ जीवमात्र के प्रति दया और परोपकार की बातें बढ़–चढ़कर कही जाती हैं वहाँ घरेलू पशुओं के साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया जाता। उन्हें अत्यंत गंदे स्थानों में रखा जाता है तथा उनके खाने–पीने की व्यवस्था भी ठीक नहीं है ।" सचमुच हमारे वचनों, हमारे विचारों का संबंध हमारे कर्मो से नहीं है । गाय को माता कह भर देने से ही गौ जाति की उन्नति नहीं हो जाती और शायद इसीलिए बूढ़ी गाएँ कसाईखानों तक पहुँच जाती हैं। घरेलु पशुओं की सेवाओं का आकलन करें तो ये मानव के लिए नितांत अखाद्य जैसे – घास, भूसा, चोकर, पुआल, गेहूँ की डंठल, पेड़ों की पत्तियाँ, फलों के छिलके आदि खाकर भी हमारी विभिन्न प्रकार से सेवा करते हैं।

गाय और भैंस अमृत तुल्य दूध देकर हमारे शरीर को हृष्ट–पुष्ट बनाते हैं। बैल व भैंस ऋषि की रीढ़ माने जाते हैं, ट्रैक्टरों के निर्माण से पहले तक खेतों की जुताई तथा वस्तुओं की ढुलाई का पूरा दारोमदार इन्हीं पर था। रेगिस्तानों में ऊँट का विकल्प आज तक नहीं ढूँढ़ा जा सका है। घोड़े इक्कों में आज भी जुतते हैं, धोबियों के लिए गदहों की उपयोगिता सदियों से बनी हुई है । गाय, बैल, भैंस, बकरी आदि पशुओं का गोबर इतना अच्छा प्राकृतिक खाद है कि इसकी तुलना किसी भी अन्य खाद से नहीं की जा सकती। हिंदुओं की पूजा में भी गोबर का प्रयोग होता है, ग्रामीण अपने आँगन की लिपाई गोबर से ही किया करते हैं। भेड़ ऊन के एकमात्र अच्छे स्त्रोत हैं। हमारे देश का संपूर्ण चमड़ा उद्योग इन पशुओं के बलबूते ही चलता है। मांस और अंडों की संपूर्ण उपलब्धता घरेलू पशु–पक्षियों पर निर्भर करती है। पशु–उत्पीड़न कोई नई समस्या नहीं है। सदियों मे पशुओं के साथ बुरा व्यवहार होता आया है। इतिहास की पुस्तकों से पता चलता है कि मानव का पहला साथी कुत्ता बना क्योंकि इसकी स्वामिभक्ति पर आज तक किसी प्रकार का संदेह नहीं व्यक्त किया गया है। जैसे–जैसे मानव घर बसाकर रहने लगा, उसे खेती करने की आवश्यकता हुई वैसे–वैसे पशुओं का महत्व भी बढ़ता गया। आर्य संस्कृति में गौ–जाति का बड़ा महत्व था, जिसके पास जितनी अधिक गाएँ होती थीं वह उतना ही प्रतिष्ठित और संपन्न माना जाता था। ऋषि–मुनि भी गौ पालते थे, वनों में घास की उपलब्धता प्रचुर थी। समय के साथ–साथ मनुष्य की आवश्यकताओं का विस्तार हुआ, तब उन्होंने गाय, भैंस, बैल, बकरी, ऊँट, घोड़ा, गदहा, कुत्ता आदि पशुओं को पालना आरंभ किया। युद्ध के मैदानों में घोड़ों और हाथियों की उपयोगिता अधिक थी, अतः राजे–महाराजे इन पशुओं को बड़ी संख्या में पालते थे। मशीनीकृत वाहनों के आविष्कार के

पहले घोड़ा सबसे तेज गति का संदेशवाहक था। चाहे वस्तुओं की दुलाई हो अथवा मनुष्यों की हमारे घरेलू पशु इसके एकमात्र साधन थे। ग्रामीण भारत में बैलगाड़ियों की उपयोगिता आज भी बरकरार है। इतनी सारी उपयोगिताओं के बावजूद पशुओं का उत्पीड़न मानवीय बुद्धिमत्ता की कसौटी पर खरा नहीं उतरता। घरेलू पशुओं को मल–मूत्र से संयुक्त कीचड़ में बैठने तथा खड़े होने के लिए विवश कर दिया जाता है। गाड़ियों में हाँके जाने वाले पशुओं को प्रायरू इतनी निर्दयता से पीटा जाता है मानो वे निष्प्राण वस्तुएँ हों। पशुओं से काम तो भरपूर लिया जाता है लेकिन भोजन के नाम पर उनके समक्ष थोड़ी सी सूखी घास डाल दी जाती है। विपरीत मौसम में भी उन्हें खुले में रखा जाता है। बीमार पशु–पक्षियों के मामले में तो हमारी उपेक्षा और दयाहीनता पराकाष्ठा पर पहुँच जाती है। गौ सेवा के प्रती अपना व्रत तोड़कर पशुओं को विभिन्न प्रकार से कष्ट पहुँचाते हैं। दो दशक पूर्व तक हमारे देश में दुग्ध उत्पादन की मात्रा प्रति व्यक्ति के हिसाब से बहुत कम थी क्योंकि हमारे पशु दुर्बल थे, इनकी नस्लें कमजोर थीं। विज्ञान के प्रभाव से पशुओं की नस्लें सुधारी गई तब दूध का उत्पादन किसी सीमा तक बढ़ सका जिसे श्वेत क्रांति का नाम दिया गया।

पहले की तुलना में आज दुधारू व अन्य घरेलू पशुओं का लालन–पालन कहीं अच्छे ढंग से होता है। बीमार पशुओं का इलाज आधुनिक वैज्ञानिक पद्धति से हो रहा है। यही कारण है कि दूध, दही, मक्खन, घी, मांस, अंडा आदि खाद्य वस्तुओं का उत्पादन कई गुणा बढ़ा है। परंतु घरेलू–पशुओं के उत्पीड़न की समस्या कई रूपों में आज भी बनी हुई है। यदि हम वन्य प्राणियों की चर्चा करें तो यहाँ भी मानवीय नासमझी और दयाहीनता के प्रमाण मिल जाते हैं। वनों का क्षेत्र सीमित रह जाने तथा वन्य प्राणियों के अंधाधुंध शिकार के कारण उनकी कई प्रजातियाँ लुप्त होने के कगार पर हैं। स्थिति की गंभीरता को देखते हुए वन्य पशुओं के शिकार को प्रतिबंधित किया गया तथा लुप्तप्राय जंतुओं के संरक्षण के लिए कई अभयारण्य बनाए गए।

जनसंख्या में वृद्धि के परिणामस्वरूप खेती योग्य भूमि की अधिक आवश्यकता हुई तो वनों को साफ कर दिया गया। नतीजे में वन्य पशुओं के प्राकृतिक आवास नष्ट होते चले गए। प्रकृति के ये सुंदर जीव हमारे पर्यावरण के अहम् हिस्से हैं लेकिन मानव की क्रूरता एवं अदूरदर्शिता के कारण वन्य प्राणियों तथा जल पक्षियों के लिए जीना तक दुश्वार हो गया है। मदारी भालुओं और बंदरों को पकड़कर उन्हें हर समय नचाते रहते हैं, उन्हें कुछ आदतें सिखाने के लिए कई तरह से प्रताड़ित किया जाता है। वन्य पशुओं को सरकसों व चिड़ियाखानों में उनके प्राकृतिक आवास से दूर बुरी दशा में रखा जाता है। सँपेरे साँपों को कैदकर उन्हें यातनापूर्ण जीवन जीने के लिए विवश कर देते हैं। हालाँकि ऐसे सभी कार्य कानून की दृष्टि में पूर्णतया प्रतिबंधित हैं मगर व्यवहार में इस तरह का पशु उत्पीड़न अभी भी हो रहा है। पशु–पक्षियों के उत्पीड़न के कई पहलू हैं। जब हम अपने पिंजड़ेखाने में एक तोते को बंद रखते हैं तब यह एक अमानवीय कृत्य है। हमारी तरह पशु–पक्षियों को भी अपनी स्वतंत्रता प्यारी होती है। पशु–पक्षी पृथ्वी की आहार–श्रृंखला को बनाए रखकर जहाँ मिट्टी को उर्वर बनाते हैं वहीं हमारा पर्यावरण भी संतुलित रहता है। अतः पशुओं का उत्पीड़न हर प्रकार से वर्जित होना चाहिए। आज सरे आम कुत्तों को मारडाला जाता हैं और सरकार जानवरों के मांस का निर्यात करके अपनी गरीबी मिटाना चाहती हैं जो अहिंसक देश के कलंक हैं। पशु पक्षियों को समानता का जीने का अधिकार हैं, ये भी हमारे जैसे नागरिक हैं।

मिलन

प्रो. डॉ. दिवाकर दिनेश गौड़
गोधरा, गुजरात

पूर्ण में जो पूर्ण मिले, पूर्ण है वो बन जाता
पूर्ण से जो पूर्ण निकले, पूर्ण ही है रह जाता
ये ऐसी गणित है विचित्र, मन कहां समझ पाता
पूर्ण से जो पूर्ण निकले, पूर्ण ही है रह जाता।

कितनी नदियां कितना बहकर
होती पूर्ण सागर में मिलकर
पूर्ण था सागर, पूर्ण रहा है
नहीं बढ़ा है, थोड़ा घटकर
सागर में जब मिलती नदियां, जल में जल मिल जाता
पूर्ण में जो पूर्ण मिले, पूर्ण है वो बन जाता।

सब कुछ है आकाश में मिलता
न कुछ घटता, न कुछ बढ़ता
हवा वही है, वही हैं मौसम
दिखता बदला, पर न बदलता
पंचतत्व का मिलन धरा पर, सदा ये सिखलाता
पूर्ण में जो पूर्ण मिले पूर्ण है वो बन जाता।
ये कैसी गणित है विचित्र, मन कहां समझ पाता
पूर्ण से जो पूर्ण निकले, पूर्ण ही है रह जाता।